विकट यात्रा

कैलाश मानसरोवर

हेमराज बंसल

विकट यात्रा
कैलाश मानसरोवर

लेखक : हेमराज बंसल

संस्करण : 2012
सर्वाधिकार सुरक्षित : हेमराज बंसल
बारां (राज.) 325205
मोबाइल 09414191003
www.bansalsahitya.com
hemraj@bansalsahitya.com

परिचय

सदाशिव आदि देव महादेव, कैलाशी, कैलाशपति की लीला स्थली कैलाश मानसरोवर। सारे वेद, उपनिषद, पुराण, रामायण, भागवतजी में प्रमाणित भगवान शिव, भोलेबाबा का आवास; कैलाश पर्वत। हिन्दू बौद्ध, जैन, और तिब्बत के बॉन धर्म का आराध्य, ब्रह्मांड की धुरी कैलाश। जिसकी एक परिक्रमा (एक कोरा) सौ जन्मों के पापों को नष्ट करने वाली मानी गई है। सुमेरु पर्वत, बर्फ का नगीना, तिब्बती में कांग रिम्पोची के नाम से भी प्रसिद्ध है। उसी से लगी गुरेल मान्धाता और कैलाश के बीच स्थित मानसरोवर झील जिसका तिब्बती नाम माफायत्सो है। जिसे मानस भी कहते हैं क्योंकि इसकी उत्पत्ति ब्रह्मा के मानस से मानी गई है। आज विडंबना यह कि हम हमारे आराध्य देव के आवास पर स्वतंत्रतापूर्वक नहीं जा सकते। कैलाश पर्वत तिब्बत प्रदेश के पश्चिम में है जो राजनैतिक गल्तियों के कारण अब चीन के अधिकार में है। अब पासपोर्ट, वीजा, परमिट के झंझटों से पार पा कर ही यात्रा के लिये जा सकते हैं। नक्शे में कैलाश पर्वत श्रीबद्रीनाथधाम से एकदम निकट दिखाई देता है। कई बार हिन्दू संगठनों ने वाया बद्रीनाथ माणागांव कैलाश परिक्रमा मार्ग खुलवाने की मांग भारत सरकार से की है, पर यह रास्ता न जाने क्यों खुल नहीं पा रहा?

वर्ष 2007 की अमरनाथ यात्रा के बाद मन में स्वतः ही हूक जगी, 'अब कैलाश मानसरोवर की दुरुह यात्रा पर जाना है।' जगदीशजी खंडेलवाल ने प्रथम साथी बनने की सहमति दी। पत्र–पत्रिकाओं में छप रहे लेखों ने हमें प्रेरित किया। उस समय हमें मात्र भारतीय पर्यटन विभाग द्वारा करवाई जा रही 32 दिवसीय कैलास मानसरोवर यात्रा की ही जानकारी थी। जिसमें दिल्ली से कौसानी, गोमती सरयू संगम, धारचूला आधार शिविर से पैदल 12800 फुट ऊंचाई पर नेपाल सीमा के निकट स्थित काली नदी तथा आगे 13800 फीट ऊंचाई पर स्थित ओम् पर्वत के दर्रे लिपुलैक द्वारा उत्तरप्रदेश के पिथौरागढ़ जिले से सीधे तिब्बत में प्रवेश करवाया जाता है। यात्री तिब्बत चीन सीमा में 30 किमी पैदल चलने के बाद पुरांग या तकलाकोट नामक धार्मिक स्थान पर खोजरनाथ मंदिर के दर्शन करते हुये दारचेन पहुंचते हैं। दारचेन से 22080 फुट ऊंचे कैलास पर्वत की परिक्रमा देरापुक, दोलमां पास, गौरीकुंड, झुतुलपुक होते हुये वापस दारचेन में समाप्त होती है व बाद में मानसरोवर स्नान होता है। इसमें भी 22–23 दिन पैदल चलना होता था। उसी वर्ष बारां से नाहरगढ़ वाले वैद्य राधेश्यामजी गर्ग सपरिवार मानसरोवर यात्रा नेपाल चीन के रास्ते बिना पैदल चले करके आये। उनसे बातचीत में निजी यात्रा दलों द्वारा दी गई सुविधाओं की जानकारी मिली। उसी साल हमने भगवान शिव का नाम ले पासपोर्ट के लिये आवेदन कर दिया। मुझे 2008 में पासपोर्ट भी मिल गया पर उसके बाद भी यात्रा का सुयोग बनने में चार साल लग गये।

गत वर्ष इंटरनेट पर मैंने कैलाशमानसरोवर यात्रा कराने वाली अहमदाबाद की कम्पनी ट्रेवल दोस्त को खोजा और फोन पर उनसे सम्पर्क किया पर मेरे साथी तैयार नहीं हो पाये। हमारे पड़ौसी शंकरजी माहेश्वरी मेरी दुकान पर ग्राहक बन कर आते थे। एक दिन मैने उन्हें अपनी 'मेरी कावड़ यात्रा' पुस्तक भेंट की। बातों ही बातों में उन्होंने बताया कि गुरुजी गोपालकृष्णजी शास्त्री के साथ वे कैलाश यात्रा का कार्यक्रम बना रहे हैं। मैंने उन्हें तुरंत ही ट्रेवलदोस्त वालों का पता, फोन नम्बर आदि दिये और यह भी बताया कि मैं भी जाना चाहता हूं। आपका कार्यक्रम तय हो जाये तो मुझे बताना। संयोग की बात थी, मैंने बाद में स्वतः कुछ पता लगाने का प्रयास नहीं किया और वे मुझे बताना भूल गये। वे सात जने गोपालकृष्णजी, शंकरजी माहेश्वरी पत्नि सहित, किरणजी गूजर पत्नि सहित, रूपचंदजी गर्ग उर्फ रूपा एवं राधाकिशनजी मीणा कालेज प्राचार्य गत वर्ष यात्रा कर आये और मैं रह गया।

ट्रेवलदोस्त

इसके बाद मैंने पूरे साल यात्रा साथी तलाश किये। जगदीशजी के अलावा कुंजबिहारी जी नागर, जम्बूजी जैन और कन्हैयाजी चित्तौड़ा ने मुझे साथ चलने की स्वीकृति दी। अशोकजी गर्ग चलने की बातें करते रहे पर कभी पासपोर्ट के लिये आवेदन नहीं किया। इसी बीच बृजेशजी गोयनका व हेमराजजी गोयल ने मुझे बताया, "हमारा सपरिवार चलने का विचार है, आप और हम साथ ही चलेंगें।" उनका चार या पांच जोड़ों का दल हो रहा था अतः मैंने अपनी यात्रा कार्यक्रम को उनके ऊपर ही छोड़ दिया। हर महीने–पंद्रह दिन में मैं उन्हें कार्यक्रम बनाने के लिये उकसाता रहा और यह भी कहता रहा कि आप लोग नहीं जाओ तो हम अलग से चले जायें। वे इंटरनेट के अच्छे जानकार हैं। दूसरी ट्रेवल एजेन्सी से भी हमारा सम्पर्क हुआ पर गत वर्ष के यात्री रूपाजी गर्ग व शंकरजी माहेश्वरी की प्रेरणा से हमने ट्रेवल दोस्त को ही प्राथमिकता दी।

ट्रेवलदोस्त यात्रा कम्पनी के साझेदार संजयगुप्ता अहमदाबाद वाले तथा मयूरभाई बड़ौदा वाले हम से फोन पर कार्यक्रम तय कर कार द्वारा तारीख 2–7–12 सोमवार को रात नौ बजे बारां पहुंचे। बृजेशजी के घर हमारी मीटिंग हुई। हमारी सारी शंकाओं का उन्होंने समाधान किया। उनकी बेबाकी और साफगोई से हम प्रभावित हुये। फिर खर्चे पर मौलभाव हुआ और अंत में हमने पैकेज तय कर लिया, दिल्ली से वापस दिल्ली तक का। रास्ते में हमारा एक रुपया भी खर्च नहीं होगा। 28 जुलाई को

जानेवाले यात्रा दल में हमें सम्मिलित होना है जो 11 अगस्त को वापस दिल्ली पहुंचेगा। वे हमें यात्रा प्रचार के पत्र, एप्लिकेशन फार्म, सीडी आदि के साथ यात्रा करने के लिये ले जाये जाने वाले छोटे–बड़े बैग के दस जोड़े भी दे गये। हमें भुगतान बैंक में जमा कराना था जो हमने 5 जुलाई से जमा कराना शुरु कर दिया था। हमने यात्रा जाने के इच्छुक साथियों से रकम के अलावा पासपोर्ट, तीन–तीन फोटो, तथा पहचान पत्र की फोटोकापी भी ली। इसके अतिरिक्त ट्रेवलदोस्त द्धारा दिये प्रार्थनापत्र भी सभी से हस्ताक्षरित करवाये। प्रार्थना पत्र तो मुझे मात्र एक अनुबंध लगा जो पूर्णतः यात्रा कम्पनी के पक्ष में था। सारा खर्चा अग्रिम जमा होना था और यदि किसी भी कारण यात्रा रद्ध हो तो हमारा पैसा डूबना था। छपी शर्तों के अनुसार यात्रा रद्ध करने का शुल्क 15 दिन पहले 30 प्रतिशत, दस दिन पहले 50 प्रतिशत तथा 5 दिन या इससे कम पर 100 प्रतिशत है। यात्रा रद्ध होने की सूचना भी सिर्फ ई मेल से मान्य है। इससे पूर्व हमने पासपोर्ट की फोटोकापी ई मेल कर दी थी ताकि वीजा आदि की कार्यवाही शुरु हो सके। इसी बीच हमारे साथियों को विचार आया कि लौटते समय काठमांडू घूम आयेंगे। हालांकि मैं इस विचार के विरुद्ध था पर मैंने ज्यादा विरोध नहीं किया और हमने रेल्वे तथा विमान के आरक्षण इसी हिसाब से दो दिन बाद अर्थात् 13 अगस्त के करवा लिये। हमने हमारे मूल पासपोर्ट 14–7–12 को कूरियर से दिल्ली भेजे जिसके लिये कूरियर वालों बहुत शुल्क लिया। अब तक हमारा बारां से 11 यात्रियों का जाना तय हो चुका था। मैं तथा कुंजबिहारी जी नागर अकेले जा रहे हैं। हेमराजजी–आशाजी गोयल, बृजेशकुमारजी–सरिता जी अग्रवाल, देवकीनंदनजी–रूपवतीजी गुप्ता तथा प्रदीपजी–साधनाजी डालमियां जोड़े से हैं। इसके अतिरिक्त देवकीजी का छोटा पुत्र आशीष उर्फ संटी श्रवणकुमार बन कर हमारे साथ जा रहा है। अकलेरा से रवैन्द्रजी–धापूरानीजी (उषाजी) मंगल तथा झालावाड़ से भंवरसिंहजी–श्यामकुंवरजी दोनों जोड़े भी हमारे दल से जुड़े हैं। तारीख 14–7–2012 को रात को बारां के साथी यात्रा के बारे में विचार विमर्श करने हेतु मेरे मकान पर इकठ्ठे हुये। इसमें रुपाजी व शंकरजी को भी बुलवा लिया। हमारा विचार–विमर्श तैयारियां धरी रह गई और हम इन दोनों की सलाहें व अनुभव सुनते रहे। दोनों के विचार भी भिन्न–भिन्न थे। रुपाजी के विचार प्रोत्साहित करते हैं तो शंकरजी के भयभीत। शंकरजी ने यात्रा सामानों की लंबी छपी हुई सूची भी हम सभी को दी। हमारे सामानों की सूची बहुत लंबी होती चली गई। बाद में हम साथ नहीं बैठ पाये और सभी लोगों ने सारे सामान रख लिये।

विदाई

अचानक 21 तारीख को प्रातः मुझे सूचना मिली कि हमारे एक साथी डालमियांजी का कार्यक्रम घरेलू समस्या के कारण रद्ध हो गया है तो थोड़ी चिंता हुई। हमारा नेतृत्व ही नहीं जायेगा तो क्या होगा? फिर तैयारियों में भी कितना खर्च हो चुका है? पूरे पैसे डूबने का खतरा। खैर दूसरे दिन कार्यक्रम वापस बन गया और हम पुनः दूने उत्साह से तैयारियों में जुट गये। सभी के स्वास्थ्य प्रमाण पत्र प्रदीपजी द्धारा बनवाये गये जिनमें लिखा था कि अमुक व्यक्ति कैलास मानसरोवर यात्रा जाने में सक्षम है। रेल के आने–जाने के टिकट, चीनी मुद्रा की व्यवस्था, गर्म पानी की मिल्टन की केटलियों तथा चांदी के बिल्वपत्र की खरीद, यात्रा बीमा, दिल्ली निजामुद्दीन स्टेशन पर लेने आने के लिये पिकअप गाड़ी की व्यवस्था तथा दिल्ली में नहाने–धोने के लिये होटल की बुकिंग, रुपये बांधने के नौली व प्लास्टिक की बड़ी थैलियां; बैगों को फटने से बचाने के लिये प्लास्टिक के कट्टे, रैनकोट, छाते, पूजा के सामान, हवन के सामान व समिधा, रास्ते के लिये नाश्ता, टॉफियां व सूखे मेवे, जरूरी दवाइयां आदि की व्यवस्थायें की गई। इन व्यवस्थाओं की समीक्षा के लिये हम 26 जुलाई को रात सात से आठ मेरी दुकान पर इकठ्ठे हुये। सभी लोगों ने सूची के अनुसार सामान बांध लिये थे। मेडिकल किट, पूजा सामान, बर्तन, नाश्ता आदि कम किये जा सकते थे। 'अब कौन सामान निकालेगा?' कह कर कोई सामान कम नहीं किये गये। साथियों की तैयारी देख मैने बहुत कम सामान रखे। न दवाइयां, न पूजा, न नाश्ता, न सूखे मेवे। स्वाभाविक ही मेरे बैग में सबसे कम वजन रहा।

हमारी यात्रा का पूरी बारां में व्यापक प्रचार हो गया। रिश्तेदार मिलने व विदा देने आने लगे। लगातार फोन घनघनाये। कई संस्थाओं–हास्य क्लब, शिव शक्ति सेवा मंडल, विश्व हिन्दु परिषद आदि ने हम लोगों को ससमारोह विदा करना चाहा पर हम प्रचार से दूर रहना चाहते थे। सारे साथी एक साथ जा भी नहीं रहे। हास्य क्लब ने मुझे 28 जुलाई को प्रातः पार्क में व प्रताप चौक पर माला पहना कर विदा दी। मैंने दिन में व्यापार से संबंधित काम निपटाये तथा शाम को घर जा कर अंतिम रूप से बैग जमाये। शाम छह बजे छोटे भाई दीनू की मित्रमंडली जो 'जी आठ' के नाम से समाजसेवा का काम करती है; मुझे विदा देने आ गई। मैंने फोन कर कुंजबिहारीजी नागर को भी बुलवा लिया। हम दोनों थोड़ा जल्दी मेरी कार से जाने वाले हैं। हम मोटरसाइकल से भगवान कल्याणरायजी के मंदिर गये। वहां आशीष ले, प्रसाद ग्रहण कर, मुंह मीठा कर मैं घर आया। मां से आशीष व सभी परिजनों से विदा ले दुकान आया। वहां विदा देने आने वाले साथी सूर्यप्रकाश जादूपाल व सतीश मासूम तथा भतीजे विशु (अतुल) के इंतजार में थोड़ा विलंब हुआ। सबसे विदा ले कार में बैठ कुंजबिहारीजी नागर के आवास पहुंचा। वहां भी परिजनों द्वारा विदाई की रस्म में समय लगा ही। हम मेलखेड़ी रोड से चक्कर काटकर

मनिहारा महादेव पहुंचे। (पुल निर्माण के कारण सीधा रास्ता बंद था।) भगवान शंकर के घर जा रहे हैं, यहां से तो आशीष ले ही लें। यहां आकर मैंने भगवान से कई बार कैलाश मानसरोवर बुलाने की प्रार्थना की थी। रास्ते में पारीक साहब, रामप्रसादजी आदि से भेंट मुलाकात हुई। मित्र लक्ष्मीकांत गुप्ता (रतनलालजी पोरवाल) के घर रुक, जल पीकर गये। रात आठ बजे बाद भी कोटा के घंटाघर व अग्रसेन बाजार में जाम के कारण हम बहुत मुश्किल से घुस पाये। मैं बहिन के घर उतरा और कुंजबिहारीजी उनकी यहां पढ़ाई कर रही बेटी से मिलने चले गये।

कुंवर साहब महेंन्द्र जी व उनके परिजनों के अतिरिक्त छोटे भाई रामू के श्वसुर साहब महावीरजी जैन भी मेरी प्रतीक्षा कर रहे थे। बाद में मेरे साढूजी व साली जी राजेन्द्र जी–चंदा भी मिलने आ गये। बहिन के घर मेरा भोजन व राखी समारोह हुआ। घर से छोटी बहिन निर्मला की भेजी हुई राखी बांधकर निकला था। मेरी दोनों बहिनों के रक्षा सूत्र मेरी हिफाजत करेंगे। कुंवरसाहब महेन्द्रजी के पिताजी रमेशजी ने मुझे बताया कि कैलाश पर्वत पर जैन धर्म के सैकड़ों मंदिर थे। भगवान आदिनाथजी (प्रथम तीर्थंकर) ने वहीं के एक स्थान अष्टपद से मोक्ष प्राप्त किया था। ब्याईजी ने बहुत जोर देकर कहा कि हम अष्टपद अवश्य जायें। हमारे कार्यक्रम में इस स्थान की यात्रा लिखी हुई है। अतः मैंने उन्हें स्वीकृति दी। कुंजबिहारी जी समय पर लौट आये। यहां से भी हमें भावभीनी विदाई मिली। हम सवा 11 बजे करीब ही स्टेशन पहुंच गये। सामान उठा कर प्लेटफार्म नम्बर एक पर आये जहां प्रतीक्षारत साथियों से मिलान हो गया। यहां आकर हमने हमारे अकलेरा व झालावाड़ के साथियों से परिचय किया। यहां भी विदा करने हेतु परिजन आये हुये हैं। देवकीजी के बेटे बहू पियूष–वर्षा, पौत्र वर्चस्व, साले उमेशजी व भुवनेशजी। बातचीत में पता लगा कि रविजी इकलेरा से बारां आ गये थे। वहां से सारे यात्री व उनके परिजन श्रीजी के मंदिर दर्शन करने गये। बाद में कारों से देवकीजी के घर के सामने से निकले तो पुनः देवकीजी के परिजनों द्वारा उन्हें गले लग कर भावभीनी विदाई दी गई।

दिल्ली

रेल थोड़ी देरी से सवा बारह बजे आई। भावभीनी विदाई के बाद हम अपनी वातानूकूलित तृतीय कोच नम्बर बी तीन की अपनी शायिकाओं पर सोये। सफर निर्विघ्न कटा और हम प्रातः निजामुद्दीन प्लेटफार्म पर उतरे। कुलियों से भावताव में थोड़ा समय लगा। साढे छः सौ रुपये में प्लेटफार्म से हमारे तेरह बैग उठवाकर पार्किंग में खड़ी मिनी बस नम्बर डी एल 1832 में रखवाये। दूरी तो थी ही। बस ड्राइवर जगदीश भला मानुष लगा। उसने बिना कहे मेहनत कर बैग बस की छत पर बांधे। मिनी बस हमें पूर्व में तय होटल पर ले गई पर वहां पार्किंग की जगह न होने के कारण हमने दूसरा होटल ढूंढा। पहाड़गंज के दरीबापान की संकरी गली में कुछ चल कर 3621 ए पर एमडी इंटरनेशनल नाम के बदबूदार होटल में तीन कमरे खुलवाये। मेरा बैग हल्का था, मैं पूरा बैग ही उठा ले गया। अधिकांश साथियों ने नहाने–धोने के सामान छोटे बैग में रखे और होटल पहुंच स्नानादि से निपटे। वहीं कचोरी का नाश्ता हुआ। दिल्ली के सभी होटलवालों की तरह इस होटल वाले ने भी किचकिच की। कमरों के एसी भी बंद कर दिये।

साढ़े दस बजे वापस बस में बैठ इंदिरागांधी अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे की ओर प्रस्थान किया। रास्ते में प्रदीप ने अपने ममेरे भाई आलोक धानुंका को बुला कर हमारे लिये ली गई चीनी मुद्रा का आदान–प्रदान किया। भाई ने आते ही सभी को प्रणाम किया। अच्छा लगा दिल्ली में रह कर भी संस्कार बचा रखे हैं। किसी को अच्छी भूख नहीं थी फिर भी महिपालपुर में हवाई अड्डे से पूर्व आये एक पंचसितारा कांन्टिनेंटल 'शांति होटल' में हमारे साथी घुस गये। मैं होटल देखकर ही बाहर आ गया। थोड़ी देर बाद सारे साथी ही बाहर आ गये। महिलाओं ने पूछा और किसी ने बता दिया कि यहां मांसाहारी खाना भी साथ ही बनता है। बाद में होटल के मैनेजर ने हम ग्राहकों को रोकने का बहुत प्रयास किया पर कोई नहीं गया। हम आगे इस भावना को कायम नहीं रख पाये। सारी यात्रा में हमें सामिष रसोई के साथ पका खाना ही लेना पड़ा। यहां खाना भी बहुत महंगा है। दाल 400 रु. की और रोटी 40 की। खाने के लिये बाद में हम यहां के प्रसिद्ध चौधरी पवित्र ढाबा नामक होटल को ढूंढते रहे पर आज वह बंद है।

बिना खाना खाये हवाई अड्डे के टर्मिनल नम्बर तीन पर पहुंचे। वाह! इतनी विशाल और भव्य संरचना। वह भी पूर्णतः वातानूकुलित। अनुभवी साथियों ने तीन पहिया ट्रालियां लगा दी। हमने अपने सब सामान उतार बस वाले को तीन हजार रुपये देकर विदा किया। प्रथम द्वार से अंदर जाने के लिये हम से टिकट के अलावा पहचान पत्र भी मांगे गये। हमारे पासपोर्ट अभी तक हमारे ट्रेवलदोस्त के मयूरभाई के पास थे जो कि वे अभी तक हम तक नहीं पहुंचा पाये थे। श्रीमती ऊषाजी (धापूरानी) को सुरक्षाबलों द्वारा टिकट में नाम के अनूरूप पहचान पत्र न होने के कारण रोका गया। उनके साथ दो साथी और बाहर रुके। मयूर भाई से फोन पर संपर्क हुआ पर वे कोई घंटा भर बाद ही आ पाये। वे अहमदाबाद से दिल्ली हवाई जहाज से 87 यात्रियों के साथ राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर उतरे थे। जब तक हमने हमारे पास बंधे नाश्ते व खाने से पेट भर लिया। एअरपोर्ट पर यहां कई सारी दुकानें व बैंक भी है जिनमें मुद्रा विनिमय की सुविधा भी है। यहां सभी एअरलाइंस कम्पनियों के काउंटर, टिकट बुकिंग

खिड़कियां आदि भी है। टायलेट भी अत्याधुनिक है और बैठने की कुर्सियां भी बहुत आरामदायक। सबसे पहले हमने अपने फार्म भरकर अपने–अपने बैग लगेज में जमा करवा कर रसीद ली। यहां बैगों का वजन होता है, उन पर पहचान की पर्ची लगती है तथा उन्हें मेटलडिटेक्टर में से निकाला जाता है। बड़े बैग व सामान उसी विमान में लगेज के नाम से निःशुल्क अलग से जाते हैं। यहां नेपाल में बड़े भारतीय नोट ले जाने पर साथियों को चिंता रही पर मयूरभाई द्वारा खुद की जेब में रखे हजार के नोट दिखाने पर सबको तसल्ली मिली। हवाई अड्डे पर हमारी फ्लाइट एसजी 45 टर्मिनल नम्बर तीन के गेट नम्बर नौ ए से दोपहर 3.40 पर जायेगी, ऐसी सूचना ग्लोबल बोर्ड पर आ रही थी। बड़े बैग लगेज के लिये देने के बाद हम अपने छोटे बैग उठाकर गेट की ओर बड़े। यहां पुनः मेटलडिटेक्टर से जांच हुई। आगे हमें पुनः फार्म भरना पड़ा। फार्म में नाम, पता, पासपोर्ट नम्बर तथा आने–जाने का विवरण जैसी साधारण बातें ही होती है। जामातलाशी देने के बाद हम अंदर घुसे। मेरे बैग की स्क्रीनिंग हुई तो उसमें रखा लोहे का चेन ताला पकड़ में आया। मेरी सूटकेस बांधने की चेन निकाल कर फेंक दी गई, उसे हवाई जहाज में साथ ले जाने की अनुमति नहीं है। मेरे चश्मे के कवर में दो तीन आलपिन रखे थे मशीन द्वारा शोर मचाने पर वो भी खोलकर दिखाना पड़ा। दरअसल विमानों में बढ़ रहे अपराधों से बचने के लिये दिनों दिन चौकसी भी बढ़ानी पड़ रही है। हमें इस जांच का कतई बुरा नहीं लगा।

हवाई अड्डे के मुख्य भाग में बहुत विशाल व आलीशान वातानूकूलित बाजार सजा है। कीमतें भी पंचसितारा होटल जैसी है। केबी और मैं सबसे पहले वहां पहुंच जायजा लेने लगे। स्वचालित सीढ़ियों (एस्केलेटर) से प्रथम तल पर जाकर खानेपीने के सामान देखे। सभी जगह नॉनवेज। हमारे लायक कुछ नहीं। चलो फ्रूटी ही पी लेते हैं। आरामदायक मेज कुर्सी पर बैठ पूरा लुत्फ ले सेवन किया। तभी हमारे सब साथियों ने भी इस भाग में प्रवेश किया। मैंने उन्हें आवाज देकर ऊपर बुलवा लिया। बार–बार कौन आयेगा यहां? नजर भर कर तो देख लें, इस अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे को। समय ज्यादा नहीं बचा था। अनुभवी साथियों ने बताया कि अभी तो बहुत चलना है। हम आगे बढ़े तभी मयूर भाई भी प्रकट हुये। यहां यात्रियों का श्रम बचाने के लिये पैदल चलने वाले एस्केलेटर भी लगे हुये है। यहां चार पहिया गाड़ी भी है जो यात्रियों को ले जाती है। जाते समय हमने उनका प्रयोग नहीं किया। मुझे पता नहीं वे भी मुफ्त हैं या नहीं। यहां रास्ते में जगह–जगह सुविधायें हैं तथा पीने के पानी के विचित्र से नल लगे हैं जो मैंने पूर्व में कभी नहीं देखे थे। छह एस्केलेटर का प्रयोग कर हम गेट नम्बर 'नौ–ए' पर पहुंचे। अभी हमारा जहाज आया भी नहीं। बहुत समय है, सभी आराम कुर्सियों पर पसर गये। इस विश्व के नामी गिरामी हवाई अड्डे पर सैकडों छोटे–बड़े जहाज हमेशा खड़े रहते हैं। हरदम कहीं न कहीं जहाज उतरता या उड़ता दिखाई देता है। इतने निकट से बड़े–बड़े हवाई जहाज देख हमने फोटोग्राफी की तथा वीडियो रील भी बनाई। यहां श्रीमती रूपवतीजी गुप्ता की थकान व नींद भी मनोरंजन का विषय रही। आप फर्श पर बिछे कालीन पर ही पसर कर लेट गई और नींद भी निकालने लगी। खूब हंसी ठठ्टा चला। यहां खाने–पीने का सामान खरीदने की कम्प्यूटराइज्ड अलमारी है। सामान की लिस्ट, सामान का नम्बर तथा दाम लिखे हैं। नगदी डालो तथा सामान नम्बर का बटन दबाओ, सामान उछल कर बाहर। दरें वही तीन गुना वाली। हमने मजाक किया,

'यदि पचास के नोट के बराबर कागज काट कर डालें तो?'

प्रथम हवाई यात्रा

तीन बजे बाद गेट खुलने की सूचना मिली। हमने एक बड़ी कृत्रिम सुरंग से पंक्तिबद्ध विमान में प्रवेश किया। पहले टिकट दिखाये गये। बाद में हमारी फौरी जामा तलाशी भी हुई। हमारा स्पाई जेट का यह विमान 192 सीटोंवाला है और सभी सीटें सस्ती दर वाली ही है। मुझे करीब–करीब बीच में 22डी नम्बर की सीट मिली जहां से विमान के डैनों के कारण नीचे जमीन देखने में दिक्कत आती रही। हम सब साथी पासपास ही थे। यहां भी हमारा हंसी मजाक का दौर जारी रहा। विमान भरने के बाद उड़ान से पूर्व सीट बेल्ट बांधना तथा आपातकाल में मास्क लगाना जैसी बातें माइक से उद्घोषित की गई, जिसका एक विमानबाला द्वारा प्रदर्शन भी किया गया। मैंने पूर्व में ही इस बारे में सीट के सामने रखा साहित्य पढ़ लिया था। यहां हमारे पास उल्टी करने के लिये एक प्लास्टिक की थैली भी रखी हुई है। ईश कृपा से हमारी यात्रा में किसी को इनकी जरूरत नहीं पड़ी। विमान उड़ान के समय मामूली घबराहट हुई। खिड़की से बाहर के दृश्य देखने की उत्सुकता भी बनी रही। कुछ समय बाद परिचारकगण खानपान की ट्रॉली लाये। वे हमारे नाम पूछ–पूछ कर हमें शाकाहारी खाने के पैकेट देने लगे। वाह! हमें तो पता ही नहीं था कि हमारे टिकट में खाने के पैसे भी जुड़े हुये हैं। नाश्ता बहुत हो गया था, शायद ही कोई पूरा खाना खा पाया हो। एक मिस्सी रोटी, चावल, पनीर की सब्जी, दाल, चटनी, चाकलेट केक जैसी मिठाई और दो सौ ग्राम पानी की छोटी शीशी। कांटा, छुरी, चम्मच, नमक तथा कालीमिर्च पावडर की पुड़िया भी साथ में। मुझे यह गर्मागर्म खाना अच्छा लगा। काश पहले पता होता कि खाना मिलेगा तो बाजार में इतना नहीं भटकते और न ही तलेभुने खाकर पेट भरते। विमान अधिकतम 31000 फुट ऊंचाई तक तथा 480 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से उड़ा। खाना समाप्त

होते–होते विमान उतरने तथा सीटबेल्ट बांधने की उद्‌घोषणा हो गई। कुल सफर डेढ़ घंटे का रहा। हवाई जहाज में सफर करने तथा विदेश यात्रा की मेरी एवं कई साथियों की तमन्ना पूरी हुई।

त्रिभुवन अंतर्राष्ट्रीय विमान स्थल, काठमांडू में विमान के पास लगाई गई अस्थाई सीढ़ी से नीचे उतर कर बस में खड़े हुये। बस ने मुख्य भवन के सामने उतारा। यहां भी हमें इमीग्रेशन (पारगमन) फार्म भरना पड़ा। पासपोर्ट के साथ फार्म निर्धारित काउंटर पर दिया गया। जांच के बाद पासपोर्ट पर नेपाल में आगमन की मोहर लगा दी गई। हमारे सामान भी तब तक आ गये थे और एक रोलर पट्‌टे पर घूम रहे थे। हमने अपने–अपने बड़े बैग उठाये और ट्रॉलियों में लाद कर बाहर निकले। बैग बाहर ले जाने के लिये हमें सुरक्षाकर्मियों को हमारी बैग की रसीदें देनी पड़ी, जो हमारे बोर्डिंग पास पर चिपकाई गई थी।

गोकर्ण रिसोर्ट काठमांडू

मयूरभाई दिल्ली से लगभग हमारे साथ थे। यहां कैलाश ट्रैक्स प्राइवेट लिमिटेड काठमांडूवालों की तीन बसें खड़ी थी। हमें इन्हीं बसों में बिठा कर गोकर्ण फोरेस्ट रिसोर्ट लाया गया। रास्ता बहुत लंबा निकला। फाइवस्टार होटल देखते ही हमारी तबियत प्रसन्न हो गई। हमारे सामान खास कर बड़े बैग बसों में पीछे डिक्कियों में डाले गये थे जो बस एवं होटल कर्मचारियों द्धारा उतार कर कतार में जमा दिये गये। हमारे इस दल में 102 यात्री हो गये हैं। हम हाड़ौती से 15 यात्री हैं। बाकी सभी गुजरात से हैं। हमारे साथी हेमराजजी गोयल तथा आशीष हवाई अड्‌डे के बाहर निकलते ही मोबाइल चालू करने की चिंता में डूब गये। भारत से लाये हमारे मोबाइल हवाई जहाज में ही बंद हो चुके हैं। यहां नेपाल की सिम मोबाइल में डलवानी है ताकि हम संपर्क में रह सकें। उन दोनों के देरी से आने के कारण मयूरभाई बसों के साथ नहीं आये। वे उनके साथ बाद में टैक्सी से गोकर्ण होटल पहुंचे।

होटल में हमें कुछ ही दूरी पर स्थित नये भवन में कमरे दिये गये। वहां अंधेरा था बरसात में भीगते हुये तथा कीचड़ में जाना पड़ा। कमरे ढूंढने तथा उन्हें खोलने में भी बहुत परेशानी आई। हमारे साथी बहुत नाराज हुये और मुख्य भवन में ही कमरे देने की मांग करने लगे। बाद में मयूरभाई ने समझाबूझा कर हमें उन्हीं कमरों में भेजा। कुंजबिहारीजी नागर और मैंने स्वेच्छा से एक कमरे में रहना स्वीकार किया। हमें पहली मंजिल पर कमरा नम्बर 201 दिया गया। हमने हमारे बड़े बैगों पर कमरा नम्बर 201 का टैग लगवाया और हम अपने कमरे में आकर आराम करने लगे। कमरे में बहुत सारी सुविधायें हैं। चाय बनाने का जार व पाउच, तौलिये, चप्पल, छाता भी। साबुन, शैम्पू, बॉडीलॉशन, टीवी, फोन, कंबल आदि तो सबमें होते ही हैं। यहां हमारी पहचान हमारे बैग नम्बर से भी हो रही है। ट्रेवलदोस्त द्धारा सभी यात्रियों को अपनी ओर से छोटे एवं बड़े बैग दिये गये हैं। यह आग्रह भी था कि हम उन्हीं बैगों के साथ यात्रा करें। बैगों में अलग–अलग नम्बर लिखे हुये हैं। मेरा बैग 294 नम्बर का है और कुंजबिहारीजी का 757 नम्बर का। जब 102 एक जैसे बैग एक जगह जम रहे हों तो उनमें से अपना नम्बर ढूंढने में बहुत समय लग जाता है। यदि बैग के नम्बर नहीं होते तो कई जगह बैग बदल ही जाते। बाद में हमने मार्किंग पैन से हमारे छोटे बैगों पर भी नम्बर डाले।

इस कॉन्टिनेन्टल होटल में सामिष भोजन भी परोसा जाता है। हमारे लिये पृथक से एक हॉल में जैन भोजन रखवाया गया है। रात साढ़े नौ बजे भोजन की इच्छा नहीं थी पर होटल व भोजन की भव्यता देखने के लिये हम दौड़ पड़े और कुछ खाया भी। मैंने फल व सलाद ही लिया। भोजन में गुजराती पुट था और जैन के नाम पर लहसुन, प्याज भी गायब हो गया। प्रदीपजी ने मयूर भाई से राजस्थानी स्वाद की मांग की। हमारी मांग पूरी हुई और आगे कहीं सब्जियों में मीठा नहीं डाला गया। रात अच्छी गुजरी।

पशुपतिनाथ दर्शन

29, जुलाई 2012, रविवार

सुबह तैयार हो आठ बजे नाश्ते के लिये उसी हॉल में पहुंचे। अब हमें नेपाल घूमने जाना है। तीन बसें, तीनों में गाइड तथा कैमरा लेकर मयूर भाई तैयार खड़े हैं। हमारा बारां दल सबसे बाद में बसों में बैठ पाया। हमारी बस का नम्बर है बा, १ प ५५०। दसेक किमी चल कर हम भगवान पशुपतिनाथ मंदिर के पास पहुंचे। बसें हमें छोड़ कर पार्किंग स्थल चली गई। मयूरभाई के आदेशानुसार हमने अपने जूते चप्पल पास की ही दुकान 'अग्रवाल पूजा भंडार' पर खोले। वहां टायलेट सुविधा भी है तथा हाथ धोने का पानी भी। हमें मंदिर का रास्ता तथा बसें खड़ी होने की जगह बताई गई तथा दर्शन कर वापस बसों में बैठने के लिये डेढ घंटे का समय दिया गया।

मैं कुंजबिहारीजी के साथ सबसे पहले मंदिर पहुंचा और वहां चारों द्धार से भगवान पशुपतिनाथ के तथा परिसर में बने अन्य मंदिरों में दर्शन किये। पास ही घाट पर जाकर पवित्र बागमति नदी में आचमन किया। वापस जाकर दुकान से अपने जूते पहने और कोई आध किमी चलकर बस ढूंढी। यहां दुकान पर हमारे दल के कई सदस्य खरीददारी कर रहे थे। हमने भी रुद्राक्ष आदि के भाव पूछे पर अभी

हम यात्रा जा रहे हैं, वापसी में खरीदेंगें। वैसे भी हमें यह कहा गया है कि इस यात्रा में कोई खरीददारी नहीं करें। जेब कटाने के सिवा कुछ नहीं मिलेगा। हम बहुत जल्दी आ गये थे, हमारे साथी बहुत देरी से पहुंचे। कुंजबिहारीजी को तो सड़क किनारे पेड़ की छाया में डोली (परिसर की दीवार) पर नींद ही आ गई। मैं गुजराती सहयात्रियों से पहचान बढ़ाने लगा। राजस्थान के दो मदारी बच्चों के करतब देखे। बुढिया के बाल व पताशी भी यहां बिक रही है और नेपाली हैन्डीक्राफ्ट के आइटम बेचने वाले भी घूम रहे हैं। हमारे साथियों ने बस में बैठने से पूर्व पताशी खाई, जिसके लिये मयूर भाई का उलाहना सुनना पड़ा।

'ये बीमारी के घर हैं। यात्रा करनी है तो इनसे बचो।'

हमें बस से अगला दर्शन बूढ़ा नीलकंठ का करवाया गया। साधारण मंदिर व साधारण कुंड है। कुंड में भगवान की लेटी हुई प्रतिमा है। बरसात से यहां हमें भागाभागी रही। मुझे बारां फोन लगाना था। मैंने यहां दर्शन में कम, एसटीडी ढूंढने में ज्यादा रुचि दिखाई पर मैं फोन नहीं कर पाया। कुंजबिहारी जी देर से दर्शन कर लौटे। उन्होंने स्थानीय पुजारीजी से कथा सुनी है। भगवान ने स्वप्न में दर्शन दिये। राजा ने दर्शित स्थान से मूर्ति खुदवाकर यहां स्थापित करवाई। यहां भगवान की मूर्ति के पैर के नाखून से खून तथा नाक से दूध बहता रहता है। नीलकंठ नाम से भगवान शिव जाने जाते हैं पर कथा सुनने के बाद पता लगा यह तो विष्णु भगवान को समर्पित मंदिर है।

हमारी आज की सैर का अंतिम पड़ाव भगवान बुद्ध की तपस्या स्थली है। एक पूरी पहाड़ी पर विशाल एवं भव्य निर्माण बौद्ध धर्मावलियों द्धारा किया गया है। बस ने हमें पहाड़ के ऊपर पहुंचा दिया है। आगे मंदिर तक जाने के लिए एक सौ बीस सीढ़ियां और चढ़नी है। यहां 50 नेपाली रुपये सहयोग राशि की रसीद काटकर ही प्रवेश दिया जा रहा है। मैने दस टिकट लिये हैं। राजस्थान की हमारी चार महिलायें ऊपर नहीं जाना चाहती। प्रदीपजी डालमियां भी उनके साथ रुक गये हैं। हम इस स्थान के बारे में ज्यादा नहीं जान पाये। बौद्ध धर्म की हमें जानकारी नहीं है और गाइड तो बस नाम का ही है। हमारे लिये तो यह पिकनिक की जगह है। रास्ते में बालककड़ी, भुट्टे आदि बेचने वाले हैं। हस्तकला, पूजनसामग्री एवं खानपान सेवा की दुकानें है। गर्मी भी बहुत है। पेयजल की बोतलें खरीदनी पड़ी है।

पहाड़ी के माथे पर विशाल बौद्धविहार बना हुआ है। जिस पर बहुत ऊंचा स्वर्णजड़ित शिखर है। यहां दो प्राचीन मंदिर भी हैं। इस पूरे परिसर की पक्की और सुंदर बाउंडरी हो रही है। नीचे से ऊपर आने के लिये कई स्थानों से सीधी सीढ़ियां देकर भी रास्ते बनाये गये हैं। ऊपर से पूरा काठमांडू शहर दिखाई देता है, जैसे शंकराचार्य मंदिर से श्रीनगर। इस विशाल संपदा की व्यवस्था 'स्वयंभू व्यवस्थापन तथा संरक्षण महासमिति, काठमांडू' संभाल रही है। यह स्वयंभूनाथ मंदिर है। हमारी बस के यात्रियों के समय पर न आने से वापसी में हमें बहुत विलंब हुआ। गौकर्ण होटल में भोजन का समय बीता जा रहा है। गिनती में तीन सवारियां कम आ रही है। कहां तक इंतजार करें? आ जायेंगे टैक्सी से। मयूर भाई को मजबूरन बसें रवाना करनी पड़ी।

गोकर्ण होटल पहुंचने तक हमें तीन बज गये और जाते ही सब भोजन पर टूट पड़े। यहां विभिन्न चीजें खत्म होती रही और हम होटल के बैरों को बार–बार खाली बर्तन बताते रहे। अव्यवस्था में ही खाना हुआ। भोजन के तुरंत बाद ही हम पुनः घूमने जाने हेतु बसों में जा बैठे। बहुत देर बस में चलने के बाद कोई एक किमी पैदल भी चल कर हम प्राचीन काठमांडू 'पाटन' नामक पर्यटक स्थल पर पहुंचे। यहां राजपरिवार का आवास था। प्राचीनशैली के मंदिर जो नेपाल की पहचान हैं तथा राजपरिवार का संग्रहालय यहां पर है। हमें विदेशी मान कर सौ रुपये प्रति व्यक्ति टिकट ले लिया गया। यहां सार्वजनिक पेशाबघर में भी हमें तीन रुपये प्रति व्यक्ति देने पड़े। यहां की भवन निर्माण कला मनमोहती है पर संग्रहालय बंद होने के कारण हमें सौ रुपये का टिकट अखरा। वापस होटल लौटे तो हल्की बरसात हो रही थी। अब हमारे पास कोई काम नहीं है। बृजेश का छोटा बैग बस में छूट गया है जो शायद सुबह आ जायेगा। बृजेश ने अपने कमरे की चाबी भी गुमा दी है। मैंने काउंटर पर बात की मुझे बताया गया कि गल्ती की सजा तो मिलेगी। मैंने मजाक किया, 'कितना देर हाथ ऊंचे करके मेज पर खड़े होना है?' बाद में हमें बिना हुज्जत दूसरी चाबी (कार्डनुमा) दे दी गई।

काठमांडू में भारतीय मुद्रा में लेनदेन करने में कोई कठिनाई नहीं है। बस हिसाब लगाना है। एक भारतीय रुपया नेपाल के एक रुपये साठ पैसे के बराबर है और एक नेपाली रुपया भारत के साढ़े बासठ पैसे के लगभग है। यहां मेरे पास न घड़ी है और न ही मोबाइल। यहां से भारत बात करना महंगा नहीं है पर फोन बूथ बहुत कम हैं। मुझे शायद लगातार एसी में रहने से गले में जलन व कफ की शिकायत हो रही है। पेट भी भारी रहता है। इलाज के लिये कालीमिर्च व काली हरड़ ले रहा हूं। मेरे बैग में पेस्ट, नेलकटर तथा दो शर्ट कम निकली, शायद रखना भूल गया था। मैंने होटल में एक जोड़ी कपड़े धोये हैं।

रात कुछ देर आराम करने के बाद भोजन कक्ष में पहुंचे तो वहां हमारे कमांडर मयूरजी गुजराती में सभी लोगों को बिठा कर यात्रा संबंधी आवश्यक हिदायतें दे रहे थे। करीब सारी बातें हमें पहले से ही पता थी। भोजन के बाद उन्होंने हमें हिन्दी में सारी बातें बताई तथा हमारे सवालों के जवाब भी दिये।

''हमें कल भोजन करके दोपहर में यहां से आगे प्रस्थान करना है। रात्रि विश्राम कोदारी (नेपाल) या न्यालम (तिब्बत–चीन) में होगा। कोदारी के बाद सर्दी से बचाव के लिये कपड़े पहनने हैं। खासकर कान हमेशा ढक कर रखना है। ठंडे पानी का बिल्कुल इस्तेमाल नहीं करना, गर्म पानी व टायलेट पेपर काम लेना है। चीनी बोर्डर पर अनुशासन में रहना है। चीनी अधिकारी नाराज तो यात्रा रद्ध। चीनी सीमा में हम बेबस दूसरे के अधीन रहते हैं। बैग के ताले नहीं लगाने हैं अन्यथा शक होने पर बैग फाड़ दिया जायेगा। न्यालम के बाद यात्रा और कठिन हो जायेगी। आगे सुविधायें नहीं मिलेंगी और बिजली भी नहीं है। आदि आदि।''

मयूरभाई की गर्म पानी या टायलेट पेपर इस्तेमाल की बात मुझे रास नहीं आ रही है। यदि हम ठंडे पानी का इस्तेमाल नहीं करेंगे तो हमारा शरीर ठंड सहने के अनूकूल कैसे बनेगा? फिर तो मानसरोवर में नहाते ही बीमार होना तय है।

रात भरपेट खाना लिया। कमरे में प्रति व्यक्ति प्रतिदिन एक बोतल पेयजल ही दिया जाता है इसलिये पर्याप्त पानी पीकर और अपनी बोतलें भरकर ही कमरे में गये। यहां अतिरिक्त पानी आदि कुछ भी मंगाना बहुत महंगा है। पानी की बोतल 125 रुपये है जो सामान्य से छ गुनी मंहगी है। हमारे कमरे के फ्रिज में रखी शीतल पेय या टोकरी में रखे चिप्स आदि काम में लेने पर भी हमें 125 रुपये प्रति नग चुकाने होंगे।

30, जुलाई 2012, सोमवार

पेटभरा होने से नींद तुरंत आई पर रात पेटदर्द से दो घंटे मैं बहुत परेशान रहा। सुबह तबियत ठीक थी। आज की यात्रा के हिसाब से छोटा–बड़ा बैग जमाया। गर्म कपड़े छोटे बैग में निकाले। नागर साहब के उठने के बाद हम घूमने निकले। यहां लालमुंह के बंदरों का बहुत आतंक है। हम कमरे को अच्छी तरह बंद करके आये है। बाहर हिरण का जोड़ा दिखाई दिया जो तुरंत ओझल भी हो गया। आगे बढ़ने पर एक रास्ता पहाड़ के नीचे उतरता दिखाई दिया। एक कर्मचारी ने बताया गोल्फकोर्स जा रहा है। हम कच्चे कीचड़ भरे रास्ते में चप्पल से ही नीचे उतर गये। गोल्फकोर्स में घूमने लगे तो वहां का मैनेजर तेजी से चलता हुआ आया।

''होटल के मेहमानों को यहां घूमने की इजाजत नहीं है।''

हम वापस कोई 500 फुट चढ़कर आये। थकान नहीं आई। पास ही मंदिर है। सांईबाबा की प्रतिमा है। दर्शन कर प्रसाद ले आये। नहा तो बाद में लेंगे। पौने सात बजे कमरे में लौटे। आज समाचार सुनने का समय मिला है। भारत की लंदन ओलंपिक में असफलता, अन्ना के आंदोलन को नरेन्द्र मोदी का समर्थन, मालवा में भारी बाढ़ और उत्तरी ग्रिड फेल होने से भारत के नौ उत्तरी राज्यों में बिजली गुल।

नौ बजे नाश्ता करने गये। हमारे संघ के गुजराती सदस्य नाश्ता कर लौट चुके हैं। हम राजस्थानियों का दल बहुत ढीला है। नाश्ता–खाना ठंडा हो जाता है, बस में पीछे की सीटें मिलती है। क्या करें? महिलायें निकल ही नहीं पाती। नाश्ते के बाद कमरे में आ सो गये। साढ़े दस बजे साथियों का फोन आया। कमरा नम्बर 107 में हमारी मीटिंग है। सभी हाड़ौती के साथी पूर्व में ही जुटे हुये हैं। अभी तक का हिसाब हुआ और आगे के कार्यक्रम पर चर्चा। खूब हंसी मजाक भी चला।

संघ के आदेशानुसार 12 बजे बैग तैयार करके रख दिये। बैग न उठने तक हम रखवाली करते रहे। सामान उठने के बाद खाने पर गये और फिर बस में बैठे। वहां बसें भर गई थी। कैलास ट्रेवल्स ने पांच बसें लगाई हैं। एक खराब सी बस में जगह मिली। हम सब एक बस में ही बैठे।

हमारे पंचांग के हिसाब से आज सावन का अंतिम सोमवार है। कल हम बस से काठमांडू घूम रहे थे तो हजारों कावड़ियों की भीड़ सड़कों पर दिखाई दी थी। कई संस्थाऐं कावड़ियों के लिये भोजन व आवास का इंतजाम कर रही है। कावड़िये भगवान पशुपतिनाथ को आज जल अर्पित करेंगे। मंदिर में भारी भीड़ रहेगी तथा सड़कों पर यातायात जाम हो सकता है। पशुपतिनाथ के दर्शन आजकल बाहर से करवाये जा रहे हैं ऐसे में भगवान पर जल कैसे अर्पित होगा? मेरे मन में सवाल है।

मैत्रीसेतु

सुबह नाश्ता और दोपहर के खाने के बाद हम डेढ़ बजे आगे की यात्रा पर बसों से प्रस्थान कर सके। प्रस्थान से पूर्व बृजेशजी को आवाज देकर बुलवाया गया। उसके कमरे में तौलिये कम पाये गये। हमारे साथी इस आरोप पर तिलमिला गये। सारे सामान खोलकर चैक कराने को तैयार हो गये। तब व्यवस्थापक माने कि तौलिये सुबह रखे ही नहीं गये थे। होटल में घुसते समय हम सामान नहीं संभालते। न ही हमारे पास लिस्ट होती है। मुफ्त क्या है और पैसे किसके लगेंगे, देरी से पता लग पाता है। नित्य उपभोग्य सामान शैम्पू, साबुन, चप्पल, पानी की बोतल, चाय–काफी–चीनी के पाउच, टायलेट पेपर आदि कई चीजें ग्राहक को ले जाने का अधिकार भी होता है। हमने तो ये सामान भी नहीं रखे हैं। हमने बस में चढ़ते ही बृजेशजी को छेड़ा,

''यह सब आपके साथ ही क्यों हो रहा है? कुछ धरम करम भी किया करो।''

हम बस नम्बर 204 में बैठे थे तथा हमारे बैग बस नम्बर 659 में रखे गये थे। आगे कोदारी में इस कारण ट्रेवल के कर्मचारियों को बैग सही जगह पहुंचाने में बहुत मेहनत करनी पड़ी। भक्तापुर, धूलिखेत, बनेपा, पांचखाल, जिरोकिलो, गोदादाघाटी, बाह्यबिशी तथा तातापानी होते हुये हम शाम छः बजे कोदारी पहुंचे। रास्ते में एक छोटे कस्बे में होटल पर चाय–नाश्ते के लिये बसें रोकी गई थी। हमने वहां रास्ते से खरीदे लंगड़े आमों से चाट बनाकर खाई। चाट बनाने के लिये सारे साधन थाली, चाकू आदि होटलवाले के ही काम में लिये। चाट प्रदीपजी के निर्देशन में बनी और कम से कम मैंने तो पहली बार ही इस तरह आम का सेवन किया जो बहुत अच्छा लगा। गोदादाघाटी में हमने रास्ते की सबसे बड़ी नदी इंद्रावती विशाल पुल से पार की। बाद में कोसी नदी की उफनती हुई तीन शाखाओं को छोड़ आगे बढ़े। कोदारी अंग्रेजी में कोडारी लिखा जाता है। यह सिन्धुपाल जिले में है। यहां से आगे मितारी पुल हिन्दी में मैत्रीसेतु (फ्रेन्डशिप ब्रिज) बना हुआ है जिसके पार चीन की सीमा है। पूरे रास्ते हरी–भरी संकरी कोसी नदी की वादी है। मुझे उत्तराखंड की यमुनौत्री घाटी याद आती रही। यहां विशेष बात यह है कि सारी वादियों में सघन वृक्ष अभी तक मौजूद हैं। आशा के विपरीत नेपाल में अत्यधिक विकास देखने को मिल रहा है। खूबसूरत कंकरीट के भवन, अच्छी सड़कें व ऊंचे पुल। पनबिजली परियोजनाओं से रोशन गांव। गांवों में बच्चे–बच्ची पछीटे खेलते हुये दिखाई दिये। यहां कोदारी में सड़क पर बैडमिंटन

खेली जा रही है। भारत की तरह ही। यहां के एक कस्बे बाह्यबिशी में आज नेपाली कांग्रेस की बहुत बड़ी राजनैतिक सभा हुई थी जिसे बलबहादुर केशी ने संबोधित किया था। कई नेताओं की कारें रास्ते में मिली। कोदारी कोसी नदी की बॉटी कोसी नामक शाखा पर बसा हुआ है। यह कोसी नदी आगे भारत के बिहार राज्य में बहती है जहां इससे हर साल बाढ़ आती है। बिहार वाले इस नदी को कोसते रहते हैं।

अब यहां से हमारी परीक्षा के दिन प्रारम्भ हुये हैं। कुछ घुमाने के बाद कैलाश ताशी डीलक्स गेस्टहाउस के सामने हमें उतारा गया है। हमें इसी गेस्टहाउस में रात गुजारनी है। अंदर घुसते ही भयंकर बदबू आई। काउंटर में विभिन्न किस्म की शराब की बोतलें सजी हुई हैं। छोटे–छोटे कमरों में ठसाठस पलंग बिछे हैं। प्रति पलंग एक यात्री को सोना है जिसका भाड़ा दो सौ रुपये पलंग है जो हमारे ट्रेवलदोस्त देंगे ही। यहां 32 यात्रियों के शयन की व्यवस्था है। यहां कुल तीन भारतीये तरीके के शौचालय बने हुये है तथा दो बाशबेसिन है। नहाने की अलग से कोई जगह नहीं है। यहां हल्की सर्दी है। गेस्टहाउस के पीछे शोर मचाती बाटी कोसी नदी बह रही है। इसे देख मुझे गंगौत्री के ब्रह्मकुंड की याद आ रही है।

साथियों ने मुझे नीचे के कमरा नम्बर एक में सोने का आदेश दिया है। इस कमरे में चार पलंग लगे हैं तथा पूरे होटल में सबसे ज्यादा बदबू यहीं है। महिलाओं ने यहां सोने से मना कर दिया है। उन्हें ऊपर के कमरे में भेजा गया है। कमरे में सामान रखने की कोई जगह नहीं है। हां एक अच्छी चीज है भी। कमरों में बहुत सारी खूटियां हैं जिन पर हम अपने पेन्ट शर्ट टांग सके। हमारी यात्रा में व्यवस्थापक का काम प्रदीप डालमिया और हेमराजजी गोयल मिलकर संभाल रहे हैं। आप दोनों स्वयं से ज्यादा हम सब का ध्यान रखते हैं।

थोड़ी देर में भोजन तैयार हो गया। ग्राहकों के बैठने के लिये दुकान में मेज कुर्सियां लगी हुई हैं। वहीं भोजन हुआ। चावल, रोटी, करेला और आलू की सब्जी, दाल, छाछ और पापड़ और एक बोतल पानी। यही पानी हमें रात भर चलाना है। ज्यादा पानी चाहिये तो खरीदिये। खाना अच्छा लगा और भरपेट खाया। अब तक हम बदबू के आदी हो चुके थे। बाद में कुंजबिहारीजी और झालावाड़वाले भंवरसिंहजी के साथ मैं घूमने निकला। पास ही फोन बूथ से बारां बात हो गई। यहां की घड़ी में आठ पांच हुये है। मैं भ्रम में पड़ गया भारत में तो सात पेंतीस ही हुये हैं। मुझे छोटे भाई दीनू से बात करने के लिये दुबारा फोन लगाना पड़ा। घूम कर आने के बाद हम कमरे में आ रजाइयों में दुबक कर बातें करने लगे। मुझे नींद आ गई। बाद में मयूरभाई भी आ गये और मैं भी जाग गया। मयूर भाई बहला रहे हैं, 'चीन ने आज एक सौ पचास लोगों को प्रवेश दिया है जिसमें हमारा नम्बर नहीं आया। आगे अष्टपद में कुछ दिनों पूर्व जीप दुर्घटना में चार लोग मर गये थे। वहां वाहन बंद कर दिये गये हैं। कोई पैदल जाना चाहे तो मैं आदमी भेज दूंगा। मयूर भाई की बातों पर मैं तो आंख मूंद कर विश्वास नहीं कर पा रहा। साढ़े बारह बजे तक हंसी मजाक चली। यहां से कल आगे निकलना निश्चित नहीं है।

31, जुलाई 2012, मंगलवार

अच्छा उजाला होने तक सोता रहा था। बहुत देर बाद साथियों ने बताया कि अभी तो सवा सात ही बजे हैं। यहां दिन जल्दी निकलता है। मैंने ऊपर के कमरे मे जाकर भंवरजी व नागरजी को साथ लिया। कोई दो किमी घूमे। मैं यहां के स्थानीय निवासी से बात करना चाहता हूं। एक स्कूली लड़की ठीक हिन्दी समझने वाली मिली। नाम कुमारी संगीता सुनार। वो कक्षा सात में पढ़ती है। अभी नेपाल में एक महिने की बरसात की छुट्टियां चल रही है। वह मजदूरी करने के लिये निकली है। उसके पास चीन की सीमा में जाने का पासपोर्ट बना हुआ है। नेपाल में आज 2069–16–4 तारीख है। नेपाली साल वैशाख से शुरु होता है। जेठ, आषाढ, और ये सावन। चौथा महिना चल रहा है। विक्रमी संवत् भारत में 2069 है ही। आज सावन सुदी 13 भारतीय पंचांग के अनुसार है। अभी यहां सावन बुदी चल रही है। 16 तारीख कैसे है? लगता है बच्ची कुछ भूल रही है या मुझे नेपाली पंचांग को पढ़ने की जरूरत है। नेपाली भाषा देवनागरी लिपी में लिखी जाती है तथा हिन्दी के मूल अंकों का ही यहां प्रयोग हो रहा है। नेपाल ने हिन्दु परंपरा, संस्कृति व भाषा को बचा कर रखा हुआ है। नेपाली भाषा हाड़ौती भाषा के करीब लग रही है। मैंने कुछ भाषा की जानकारी लेनी चाही है। नेपाली भाषा देवनागरी में लिखी जाती है और हम समझ जाते हैं पर बोलने में लय बदल जाती है और हम समझ नहीं पाते। छोटे बच्चों ने बताया कि अबोध या बालक को बस तथा सयाने–बड़ों को बसनु कहते हैं। दुकान के लिये 'पसल', एवरेस्ट को एभरेष्ट तथा सगरमाथा कहते हैं। नेपाल में व तथा ब को भ लिखा जाता है। अधिकांश जगह स के स्थान पर ष का प्रयोग होता है। तिब्बती के कुछ शब्द सीखे हैं। नमस्ते करने के लिये छाती पर हाथ रखकर सिर झुकाकर 'निहाऊ' बोलते हैं। जवाब में 'पिहाऊ' कहते हैं। धन्यवाद के लिये 'सेसे' पानी के लिये 'छू', बुलाना (इधर आओ) के लिये 'कोला', मेरे पास नहीं है, नहीं चलेगी आदि मना करने के लिये 'मिन्दु', खाना खा लिया पूछने के लिये सीफालाल, जवाब में नहीं खाया तो 'म्यू दो माऊ' तथा कुछ समझा नही के लिये 'झिम्भू दुई' बोलते हैं। दर्रा या घाटी के लिये 'ला', नदी के लिये त्सा, झील को त्सो तथा चीनी में 'कोआइन', लिखते हैं।

रात होटल में एक महिला दिखाई दी थी वह आज नहीं है। पता लगा वह परिवार की बहू थी जो आज सुबह एक माह की छुट्टियों में पीहर काठमांडू चली गई है। भारत जैसा ही रिवाज यहां है।

तातापाणी

आज का समय गुजारने के लिये हमने 'तातापानी' स्नान का कार्यक्रम बना लिया। नाश्ते के बाद भंवरसिंह जी–श्यामकुंवर दम्पत्ति, कुंजबिहारी जी तथा मैं चारों पैदल ही निकल पड़े। हमारे दल में और किसी की इच्छा नहीं हुई। भंवरसिंहजी के पास कैमरा है। पूरे रास्ते रमणीक स्थानों, झरनों आदि के फोटो लेते हुये गये। रास्ते में तेज धूप खिली और छः किमी उतार के रास्ते में भी हम पसीना–पसीना हो गये। लक्ष्य से कुछ ही पहले हमारे बारां दल के साथियों की कार हमें पार करके गई। उन्हें किराये की टैक्सी मिल गई और सात जने तातापानी चले आये। यह स्थान यहां का लोकप्रिय तीर्थ है जैसे हमारे बारां में सीताबाड़ी। यहां समिति बना कर बहुत अच्छा विकास कार्य किया गया है। बीस रुपया प्रति यात्री टिकट कटा कर कोई पचास सीढ़ी नीचे उतर कर गौमुख के पास पहुंचते हैं। कुदरत का करिश्मा है। यहां कोई आठ गौमुखियों से बहुत गर्म पानी निकलता है। कोई तीस फुट नीचे शीतल कोसी की जलधारा बह रही है। बिल्कुल बद्रीनाथ जी जैसे। तिबारे बना कर महिला पुरुषों के लिये पृथक–पृथक स्नान की जगह बनाई गई है। एक तप्तकुंड (स्वीमिंग पूल जैसा) भी बनाया गया है जिसमें स्नान के लिये बीस रुपये का पृथक से टिकट है। नदी और इस स्थान के बीच में सुंदर बगीचा है, घाट है तथा सुविधायें भी बनाई गई है। आसपास तीन मंदिर भी है। सफाई भी बहुत अच्छी है। स्नान करने में आनंद आ गये। पुण्य लाभ तो मिला ही होगा। हमारे कार से आने वाले साथी नहीं नहाना चाहते थे पर यहां की व्यवस्था देख वे भी अंगौछे उधार ले–ले कर नहाये। नहाने के बाद मंदिर दर्शन किये। यहां समिति की ओर से पेयजल की बोतलें 15 नेपाली रुपये में बेची जा रही है। हमें होटल में यही बोतलें तीस रुपये में दी जा रही है। साथियों ने 15 बोतलें खरीद कर कार में डाल ली। गर्मी और चढ़ाई वाला छः सात किमी का रास्ता। हम चारों ने भी दो सौ भारतीय रुपये में कार कर ली। होटल पहुंच, खाना खा, एक घंटा लगभग नींद निकाली। इसके बाद समय गुजारने के लिये सब साथी डाइनिंग टेबल पर ही आ बैठे और खूब मस्ती की। देवकीजी ने होटल की नेपाली बौद्ध मालकिन को बड़े प्यार से मम्मीजी–मम्मीजी कह कर पटा लिया है। उनसे बहुत सारी सिफारिशें की गई हैं खास कर खाने के बारे में। उनकी दो किशोर बेटियां यहां का सारा काम करती है। खाना बनाना, बर्तन मांजना और परोसना भी। इस पूरे परिवार के साथ फोटो भी खिंचवाये गये हैं। एक बेटी को साथियों ने 'बहू' कहना भी शुरु कर दिया है। पता नहीं 'मम्मीजी और बेटियां' समझे या नहीं।

शाम को हम चाइना गेट तक घूमने गये। यहां लगे बड़े लोहे के फाटक के पार हमें रोक दिया गया। वहां खड़े नेपाल के अर्धसैनिकबल (एपीएफ) के सैनिकों का व्यवहार दोस्ताना है। बूंदाबांदी आने के कारण हमें होटल लौटना पड़ा। हमारे साथी आज भोजन में विशेष तड़का लगाने के लिये पास की किराना दुकान से बहुत से मसाले व देशी घी खरीद कर लाये हैं।

शाम को इस होटल में चाइना सुरक्षाबल का कोई बड़ा अधिकारी आया है। उसके साथ दस–बारह आदमी चल रहे हैं। विडियो कैमरा तथा फोटोग्राफी लगातार चल रही है। लगता है प्रेस वाले भी साथ हैं। हम लोगों का इतना बड़ा हुजुम देख पहले वे लोग अंदर रिवरव्यू प्वाइंट पर बैठे फिर हमारे पास की मेज पर आ कुछ खा पी चले गये। अधिकारी के हाथ से सिगरेट छूटी ही नहीं। यहां ठंडे प्रदेशों में मद्यपान, धुम्रपान तथा मांसाहारी भोजन आम बात है। शायद चीन के लोगों को नेपाल में आनेजाने की वैसी ही छूट हो जैसे भारतीयों के लिये है।

हमारे साथी रविजी को घबराहट की पुरानी बीमारी यहां उभर आई है। उनका बीपी निजी क्लिनिक पर चेक करवाया जो सामान्य निकला है।

स्पेशल भोजन हमारे साथियों ने बनवाया और हमारे से पूर्व ही दूसरा दल खाने पर बैठ गया। उनके जाने के बाद हमें नौ बजे खाना मिला। स्वाद में कुछ सुधार तो लगा। बृजेशजी, केबी सर तथा हेमराजजी गोयल के साथ रात ग्यारह बजे तक ताश खेल कर सोया। कल केबी ऊपर के कमरे में थे आज वे हमारे कमरे में आ गये हैं। सभी यात्रियों को डायमोक्स की आधी गोली खाने के लिये दी जा रही है ताकि शरीर सर्दी तथा विरल वायुदाब का आदी हो जावे तथा पेशाब सही आता रहे। केबी और मैं बिना गोली लिये ही बार–बार पेशाब जाने की बीमारी से ग्रसित हैं। गोली लेने वालों को खूब प्यास लगती है तथा पेशाब ज्यादा जाना पड़ रहा है। विसंगति यह है कि हमें तीन लीटर पानी रोज पीने की सलाह दी जाती है और पानी एक या दो बोतल दिया जा रहा है। हम यहां तक हजारों रुपये का पानी खरीद चुके हैं। मयूरभाई देख भी रहे हैं पर शायद अपना वादा भूल गये हैं। रात ही हमें खबर मिल गई कि सुबह सीमा पार हो जायेगी, हमारा वीजा आ गया है।

चीनी सीमा में

1, अगस्त 2012, बुधवार

प्रातः साढ़े छः बजे ही कमरे खाली करने का आदेश मिल गया था। पहले हमें चाय मिली फिर पूरी व भाजी (आलू मटर) का नाश्ता व पुनः चाय। लोहे के बड़े दरवाजे को पार करने से पहले सड़क के बाईं ओर स्थित गणेशजी के मंदिर सफल यात्रा के लिये प्रार्थना की गई। पहले नेपालगेट पर फिर मैत्रीसेतु पर सारे संघ के यात्री पंक्तिबद्ध खड़े हुये। मैत्री सेतु से उत्तरी ओर कोई पांच सौ फुट ऊपर बसी विशाल बस्ती तथा दक्षिणी ओर पीछे छूटे कोदारी का शानदार दृश्य दिखाई देता है पर यहां फोटो लेने की सख्त मनाही है। हमने बड़े बैग बिना ताला लगाये होटल के बाहर गाइड को संभला दिये थे। हमारे पारगमन की तीन सूचियां बनाई गई है। संयुक्त बीजा लिया गया है। सूची के अनुसार क्रमशः सभी यात्रियों को पासपोर्ट सहित खड़ा किया गया है। कुछ यात्रियों के देरी से आने के कारण पंक्ति बनने में भी विलंब हुआ। कोई आध घंटे बाद एक चीनी अधिकारी ने तीनों सूचियों के यात्रियों के पासपोर्ट की जांच कर हमें आगे भेज दिया। यहां एक ओर नेपाली मजदूरों की भी लाइन लगी है जिनमें कई बच्चे भी हैं। वे हमारे व अन्य यात्रियों के सामान सर पर लादे खड़े हैं और इसी प्रक्रिया से गुजर रहे हैं। पुल पार करने के बाद पारगमन कैनाल पर कोई घंटाभर खड़ा रहना पड़ा। अच्छी बात यह थी कि बादलों से मौसम ठंडा था और बरसात भी नहीं आई। यहां पेशाब की हाजत आने पर मयूर भाई से टूटता सा जवाब मिला, 'पीछे क्यों नहीं करके आये? यहां चीनी मिलेट्रीवाले गोली मार देंगें।' बाद में एक मजदूर ने इसी कार्यालय में बना टायलेट बताया। कई महिला पुरुषों ने उसका उपयोग किया। बृजेशजी ने आकर बताया, 'टायलेट बहुत गंदे हैं। मुझे तो उल्टी होती–होती बची है।'

इस पारगमन आव्रजन कार्यालय पर बहुत गहमागहमी रहती है। हमारी गाइड ने हमें पंक्तिबद्ध खड़ा कर रखा है। 33 लोगों की सूची में मेरा पहला तथा बृजेशजी का दूसरा नम्बर है। पीछे खड़े एक गुजराती भाई को बहुत जल्दी थी। बृजेशजी से तो भाई उलझ ही गया फिर देवकीजी की डांट सुन कर चुपचाप खड़ा हुआ। इमीग्रेशन भवन में दो जगह जांच के बाद हम भवन के दूसरी ओर निकल चीनी सीमा में खड़े हो गये। यहां भी हमें बहुत इंतजार करना पड़ा। हमारी बसें देर से आई तथा बहुत दूर खड़ी हुई। बसों तक पहुंचने के लिये कोई आध किमी चढ़ाई के रास्ते पर चलना पड़ा। धूप और गर्मी हो गई थी, सबके पसीने आ गये। बसों में बैठने के बाद भी पूरी व्यवस्था होने में आध घंटा और लग गया। हम लगभग 11 बजे भारतीय या डेढ़ बजे चीनी समयानुसार प्रस्थान कर सके। हमारी चीनी बस का नम्बर ए सी 0837 है। चालक गठीला, गौरा युवा है। मैंने जाते ही चालक से हाथ मिला कर हिंदी में पूछा, 'आप ही हमें यात्रा करायेंगे।' चालक हिंदी अंग्रेजी नहीं जानता। वह हक्का–बक्का रह गया। कोई जवाब नहीं मिला। यहां चीन में सब वाहनों ने चालक बायीं ओर बैठ कर गाड़ी चलाता है तथा सड़क के दायीं ओर चलने का नियम है।

यहां पारगमन के शानदार भवन के पास चीनी सामानों की दुकानें हैं। रजाईयां, खिलौने, हस्तशिल्प, सौन्दर्य प्रशाधन व खानपान सेवायें। कीमत भी वाजिब है पर अब सब भाव युआन में होने लगे हैं। यहां हमें एक युवान बेचने वाला भी मिल गया जो साढ़े नौ रुपये में युवान देने को तैयार था। गोकर्ण होटल में हमारे संघ के अधिकांश सदस्यों ने दस रुपये में युआन लिये थे। हमने बैंक से सवा नौ रुपये करीब में निकलवाये थे। युआन की अदलाबदली में भी कमीशन चलता है।

रवाना होने के कुछ किमी बाद ही जाम मिला। आगे पीछे करने के चक्कर में बस पहाड़ पर बनी सुरक्षा दीवार से टकरा गई। बस के एक ओर खरोंचे आ गई तथा उसका बटन दबाने से खुलने वाला एक मात्र फाटक खराब हो गया। रास्ते में कई बार फाटक अपने आप चलती गाड़ी में खुला। हमने जुगाड़ तकनीक बताई। सीट के पाइप से रस्सी बांध कर फाटक को बांध दो। चालक हंस कर रह गया। कोई तीस किमी हरा–भरा पहाड़ चढ़ने के बाद बहुत बड़ा शहर आया। इसका नाम, मात्र एक स्थान पर अंग्रेजी में चांगडू लिखा है पर यहां तिब्बती में इसे झांगदू बोलते हैं। शहर में बहुत बड़े–बड़े होटल, विशाल व भव्य शोरुम, कई सरकारी भवन तथा चौड़ी व साफ सड़कें हैं पर हर जगह सिर्फ चीनी भाषा का प्रयोग है। यही शहर हमें दो दिन से कोदारी से आकृष्ट कर रहा था। यहां से नीचे की ओर देखने पर पूरा कोदारी गांव दिखाई देता है। झांगदू में भी पुलिस ने यात्रियों की लिस्ट चेक की। यहां हल्की बरसात होने लगी थी तथा मौसम ठंडा हो गया था। हम ऊंचाई पर भी आ चुके हैं। हमारी बस में समय तारीख तथा तापमान बताने वाला मीटर लगा है। मीटर तारीख गलत बता रहा है इससे हम भ्रमित हुये। समय चीन का आता है जिसमें से हम ढाई घंटे कम कर लेते हैं। तापमापी 25 डिग्री सेल्सियस के आसपास चल रहा है। बाहर का तापमान कम है। बस पूर्णतः बंद रहने के कारण अंदर अपेक्षाकृत गर्मी रहती है।

रास्ता लगातार ऊपर चढ़ता रहा। कोई घंटाभर बाद एक चेकपोस्ट पर बहुत समय लगा। वहां वाहनों की कतार लगी थी। मौसम एकदम ठंडा है। तेज हवायें चल रही है तथा बरसात भी हो रही है। एक–एक कर सारे यात्री नीचे उतर गये और पहाड़ी सौन्दर्य को अपने कैमरों में कैद करने लगे। मयूर भाई व पियूषभाई भी अपने वीडियो लेकर आ गये। खूब नृत्य और मस्ती हुई। सभी से एक ही निवेदन किया गया कि छाता ले, अपने गर्म कपड़े पहन और कान ढककर ही बस से बाहर निकले। यहां चौड़ी

बरसाती नदी बह रही है। उसके किनारे लगी छोटी झाड़ियों से यात्रियों ने स्ट्राबेरी नामक फल तोड़–तोड़ कर खाये।

न्यालम्

एक घंटा और चढ़ाई वाले सफर के बाद हम न्यालम् पहुंचे। यहां 13000 फुट ऊंचाई पर वृक्ष समाप्त हो गये हैं। मात्र छोटी झाडियां व घास ही दिखाई दे रही है। सड़क के बाईं ओर बने गेस्टहाउस के सामने बस रुकी। यहां अंग्रेजी में गेस्टहाउस का नाम शी शा बैंग मां होटल लिखा हुआ है। फोन नम्बर 0892 8272191 है। एक ओर नम्बर 13989023107 शायद मोबाइल हो भी लिखा हुआ है। साथियों ने एक बड़े हॉल में सामान रखे। इस हाल में बारह पलंग लगे हैं। हमारे दल के तीन साथियों को अलग सोना पड़ेगा। इस होटल के सामने बहुत सारे झंडे लगा हुआ परिसर है शायद बैंग मां का मंदिर ही हो। यह लकड़ी से बना होटल भवन प्राचीन तिब्बती भवन निर्माण कला का नमूना है जिसकी दीवारों पर शानदार नक्काशी तथा चित्रकारी भी हो रही है। इस हॉलनुमा कमरे को अंदर से बाहर से बंद करने की कोई कुंडियां या चिटकनी लगी हुई नहीं है पर कोई बात नहीं, यहां हमें चोरी चकारी का कोई भय भी नहीं है। एक अच्छी बात यह भी है कि यहां इंसानों को सताने वाले मक्खी मच्छर भी नहीं हैं। बाहर बहुत सर्दी है। साढ़े तीन बजे हैं। ओस की बूंदें गिर रही है तथा तेज तीखी हवा चल रही है। हमने सामान जमाने के बाद कुछ देर ताश खेल समय गुजारा। फिर संघ द्धारा दूसरी मंजिल पर खुले में लगाये काउंटर पर जाकर, हल्के बरसते पानी में भीगते हुये चाय बिस्किट लिये। अभी यहां यात्रियों का एक दल और 'सम्राट कलकत्ता वालों' का आया है, उन्हें रुकने के लिये जगह नहीं मिल रही है। वे सभी बहुत परेशान हैं। हमारे से पूर्व यहां बैंगलोर व बंबई के यात्रियों का एक दल और रुका हुआ था। यह गेस्ट हाउस तिमंजिला है। तल मंजिल पर मात्र चार भारतीय तरीके के शौचालय व दो वाशबेसिन हैं। पेशाबघर व स्नानघर पूरे भवन में नहीं है। यहां तल मंजिल पर अक्सर शौचालय में प्रतीक्षा करनी पड़ती है। हम अनेकों बार सीढ़ियां चढ़ पहली या दूसरी मंजिल पर गये। यहां पानी की कमी नहीं है। एक शौचालय का फ्लशवाल्व खराब है। हमेशा पानी बहता रहता है पर यहां पानी कभी खत्म नहीं हुआ। पानी बर्फ सा शीतल है शायद किसी झरने से सीधी लाइन जोड़ी गई है।

हमें संघ की ओर से गर्म मोटी जाकिट दी गई है। मैंने अपने गर्म कपड़े उतार कर वह जाकिट पहन ली है तथा उसमें लगा टोपा कस कर बांध लिया है। मुझे शायद सर्दी लग गई है। बहुत देर से सरदर्द हो रहा है। चाय के बाद फिर ताश। सांझ हुई तो किसी तरह भजन की तान छिड़ी। बीच में टोकाटाकी हुई तथा राग नहीं मिल पाई। एक भजन भी पूरा नहीं हुआ कि भोजन लगने की सूचना आ गई। अभी थोड़ी देर पहले सूप तथा मक्का की फूली खाई ही थी। मैंने सलाद व थोड़ी सी खिचड़ी ही ली। खाने मे नमकीन की सब्जी, नमकीन गुजराती परांठें (भाखरे) तथा पापड़ भी है। पास ही पेयजल भी उपलब्ध कराया जाता है। भोजन के बाद छः साथी बहुत देर तक ताश खेले। कुंजबिहारीजी दूसरे कमरे में जाकर सोये। मैं सिरदर्द से परेशान रजाई ओढ़ सोने का प्रयास करता रहा। रात नींद कम आई पर सुबह सिरदर्द नहीं था। साथियों को मेरे बीमार होने तथा केबी सर के नाराज होने की चिंता रही। न्यालम् में हमें दो रात गुजारनी है। कैलाश ट्रैक्स के परिपत्र में भी यही बात लिखी हुई थी। यात्रियों का शरीर पहाड़ी शीत तथा ऊंचाई पर कम आक्सीजन का आदी हो जाये इसलिये यह व्यवस्था की गई है।

इस गेस्टहाउस के एक कमरे में किराने के सामान की दुकान है। दुकान में पैक सामान मिलता है। आटे का पैकेट देख साथियों को दाल बाटी बनाने की याद आ गई। पर बनायेगा कौन? हमारे शेरपाओं से अच्छे संबंध हैं हम चाहें तो उनकी रसोई में जाकर अपने पसंद का खाना बना सकते हैं। कमरे के बाहर अंग्रेजी लिपी में दुकान लिखा हुआ है। एक बड़े हाल में कार्यालय है जिसका संचालन युवतियां कर रही हैं। कार्यालय में फोन सुविधा है जहां चार युआन प्रति मिनट लिये जा रहे हैं। कार्यालय में सोफे लगे हैं जिन पर बैठ कर यात्री दूरदर्शन देखने का आनंद ले रहे हैं। हमारे संटी ने तो भारतीय चैनल ही लगा डाला। यहां की मालकिनें चीनी चैनल पर ओलंपिक या चीनी फिल्में देखती रहती है। मुझे तिब्बती लड़कियों द्वारा लगातार सिगरेट फूंकने के कारण इस हॉल में जाने में दिक्कत होती रही। सब साथियों ने यहां के फोन से बारां अपने घर बात की पर मैं नहीं कर पाया। आज यहां हमारे दल के देवकीजी ने एक गुजराती यात्री का बायगोले से होने वाले पेट दर्द का पैर की नस दबा कर इलाज किया और प्रशंसा पाई।

2, अगस्त 2012, गुरुवार (भारतीय मिती से सावनी पूनम रक्षाबंधन)

आज यहां मुंह अंधेरे ही चहल–पहल हो रही है। एक दल अलसुबह से ही जाने की तैयारी में लगा है। उनका चाय नाश्ता चल रहा है। केबी और मैं उजाला होने के बाद चार किमी घूमने गये। मुझे आज चलने में बहुत जोर आ रहा है खास कर चढ़ाई में। कल स्वास्थ्य खराब होने की आशंका के चलते खाना बहुत कम लिया था। नाश्ते के समय मैंने कॉफी पीने का निश्चय किया। अब इस यात्रा में

चाय काफी न लेने का व्रत स्थगित रहेगा। प्रदीपभाई ने बहुत कड़क काफी बनाकर दी जो किसी तरह बिस्किट तथा आलू प्याज और लहसुन के सैंडविच के साथ गले से नीचे उतारी। गले व पेट का इंफेक्शन ठीक हो जाना चाहिये। हमारे दल के मुखर सदस्य देवकीजी को यहां भूख नहीं लग रही है। वे भोजन तो बिल्कुल नहीं कर पा रहे।

न्यालम 3880 मीटर पर है। इस स्थान के बारे में मयूरभाई व शंकरजी द्वारा हमें बहुत भयभीत किया गया था। चिड़चिड़े हो जायेंगे, आपस में लड़ोगे, नींद नहीं आयेगी, आक्सीजन नहीं मिलेगी, कमरे का दरवाजा खोल कर सोना पड़ेगा, कुत्तों का आतंक है, यहां के वातावरण को जो नहीं झेल पायेगा वापस जायेगा आदि। हमने यहां एक रात गुजार दी है पर हमें या पूरे संघ में से किसी को भी अभी तक कोई समस्या नहीं आई है। दो जोड़ी ताश तथा हमारे हंसोड़ सदस्यों ने ही तो हमें इस स्थिति से न बचाया हो? हम कभी बोर नहीं हुये तथा जब भी सोये हमें अच्छी नींद आई। आज मैंने अपने नियम तोड़ काफी पी। पेटदर्द की डाइजीन तथा प्रातः डामोक्स की आधी गोली भी ली। प्रदीप डालमियां ने बताया था कि बारां के डाक्टर महेन्द्रजी गर्ग ने भी डायमोक्स खाने की सलाह दी है। आज संघ ने सभी सदस्यों से सामने की पहाड़ी पर पैरामाउंटिंग (पर्वतारोहण) के हिसाब से घूमने जाने का आग्रह किया है। हमारे पास भी बुलावा आया पर राजस्थान के दल में से कोई नहीं गया। हमें जाना चाहिये था। पहाड़ों पर घूमने से इस कम आक्सीजन में हमारे फेंफड़ों की क्षमता बढ़ती है। यहां से व्यवस्थायें कैलाश टैक्स प्राइवेट लिमिटेड वालों के पास चली गई है। बसें, गर्म जाकिट, सारे कर्मचारी सब उसी कम्पनी के हैं। इनकी सब व्यवस्थायें बहुत अच्छी है। कर्मचारी आदेश पर विशेष खाना–पीना या सामान लाकर दे देते हैं। हमें शिकायत का मौका नहीं देते। हमारे दल में दो जने देवकीजी व रविजी कमोड का उपयोग करते हैं। उन्होंने कर्मचारियों से कह कर लोहे की कमोड कमरे में ही मंगा कर रखवा ली है।

रक्षाबंधन

आज राखी का त्यौहार है। दोपहर 11 बजे महिलाओं ने पूजा के सामान निकाले। हमारे बड़े कमरे के दरवाजे पर श्रवण मांडे तथा उनकी पूजा की। फिर सभी ने राखियां बांधी। हमारे में सबसे कम आयु की सरिताजी हैं, उन्होंने हम सब भाइयों को राखी बांध, हमारे लिये मंगल कामना की।

दोपहर साढ़े ग्यारह बजे संघ ने बोतलवाला फलों का रस पिलाया। बाद में मैंने सोने का प्रयास किया तथा साथियों ने ताश खेली। कुछ देर बाद ही खाने का बुलावा आ गया। मेजों पर दाल–चावल, सब्जी, पापड़, सलाद, रसगुल्ले तथा खीर सजे हैं। रोटी की कमी खली। खाने के बाद पुनः आराम। पांच बजे शाम हम पांच व्यक्ति न्यालम के बाजार में गये। बहुत चौड़ी सड़क तथा विशाल भवन। जिनमें से कई होटल भी हैं। बड़े–बड़े शोरुम पर खरीददार कोई नहीं। बाजार में बहुत कम लोगों की आवाजाही। एक दुकान पर मुझे अंग्रेजी में शावरबॉथ लिखा हुआ दिखाई दिया। बीस युवान में गर्म पानी से स्नान कर सकते हैं। सात आठ दुकानों पर घूमे। भाषा की समस्या आई। सेल्सवुमेन कैल्क्यूलेटर पर सामान की रेट लिख देती हम कम कराने के लिये उस पर कम करके लिख देते। हेमराजजी गोयल ने टूथब्रश खरीदा तथा भंवरसिंह जी ने रैनकोट। बृजेशजी को हवा का तकिया नहीं मिल सका। वापसी में चढ़ाई पड़ती है, टैक्सी से आने की इच्छा थी पर टैक्सी ने पांच सवारी लेने से मना कर दिया। यहां टैक्सी की न्यूनतम दर दस युआन है। पैदल आये और सर्दी में भी हमारे पसीना आ गया।

आते ही संघ द्वारा वितरित की जाने वाली चाय ली। यहां हमें मानसरोवर से यात्रा कर लौट रहे यात्रियों से बतियाने का मौका मिल रहा है। वे भी लगभग हमारी दरों पर ही और लगभग इन्हीं व्यवस्था के अन्तर्गत यात्रा कर रहे हैं। आगे मौसम बहुत अच्छा है तथा उन यात्रियों को कोई परेशानी नहीं हुई है। हमें उनकी बातों से बहुत संबल मिला है। आज शाम हम एक घंटे तक भजन व आरतियां गा पाये। संझया के समय दूसरे कमरों से भी हमें भजन गाने की आवाजें सुनाई दे रही है। यहां पिछले छह दिनों से हमारे पास क्या काम है? खाना और सोना। आगे भी यही रहेगा। भोजन से पूर्व हमने सूप और पकौड़ी ली। रात के भोजन में रोटी, भिंडी की सब्जी, कड़ी, पापड़, नमकीन खिचड़ी मिली। न्यालम में हमें सुबह शाम प्रति व्यक्ति एक–एक बोतल पेयजल दिया जा रहा है। भोजन काउंटर के पास भी पेयजल की व्यवस्था रहती है, अतः हमें पानी की कमी नहीं आई। प्रातः टंकियों में भरकर गर्म पानी हाथमुंह धोने के लिये रखा जाता है तथा हमारी मिल्टन की केटलियां भी गर्म पानी से भर दी जाती है। यात्रियों को गर्म पानी पीने की हिदायत दी गई है पर केबी व मैंने अभी तक गर्म पानी का प्रयोग नहीं किया है।

हमें कल दो दिन का सफर एक दिन में पूरा कर पर्यांग पहुंचना है। हमारा एक दिन कोदारी में खराब हो गया था। हमारी कल की यात्रा 475 किमी की रहेगी। इसके लिये हमें सुबह जल्दी निकलना होगा। हमारे से बड़े बैग ट्रक में जमाने के लिये रात में ही ले लिये गये। हमें सुबह पांच बजे (भारतीय समय) से पूर्व उठने के निर्देश दिये गये हैं। हम जल्दी ही बिजली बंद कर लेट गये। पर बातों का सिलसिला बहुत देर चला। खास कर इकलेरावाले भाभीजी ने अपने परिवारिक जीवन की दास्तानें सुना–सुना कर हमें खूब हंसाया।

पर्यांग की ओर

3, अगस्त 2012, शुक्रवार

आदत के अनुसार रात में दो–तीन बार उठना पड़ा। रात भर पानी आता रहा और हममें से पेशाब करने के लिये कोई भी दूर या टायलेट तक नहीं गया। साढ़े चार बजे वस्तुतः हमारा दिन शुरु हो गया। आज यहां से दो दल मानसरोवर की ओर प्रस्थान की तैयारी कर रहे हैं। बहुत चहल–पहल है। पांच बजे करीब केबी सर मेरे पास आये और हम दोनों डेढ़– दो किमी घूमकर आये। यहां गेस्टहाउस में साढ़े पांच बजे हमारे संघ का चाय का काउंटर लगा तथा छः बजे नाश्ते के लिये उपमा भी आ गया। उपमा कच्चा रह गया था, कई भरी प्लेटें डस्टबिन में डाल दी गई हैं। मैंने मयूरभाई से शिकायत की पर उन्हें तो उपमा अच्छा लगा था। मैंने दूध के साथ पापकोर्न लिया। सफर ज्यादा है, सर्दी भारी है, बूंदाबांदी हो रही है, कुछ खा पीकर ही बस में बैठना चाहिये। सात बजे से पूर्व हमारा दो बस एवं सोलह कारों का काफिला आगे की यात्रा पर रवाना हो गया। न्यालम शहर पार करने के बाद पुल से दायीं ओर गाड़ियां बढ़ी। यहां पुलिस चौकी स्थापित है। यहां स्वतः ही सब आने जाने वाली गाड़ियों के फोटो खिंचते हैं। कैमरे की चमक सभी को दिखाई देती है। कुछ दूर हमारे बस चालक ने पहियों में हवा भरवाई। यहां प्राकृतिक दृश्य बहुत अच्छे थे पर हमें उतरने नहीं दिया गया। थोड़ा आगे आये एक गांव के किनारे झरने के आसपास खेती हो रही है। गेहूं, राई सब्जियां आदि पहचान में आ रहे हैं। आगे हल्की–हल्की चढ़ाई आई और हम इस यात्रा के सबसे ऊंचे दर्रे लालुंग ला पास पर पहुंचे। यह दर्रा 17500 फीट की ऊंचाई पर बताया गया। यहां प्रकृति एवं वन संरक्षण विभाग न्यालम का उपकार्यालय है। तिब्बती चीनी और अंग्रेजी भाषा में इस आशय के बोर्ड यहां लगे हुये हैं। यहां विशाल स्वागत द्वार बनाया गया है जिस पर बहुत सारी तिब्बती धार्मिक झंडिया बंधी हुई है। यहां सारा कारवां आध घंटे के लिये रोका गया। सबने रमणीक अलौकिक पहाड़ी दृश्यों का आनंद लिया तथा फोटोग्राफी की। एक मजेदार बात यह हुई कि पहली बार हमने हमारे धीर गंभीर चालक को हंसते व हिंदी बोलते देखा। हम यात्रियों के मन में उसकी छवि खराब है। यहां शेरपा ज्यों ही बोले, चलो चलो, त्यों ही चालक बस में चलो–चलो की आवाज लगाते हुये चढ़ा और सारे यात्री जोर से हंस पड़े। आगे इस चालक ने अंग्रेजी का शब्द ओ. के. बोलना भी सीख लिया। गाड़ी में बैठने के बाद आवाज लगाता ओके। जब हम (प्रदीपजी या मैं जो चालक के पीछे ही बैठते थे) कहते ओके तो वह गाड़ी आगे बढ़ाता।

हनुमान ताल

आगे रास्ता उतार वाला आया। धूल भरी राहें जैसे हम थार के मरुस्थल में चल रहे हों। यह पूरा क्षेत्र हिरण अभयारण्य घोषित है। कई जगह हिरणों के कुलांचे भरते फोटो वाले बोर्ड लगे हुये हैं। हमें अनेकों हिरणों के झुंड भी दिखाई दिये। सामने बाई ओर बर्फीले पर्वत श्रृगों की विशाल व भव्य श्रृंखला दिखाई दे रही है। चलती बस में से ही फोटोग्राफी की गई। इन्हीं पर्वतों का पानी दायीं ओर की झील में जिसका भारतीय नाम हनुमान ताल है, में आता है। झील के उत्तरी किनारे पर कारवां रोका गया। हमारे भरपूर आनंद लेने के लिये। यहां सारे यात्री खूब नाचे व जम कर फोटोग्राफी की। आध घंटे बाद प्रस्थान हुआ। एक पहाड़ी पार करने के बाद दूसरी ओर पुनः विशाल झील दिखाई दी। इस पठार पर कई झीलें बन गई है जिनमें आसपास की पर्वत श्रृंखलाओं का पानी आता रहता है। आगे की एक झील में बड़ा विलक्षण दृश्य दिखाई दे रहा है। किसी चित्रकार ने अपनी कूंची से धरती पर इतना बड़ा चित्र बनाया है क्या? या बादल और आसमान जमीन पर उतर आये हैं। इस झील का भारतीय नाम विष्णुताल बताया गया है। तिब्बती का नाम नीलम पिइकोत्सो झील है। बड़ी मुश्किल से ही हम पकड़ पाये कि यहां झील है और सामने के नीले पहाड़ों तथा आसमान में छाये सफेद काले बादलों की परछाई; हमें आकाश धरती पर उतर आने का भ्रम पैदा कर रही है। इस झील का पानी कितना स्वच्छ और शांत है? हमें आधा घंटा बसें रोककर यहां के मनोहारी दृश्यों के अवलोकन का अवसर दिया गया। बाद में हमें छत्तीस किमी का कच्चा रास्ता आया। कई जगह मिट्टी का और कई जगह कीचड़ वाला भी। पहाड़ी क्षेत्र उतार चढ़ाव वाला रास्ता। हमारी गाड़ियां सामान्य गति से चल सागा के करीब पहुंची।

सागा शहर ब्रह्मपुत्र नदी के किनारे पर बसा हुआ है। तिब्बती में इस नदी का नाम यास्लांग–त्सांगपो है। कोई दस–पांच वर्ष पहले ही वैज्ञानिकों ने साबित किया है कि ब्रह्मपुत्र नदी मानसरोवर से निकलने वाली यह नदी ही है। हमारा अगला पड़ाव इस विशाल और पवित्र नदी के किनारे लगाया गया। यहां हमारा भोजन होगा। हमें भी पता नहीं था कि हमारी बस की डिक्की में भोजन रखा हुआ है। प्रातः छः बजे से पूर्व ही खाना तैयार कर पैक कर बस में रख दिया गया था। यात्रियों के उतरते ही हमारे साथ चल रहे कर्मचारियों ने डिक्की खोल मेजें लगाई तथा उन पर खाना सजा दिया। इन लोगों की फुर्ती और कार्यकुशलता और सेवाभाव पर हम सब आश्चर्यचकित हैं। प्लास्टिक की प्लेट्स में लेकर चावल, परांठे, राजमा तथा करेले की सब्जी, मिक्स आचार, मीठे में गुलाबजामुन, सेवफल खाये। बाद में एक फ्रुटी भी सबको दी गई। पानी का भी काउंटर लगाया गया।

नदी किनारे, पहाड़ों के बीच, हरे घास के मैदान में हमने शानदार पिकनिक की। हमारे दल की नौ कारें यहां नहीं पहुंच पाई। पता लगा उनमें से कोई गाड़ी खराब हो गई है। आध घंटा इंतजार के बाद मयूरभाई ने यहां से आगे बढ़ने का निर्णय लिया। इस आधे घंटे का सारे यात्रियों ने पूरा आनंद लिया। यहां की कठोर जमीन पर लेटने–बैठने के भी अपने मजे हैं। खूब फोटो खींचे गये। दोपहर है, धूप खिल रही है ठंडी हवा चल रही है पर इतनी ठंड नहीं है। हम 4840 मीटर की ऊंचाई पर हैं। सांस तो भरती है पर और कोई तकलीफ किसी को नहीं है।

सागा नदी का विशाल कंकरीट से बना आधुनिक पुल पार कर, कुछ कीचड़ भरे रास्तों से गुजर, सागा शहर के डीजल पंप पर ईंधन लेते हुये हम बहुत सजे–धजे बाजार में पहुंचे। चौराहे पर बने एक शानदार होटल के सामने हमारे वाहन रुके। पता लगा सारी गाड़ियों के ड्राइवर यहां खाना खायेंगे। ताज्जुब है, ये लोग हमारे साथ का खाना नहीं लेते। पर ताज्जुब जैसी बात भी नहीं है। तिब्बती खाने में और हमारे खाने में बहुत फर्क है। फिर ड्राइवर तो कहीं के भी हों उन्हें तो सब तरह का खाना और पीना भी चाहिये। भरे बाजार सड़क के एक किनारे बस कोई एक घंटा खड़ी रही। हमारी पीछे रह गई नौ कारें भी तब तक आ गई। यात्रियों के लिये तुरत–फुरत सड़क के किनारे फुटपाथ पर ही काउंटर लगा कर खाना सजाया गया और लोगों ने सड़क पर खड़े हो बफरडिनर का आनंद लिया। खाना ठंडा हो चुका था, कुछ यात्रियों ने इतनी जोर से बोल कर इसका विरोध किया कि हमारी बस में भी आवाजें आ गई। यहां बहुत देर रुकना पड़ा। कई महिला पुरुषों को पेशाब करने के लिये बेशर्मी से सड़क के किनारे ही जाना पड़ा। सागा में पूरे समय हल्की बरसात आती रही इसलिये हम बसों से नहीं उतरे। खाना खाकर आने के बाद चालकों ने अपने वाहन संभाले और हमारी घड़ियों के अनुसार साढ़े तीन बजे हम आगे की यात्रा पर रवाना हुये।

ब्रहमपुत्र

विष्णुताल

पर्यांग

सागा से पर्यांग लगभग 255 किमी हाइवे बहुत बढ़िया पक्की सड़क है। वाहन बहुत तेजी से चले। पूरे रास्ते मध्यम बरसात मिली। रास्ते में चालक ने चार बार बस रोकी। सिगरेट पीने के लिये या पीछे आ रही गाड़ियों का इंतजार करने के लिये। हमने भी हर बार पेशाब करने के लिये समय का उपयोग किया। कई बार तेज बरसात में छाते के नीचे व भीगते हुये भी जाना पड़ा। शाम साढ़े छः बजे मात्र तीन घंटे में हम पर्यांग के गेस्टहाउस में पहुंच गये। 255 किमी तीन घंटे में पहुंचना आश्चर्यजनक लगता है। कहीं समय या दूरी का फर्क हो सकता है पर यहां सड़कों पर यातायात नहीं के बराबर ही है तथा सड़कों पर गढ्ढे व जानवर भी नहीं हैं। हमारी बस 120 की गति से चल रही थी। गेस्टहाउस में हम 15 राजस्थानियों को 5–5 पलंगों वाले तीन कमरे नम्बर 5, 6, 7 दिये गये। पलंग किसी तरह कमरे में ठूंसे गये हैं बस। दीवान जैसे पलंगों पर रजाई, कंबल, तकिया व साफ चादर बिछे गदेले उपलब्ध हैं। कमरों में लकड़ी के पटियों के किवाड़ हैं। छत भी लकड़ी की है पर उसके नीचे रंगीन कपड़े का पर्दा बांधा गया है। लकड़ी की दरजों में से ही कहीं से हवा आ जाये शायद वरना कमरे एकदम पैक। हमें मानसिक रूप से पहले से ही निम्न स्तरीय आवासों में ठहरने के लिये तैयार कर दिया गया था। हमें कमरों में परिवार सहित ठहरने में दिक्कत आई। प्रदीपजी व उनकी पत्नी को अलग–अलग कमरों में सोना पड़ा। यहां बरसात जारी है और बहुत तेज सर्दी लग रही है। आते ही यहां कई यात्रियों को आवश्यक सुविधायें ढूंढनी पड़ी। गंदा सा शौचालय। महिलाओं का एक ओर तथा पुरुषों का दूसरी ओर। एक साथ तीन जरूरतमंदों के एक साथ बिना पर्दा किये बैठने की व्यवस्था। बाहर पानी के जार रखे हैं। अपनी बोतल भरो और जाओ। दूर तक बदबू आती हुई। पेशाबघर की भी अलग से कोई व्यवस्था नहीं। कैसी है ये तिब्बती संस्कृति। मैं मयूरभाई से मिला।

'गेस्टहाउस वाले से कह कर हम शौचालय साफ नहीं करवा सकते क्या? यह तो उनकी जवाबदारी बनती है।'

मयूर भाई ने व्यवस्था बनाना छोड़ मुझे ही झिड़का, 'मैंने पहले कह दिया था ना, जंगल में जाओ।'

एकदम लठठ्छाप भाषा। मुझे तो कहीं जाना नहीं है। यहां जंगल भी कितनी दूर है। इस गेस्ट हाउस के आसपास बस्ती है। सामने तो विशाल और भव्य इमारत बनी हुई है। हां सड़क के किनारे कहीं भी बैठो कोई आ जा नहीं रहा है। पता नहीं यहां इतना सूनापन क्यों है? इसी तरह कई लोग पेयजल का उपयोग हाथ धोने में कर रहे थे। यहां कहीं पानी की टंकी, नल आदि है ही नहीं। मुझे पियूषभाई नजर आ गये। मैंने उन्हें सुझाव दिया,

'यहां हाथ धोने के लिये पानी की टंकी रखवा दो अन्यथा इस महंगे बोतलबंद पेयजल का दुरुपयोग होगा।' पियूषभाई ने मेरी बात को समझा पर वे यह व्यवस्था सुबह ही करवा पाये।

आज हमारे सामानों की गाड़ी देर से पहुंच पाई। रास्ते में बरसात से हमारे गाड़ियों में रखे बड़े बैग भीग गये। यहां सर्दी बहुत है तथा बरसात भी आ रही है अतः हमें आठ बजे चाय बिस्किट, नौ बजे सूप तथा मक्का की फूली तथा साढ़े दस बजे चावल, रोटी, दाल तथा आलू की सब्जी कमरों में ही लाकर दी गईं। प्रति यात्री पेयजल की एक बोतल भी उपलब्ध करवाई गई है। इससे पूर्व आदेश आ गया है कि छोटे बैग में नहाने के लिये एक जोड़ी कपड़े निकाल कर रखें अगर कल मौसम ठीक रहा तो मानसरोवर में स्नान करेंगे। रात ही हमारे पासपोर्ट भी इकठ्ठे कर लिये गये। आगे पुलिस चेकिंग होगी। इसी बीच हम गेस्ट हाउस के कार्यालय में फोन करने गये। यहां फोन का आठ युवान प्रति मिनट लिया जा रहा है। केबी सर की बात हो गई। एक मिनट छत्तीस सैकंड के सोलह रुपये मांगे। पंद्रह भी नहीं लिये। बारह तेरह साल की बच्चियां इस होटल का संचालन कर रही है। हमें खाना खिलाने वाले स्टाफ के दो जने यहां मेज कुर्सी पर पैग लिये बैठे हैं। यहां पास ही कुआ है। जहां से स्टाफ का एक अन्य आदमी डोलचियां खींच–खींच कर टंकी में पानी भर रहा है। अभी तो टंकी आधी ही भरी है और उसकी हालत खराब है। मैंने रस्सी पकड़ी पर मैं डोलची को पानी में डुबा ही नहीं पाया। कुआ पचास साठ फुट गहरा तो होगा ही। 'यहां पानी की बहुत कमी है। कुये से ही भरना पड़ेगा और कोई व्यवस्था नहीं है।'

पर्यांग के बारे में हमें बताया गया था कि यहां मुर्दों को एक गड्डे में फेंक दिया जाता है जो कुत्तों का आहार बनते हैं। यहां के कुत्ते आदमखोर हो जाते हैं, जिनसे सावधान रहने की जरूरत है। न्यालम से यहां तक पूरे पठार पर हमें कहीं कोई बृक्ष नजर नहीं आया जिसकी लकड़ी जलावान में काम आ सके। 13000 फुट से सोलह हजार फुट समुद्र तल ऊंचाई पर उचित वातावरण में घास तथा छोटी झाड़ियां ही पैदा होती है। पूरे हिमालय में इन तृण में हजारों औषधियां छिपी हैं जिनका ज्ञानी वैद्य उपयोग करते थे। इस घास के सहारे पशुपालन होता है जिससे मानव को दूध, ऊन, मांस, चमड़ा, यातायात का साधन तथा जलावन के लिये गोबर मिलता है। कई स्थानों पर गोबर के कंडो के बड़े बड़े ढेर देखने को मिले। हमारे देश में भी किसान इस तरह गोबर के ऊपलों को बरसात के लिये संरक्षित रखते हैं। जहां ईंधन नहीं मिला वहां शव गाड़ने, नदी, समुद्र में बहाने के रिवाज प्रचलन में आये। यहां न नदी समुद्र है और न ही पत्थर में गड्डा खोदा जा सकता है तो यह रिवाज बन गया।

मानसरोवर झील

4, अगस्त 2012, शनिवार

प्रातः यहां न हवा थी, न बरसात और सर्दी भी बहुत कम हो गई थी। प्रदीप व मैं जंगल जाने के लिये बाहर निकले तो देखा कि गेस्टहाउस का मुख्य लोहे का फाटक बंद है। गेस्टहाउस की मालकिन ताला लगा गई और वह सुबह छः बजे ही खोलेगी। हमने रसोई घर के स्टाफ से बात कर हाथमुंह धोने के लिये गर्म पानी रखवाया। अब मालकिन ने दरवाजा बंद कर दिया तो वही भुगतेगी। यात्रियों ने जहां भी सुविधा दिखी अंधेरे में अपना काम निपटाया ही। छः बजे कूच करने के पहले हमें खुले में काउंटर लगाकर दूध चाय, काफी, पोपकोर्न, पोहा आदि नाश्ते में दिया गया। इसके साथ ही हमारे बड़े बैग भार वाहन में रखे जा चुके हैं। आज हमारे छोटे बैगों में भी बहुत वजन हो गया है। कपड़ों के अलावा रैनकोट, प्लास्टिक शीट, तेल, कंघा आदि सामान भी रखे हैं। हमारे वाहन छः बीस पर रवाना हो गये और समतल मार्ग पर चलते हुये करीब आठ बजे हम मायुम चेकपोस्ट पर पहुंच गये। यहां हमारे पासपोर्ट्स की जांच होगी फिर हमें आगे जाने दिया जायेगा। पूर्व में ही तय था कि यहां घंटा दो घंटा रुकना पड़ सकता है। मौसम साफ है और सारी सवारियां वाहनों से उतर कर धूप का आनंद लेने लगी। हमने ताश भी निकाली पर खेल नहीं पाये पर हमारे वाहनों के चालक झुंड बनाकर शोर मचाते पैसों से ताश खेलते रहे। यहां नमस्ते करती खड़ी एक मूर्ती हमारी उत्सुकता का केन्द्र बनी रही। मैत्री पुल कोदारी में इसी मुद्रा में दो सैनिक दोनों ओर खड़े थे जिन्हें हम बहुत देर तक मूर्तियां समझते रहे थे और यहां इस मूर्ती को जीवित सैनिक समझते रहे। एक घंटे से भी ज्यादा समय में हमारे पासपोर्ट्स की जांच हुई फिर एक सैनिक कागज पैन लेकर आया और उसने सवारियां गिन–गिन कर गाड़ियों को आगे निकाला।

दस मिनट बाद ही एक ढाबे पर पुनः कारवां रुका। यहां वाहन चालकों ने भोजन किया। देर होती देख हम यात्री चालकों को कोसने लगे। बृजेशजी तो उनसे ज्यादा ही खफा रहते थे। माना शराब, सिगरेट, मांसाहार से हमें नफरत है पर इस कारण हम उस वातावरण में पले इंसान से भी नफरत करने लगें क्या? कुछ देर बाद चीनी सेना का जवान पुनः सवारियां गिनने आया। हमारी देरी का कारण दूसरा निकला। हमारे पास कुल 119 पासपोर्ट हैं और पूर्व में जवान ने 120 यात्री गिन लिये थे। अब संतुष्टि होने पर हमें आगे जाने की इजाजत मिली है। हमारे दल में 102 यात्री, 2 प्रबंधक तथा 15 स्टाफ है। हम साढ़े नौ बजे आगे बढ़ पाये। रास्ता बहुत अच्छा है। धूप खिलने से हमें गर्मी सी लगने लगी। इस रास्ते में हमने मायुमला दर्रा पार किया तथा आगे उतार के बाद मायुमत्सो नदी पार की। इसके बाद हमें बर्फीले पर्वत शिखरों के दर्शन होने शुरु हो गये। पर्यांग से मानसरोवर की दूरी 270 किमी लगभग है। मानसरोवर झील बहुत दूर से ही अपने विशाल आकार में दिखाई देने लगी। यहां झील के पास भी एक चेक पोस्ट पर हमें रुकना पड़ा। थोड़ा आगे ही विशाल आधुनिक भवन निर्माण चल रहा है। उसी के सामने काफिला रोका गया। एक और गुरला मांधाता या विष्णु या नारायण पर्वत 7694 मीटर ऊंचा तथा दूसरी ओर मनोहारी कैलाश पर्वत के दर्शन हो रहे हैं। सामने विशाल मानसरोवर झील है। यहां हमने आधा घंटे से ज्यादा प्रकृति का आनंद लिया तथा फोटोग्राफी की। आगे हमारा कारवां मानसरोवर की परिक्रमा के लिये झील के सहारे सहारे कच्चे रास्ते पर चल पड़ा। झील के किनारे एक ओर चेकपोस्ट पर यात्रियों का इंद्राज कराया गया। हमें झील के रास्ते कई तिब्बती यात्री झील की पैदल परिक्रमा करते हुये दिखाई दिये। इस झील की पूरी परिक्रमा अस्सी किमी की है। इस रास्ते में कहीं रुकने या खाने पीने का स्थान नहीं है। पता नहीं ये तिब्बती लोग क्या व्यवस्था करते होगें? पैदल परिक्रमा तीन दिन से कम में तो पूरी नहीं हो सकती।

मानसरोवर झील में गुरैल मान्धाता पर्वत श्रृंखला तथा कैलाश पर्वत श्रृंखला से पानी आता है तथा इसमें से ब्रह्मपुत्र नदी के रूप में पानी निकलता है। पुराणों में इसी पर्वत से गंगा निकलने का वर्णन है। इस झील का पानी कभी जमता नहीं बताया। 15200 फुट ऊंचाई पर झील का न जमना प्रकृति का आश्चर्यजनक पहलू है। मैंने इस बारे में कहीं पढ़ा सुना नहीं इसलिये विश्वास नहीं हो पा रहा। इस झील का चमकदार साफ पानी कई रंग बदलता है। नीला, हरा, कालिमा युक्त, सफेद, सूरज की रोशनी में रक्तिम; कई रंग हमें भी दिखाई दिये। एक ही समय में झील के विभिन्न स्थान के पानी का रंग अलग दिखाई देता है। इसका कारण प्रकाश परावर्तन होना चाहिये। पानी तो कांच की तरह है जैसे परछाई पड़े वैसा ही परावर्तन होगा। इस सरोवर में कमल नहीं खिलते न ही यहां बड़े राजहंस जैसे पक्षी दिखाई दिये। छिछले पानी में घास पर छोटे पक्षी अवश्य भारी संख्या में हैं। हमारे धार्मिक ग्रंथों में कई जगह मानसरोवर का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन आया है। यहां आने वाले यात्रियों की संख्या झील की प्रसिद्धि के हिसाब से नगण्य सी ही है। हमारे दल के अतिरिक्त शायद पचास यात्री और हों।

उपयुक्त या शायद निर्धारित स्थान पर कारवां रोक कर हमें स्नान करने की अनुमति दी गई। मयूरभाई का सख्त आदेश है एक डुबकी से ज्यादा कोई नहीं लगायेगा। मयूर भाई अपनी जगह ठीक है। उन्होंने यहां नहाने के बाद कई यात्रियों को बीमार होते हुये देखा है। अभी मौसम ठीक है। कभी धूप कभी छांह हो रही है। सर्दी भी महसूस हो रही है। हमारे संघ के लगभग आधे ही यात्रियों ने अभी स्नान किया। हमारे व्यवस्थापक गाइड आदि किसी भी कर्मचारी ने स्नान नहीं किया। कल भी इस मानसरोवर में स्नान करना है। मुझे कपड़े उतारने और नहाने में बहुत ठंड लगी। बड़ी मुश्किल से एक डुबकी लगा पाया हूं। सर के पीछे की ओर दर्द होने लगा है। पांच दिन बाद आज धुले हुये कपड़े पहने हैं। न्यालम में तीन दिन पहले पहनी गर्म जाकिट अभी मात्र आध घंटे के लिये ही उतारी है। स्नान के बाद श्रद्धानुसार पूजा पाठ भी हुआ। गुजरात के लोगों ने बहुत देर तक गरबा भी खेला। इतनी देर में ही हमारा भोजन सज गया है। चावल, पूरी, मिक्स सब्जी, चना सब्जी, रसगुल्ला और अंत में फ्रूटी।

रास्ते में मुझे मालूम पड़ा कि मानसरोवर यात्रा के लिये एक चेकपोस्ट पर हमारे गाइड द्वारा हमारे लिये टिकट लिये गये थे। यहां टिकट व्यवस्था लागू है। टिकट बहुत खूबसूरत बहुरंगी छपाई में बनाया गया कैलाश मानसरोवर यात्रा के लिये पर्यटकों को आकर्षित करने का विज्ञापन पत्र लग रहा है। यहां के प्रमुख दर्शनीय स्थानों के बारे में उसमें अंग्रेजी तथा चीनी भाषा में जानकारी दी गई हैं।

भोजन के बाद पुनः वाहनों से यात्रा प्रारम्भ हुई। बाईं ओर पूर्णतः बर्फ से आच्छादित मान्धाता पर्वत श्रृंखला मन मोह रही है। सामने झील का रंग बिरंगा पानी विचित्र नजारे पेश कर रहा है। दायीं ओर दिखाई दे रही बर्फीली चोटियां कैलास पर्वत के अंग हैं। प्रकृति के इन नजारों को देखते हुये हम राक्षस ताल के किनारे पहुंचे। यह भी उतनी ही विशाल झील। बस मानसरोवर के दक्षिण में एक पहाड़ी के पार। वही चमकदार नीला पानी। यहां पानी में लहरों से बनते बिगड़ते सितारे विचित्र रोमांच उत्पन्न करते हैं। मैं आसमान की ओर झांका पर वहां तो तारे नहीं हैं। यहां भी पक्षियों की कमी महसूस हुई। राक्षस ताल की एक कथा भी सुनाई गई। रावण ने तपस्या के बाद भगवान शिव से शिवलिंग प्राप्त किया और वापस लंका की ओर लौटा। रास्ते में रावण के पेशाब करने से यह ताल बना। इस ताल का पानी कोई काम नहीं लेते। किंवदंती है कि इस ताल में स्नान से राक्षसी स्वभाव हो जाता है। कुछ ऐसी ही कथा देवघर वैद्यनाथधाम के राक्षस तालाब के बारे में बनाई गई है।

छुगुम्बा

हमने कुछ ऊपर से फोटोग्राफी की थी बाद में हमारे वाहन राक्षस ताल के बिल्कुल पास की पक्की सड़क से गुजरे। कुछ किमी चलने के बाद हम वापस मानसरोवर के किनारे आ गये। यहां बने बहुत सारे भवनों में से एक गेस्टहाउस पर हमारा सफर थमा। हमारे गाइड ने इस स्थान का नाम 'छुगुम्बा' बताया है। हमें दो रातें इसी गेस्ट हाउस में गुजारनी है। प्रदीप जी व हेमराजजी ने हम तेरह लोगों के लिये कमरे लिये हैं। दो कमरे चार–चार पलंग वाले व एक कमरा पांच पलंग वाला। गत रात्रि की व्यवस्था में हमें बहुत दिक्कत आई थी। पांच पलंग लगने के बाद कमरे में ढंग से चलने तक की जगह नहीं बचती। आज झालावाड़ वाले हमारे साथ नहीं रह पायेंगे। देवकीजी परिवार, मैं तथा केबी सर कमरा नम्बर चार में ठहराये गये हैं। भंवरसिंह जी नाराज हैं। मैंने उनसे मिलने पर कमरा नम्बर पूछा तो बोले,

'अब आप लोगों ने हमें भगा ही दिया तो क्या कमरा नम्बर बताऊं? आप लोगों ने जानबूझकर तेरह यात्रियों के हिसाब से चार पलंग वाले कमरे मांगे। पांच पलंग वाले कमरे भी मिल रहे थे।'

उनकी नाराजी भी वाजिब है पर दो रात रुकना है थोड़ा खुला कमरा मिल जाये तो अच्छा है।

मानसरोवर के किनारे शाम को सर्दी बहुत बढ़ गई। यहां सुविधाघरों की कमी बहुत खल रही है। कमरों में कोई व्यवस्था होती नहीं है। चीनी सरकार के बनाये टायलेट देखने में बहुत सुंदर हैं पर सौ मीटर तक सड़ांध मारते हैं। यहां जंगल और खुली जगह भी दूर है।

यहां गेस्टहाउस के कमरों में बिस्तर साफसुथरे हैं। हमने सामानों के ढेर में से अपने–अपने बैग उठाकर अपने–अपने कमरों में रखे। हम सभी थके हुये हैं तथा स्नान करने से भी कुछ पस्त से हो रहे हैं। सब बिस्तरों पर पसर गये। एक घंटा बाद चाय तथा उसके भी एक घंटा बाद सूप दिया गया। इस गेस्टहाउस में एक बड़ा हॉल बना हुआ है उसे ही डाइनिंग रुम बनाया गया है। आवाज पड़ जाती और सब हॉल में जाकर खा पी लेते। यहां से मानसरोवर का बहुत अच्छा दृश्य दिखाई देता है पर सर्दी के कारण बाहर खड़े होना जोखिम भरा है। रात में ट्रेवलदोस्त के मैनेजर तथा कैलास ट्रैक्स के शेरपा ताशी कागज पेन ले हमारे कमरे में घोड़े पिठ्ठू की बुकिंग के लिये आये। हमें शुरु से ही डराया जाता रहा है कि कैलाश परिक्रमा मार्ग में इनकी बहुत कमी है ओर अग्रिम बुकिंग करनी होती है, अन्यथा नहीं मिलते हैं। सभी घोड़े से परिक्रमा जाने के इच्छुक यात्रियों ने दो हजार एक सौ युआन प्रति यात्री इन लोगों को दे दिये हैं। हमारे कमरे में देवकी परिवार ने स्वास्थ्य के मद्दे नजर परिक्रमा पर न जाने का निश्चय कर लिया था। केबी सर व मेरा पैदल जाने का ही मानस है। मेरा सोच है कि छोटा सा बैग है उठा लेंगे पीठ पर। पोटर भी तो छः किलो से ज्यादा वजन नहीं लेगा। अमरनाथ यात्रायें भी तो इससे ज्यादा वजनी बैग को कंधे पर लेकर ही की थी। यहां दोनों ने मिल कर केबी सर को पोटर की उपयोगिता बताई और केबी सर ने मेरे ना–नुकर करने के बाद भी दो पोटर के लिये बारह सौ युवान का भुगतान कर दिया। हमें बहुत पहले से ही पता है कि यहां बहुत कमीशन खाया जा रहा है। घोड़े में छः सौ युआन तथा पोटर में तीन सौ युआन, फिर भी सब यात्री किसी अनजाने भय से ग्रस्त हो पैसा निकाल कर दे रहे हैं। हमारे राजस्थानियों के 15 सदस्यीय दल में से पांच सवारी (देवकीजी परिवार व रविजी परिवार) दारचेन गेस्ट हाउस में आराम करेगी। हम दो पैदल जायेंगे। बाकी सभी ने 2100 युवान लगभग 21000 रुपये प्रति यात्री हमारे मार्गदर्शकों को दे दिये। नौ से दस बजे रात खाना हुआ। आज खाने में मात्र चावल पापड़ मिक्स सब्जी और अचार ही है। बिना गेहूं की रोटी हमें खाना अधूरा लगता है। भोजन के बाद सब सो गये।

तारीख 5, अगस्त 2012 रविवार मयूरभाई ने हमें रात में डेढ़ बजे जगाने का आश्वासन दिया था, मानसरोवर के नजारों के दर्शन करने के लिये।

''यहां रात्रि में देवी देवता स्नान के लिये आते हैं जो रोशनी के रूप में दिखाई देते हैं। हम सबको उनके दर्शन करने का प्रयास करना ही चाहिये। किस्मत में होंगे तो दर्शन हो जायेंगे।''

मुझे पता नहीं मयूर भाई स्वयं भी रात में उठे या नहीं पर हम सब यात्री स्वः प्रेरणा से ही रात एक बजे से दो बजे तक कड़कड़ाती ठंड में मानसरोवर के किनारे जा बैठे। मैंने ट्रेवलदोस्त की दी जाकिट पर भरोसा किया पर उसमें हमें ठंड लगी। बाद में केबी और मैं कोई दो सौ मीटर चल कर कमरों में आये और चार कंबल भी ले गये। आसमान पूरी तरह बादलों से ढका हुआ है और मेरे जैसे नास्तिक आदमी को जो विज्ञान से परे किसी चमत्कार को नहीं मानता, कुछ दिखाई देने की उम्मीद नहीं थी। कहीं कोई हल्का प्रकाश या चमकते तारे का प्रतिबिंब दिखाई दिया तो यात्रियों ने उसी को अपनी किस्मत मान हर–हर महादेव के जयघोष से उसका स्वागत किया। हम ढाई बजे लगभग अपने कमरों में आकर सो गये।

मैंने चुटुकला बनाया, 'दूसरे किनारे पर गेस्टहाउस में सो रहा कोई यात्री टॉर्च जलाकर पेशाब करने जा रहा था बस वही रोशनी दिखाई दी थी।'

मानसरोवर स्नान

दो घंटे बाद ही जाग हो गई। लोग जंगल की ओर जाने लगे। केबी और मैं हम दोनों ने थोड़ी दूर भरे प्राकृतिक गढ्ढे की ओर रूख किया। हमारे पास टार्च थी पर पूर्णिमा के बाद की चौथ के चांद के उजाले में हमें टार्च जलाने की जरूरत नहीं पड़ी। देशी गांव के तरीके से सब काम हो गया पर ठंडे पानी के कारण हाथ एक दम सुन्न पड़ गये। वापस आकर बिस्तरों में दुबके। एक घंटे बाद गर्म पानी की आवाज लगी और हमने ब्रश किया तथा मुंह धोया। आज पहाड़ी मौसम के स्वभाव के विपरीत अलसुबह ही तेज ठंडी हवायें चल रही है तथा बरसात भी आ रही है। हमें पुनः बिस्तर में दुबकना पड़ा। घंटाभर बाद ही चाय नाश्ता बन गया। आज नाश्ते में इडली दी गयी। नाश्ते के बाद पुनः सो गये। रात कोई एक घंटा मानसरोवर के किनारे बैठने से कईयों को सर्दी लग गई। मुझे भी कुछ अजीब सा महसूस हो रहा है। भलाई इसी में ही है कि अधिकांश समय लिहाफ की गर्मी लो।

प्रातः आठ बजे मौसम खुल गया। तेज धूप निकल आई और सर्दी एकदम गायब। पूर्व में यहां हमें दोपहर बारह बजे से एक बजे तक नहाने का आदेश हुआ था पर खुला मौसम देख यात्री स्वतः ही मानसरोवर की ओर बढ़ गये। मयूरभाई और पियूषभाई की बात किसी ने नहीं सुनी। हमारे गेस्ट हाउस के सामने झील उथली है किनारे पर मिट्टी कीचड़ है तथा रात आई लहरों से सारी वनस्पति कचरा इस किनारे पर आ लगा है। यहां नहाने की उपयुक्त जगह नहीं है। अनुशासन भंग होता देख दस बजे पियूषभाई ने हम से भी कह दिया,

'आप भी अपने हिसाब से नहा आओ। अब हमारी कोई सुन तो रहा ही नहीं।'

हम अपने वस्त्र लेकर मानसरोवर के किनारे आये पर कहां नहाया जाये तय नहीं कर पाये। हमारे गुजरात के साथियों ने टैक्सी वालों से बात की वे चार पांच किमी दूर नहला कर लायेंगे तीस युवान प्रति सवारी लेंगे। हमने भी वहां जाने का फैसला किया तभी मयूरभाई ने केबी सर को बताया कि इधर पश्चिमी ओर कुंड तथा गुफायें हैं, जहां ऋषि–मुनि तपस्या करते थे। उस तपोभूमि में स्नान का ज्यादा पुण्य मिलता है। हम हमारे लिये आये वाहनों को छोड़ पैदल दूसरी ओर बढ़ गये। कोई आध किमी चलने के बाद भी वैसा ही तट मिला और पुनः वापस आये। प्रदीपजी ने पुनः टैक्सी करके लाने का निश्चय कर लिया। इधर–उधर घूमने में हमारा बहुत समय व श्रम खर्च हुआ तथा आपस में तनाव बढ़ा। मयूर भाई को बहुत कोसा गया जिसकी बातों में आकर हम भटक रहे हैं। झालावाड़ वाले दम्पत्ति तथा केबी सर ने तो इसी किनारे स्नान शुरु कर दिया।

''इतने सारे यात्री भी तो नहा रहे हैं। मानसरोवर का जल सभी जगह उतना ही पवित्र है।''

हम बारह यात्री दो वाहनों से पांचेक किमी चल मानसरोवर के उत्तर पूर्वी किनारे पर गये। कैलाश ट्रेक्स वालों के दो कर्मचारी भी स्नान का सामान लिये लगातार हमारे साथ चल रहे थे। उन्होंने तुरत–फुरत ही कपड़े बदलने का तंबू लगा दिया। यहां यद्यपि धूप खिल रही थी और बाहर गर्मी भी महसूस हो रही थी फिर भी मानसरोवर के शीतल जल में दो मिनट से ज्यादा नहीं नहा पाये। स्नान के बाद पूजन–अर्चन और हवन किया गया। कई साथियों ने देखा–देखी तीन पत्थर जमा कर घर भी बनाये। पानी की ज्यादा से ज्यादा बोतलें मानसरोवर के जल से भरी। हमारे पास बहुत सारी हवन सामग्री तथा पर्याप्त सूखी समिधा थी। सभी को कुछ न कुछ हवन करने का अनुभव भी था। हमारे द्वारा अर्पित होम को अग्नि देव ने पूर्ण रूप से ग्रहण किया। हवन के बाद आरती की गई। हमारे ड्राइवर तथा गाइड हमारी पूरी पूजन प्रक्रिया को गौर से देखते रहे। उनके लिये शायद यह नई चीज हो। डेढ़ बजे लगभग हम वापस अपने गेस्टहाउस में लौटे।

गेस्टहाउस आते ही केबी सर से मुलाकात हुई। उन्हें कोई शिकायत सुबहा नहीं है बल्कि वे तो बहुत उत्साहित हैं। उन्होंने कहा,

''हमारी तो यहां एक घंटे तक बहुत अच्छी पूजा–अर्चना हवन और भजन हुये हैं। भंवरजी के कमरे में रह रहे गुजराती भाई ने तो पुरोहित मान मुझे ढोक दी तथा सौ रुपये दक्षिणा भी दी। मैंने सौ रुपये तो भंवरजी को दे दिये हैं। दान पुण्य कर देंगे। बस साक्षात भगवान की कृपा ही हो गई मानों।''

भगवान ने अपनी लीला रच केबी सर को हमारे से अलग कर, उन्हें और महत्वपूर्ण काम में लगा दिया। केबी सर नित्य बारां में मनिहारा महादेव मंदिर पर हवन में भाग लेते हैं। वहां की हवन की किताब की फोटोकॉपी निकलवा कर वे यात्रा में साथ लाये हैं। उस किताब के भजन हमने रास्ते में भी गाये थे। उसी पुस्तक से वे विधी विधान से सारा हवन व पूजन करवा प्रतिष्ठा बटोर पाये। वे अभी–अभी आकर लेटे हैं। वे मानसरोवर स्नान ध्यान से पूर्ण संतुष्ट हैं। ज्ञातव्य है काठमांडू के बाद से हमने अपने कमरों में कभी कुंडी व ताले नहीं लगाये हैं। सारा सामान बैग आदि फैले रहते हैं। कोई कभी भी आये–जाये, हमेशा दरवाजा खुला मिलेगा। इस यात्रा में हमारा कोई सामान भी चोरी नहीं हुआ।

बीमारी

यहां भोजनशाला में उपलब्ध गर्म बोतलबंद मौसम्मी रस पीकर मैं लेट गया। कुछ देर बाद ही प्रदीपजी देवकीजी से आकर कहने लगे, 'मैं और रविजी अभी काठमांडू निकल रहे हैं, आपकी तबियत भी ठीक नहीं है; आप लोग भी चलो।' मैं एकदम चौंका। यह अभी के अभी ही क्या हो गया? प्रदीपजी ने बताया कि उनकी पत्नी की तबियत बिगड़ गई है। हवन के दौरान उन्हें सर्दी लग गई। मैंने सत्रह नम्बर कमरे में लेटे मयूर भाई को ढूंढ वहां जाकर आवाज लगाई। वे बोले,

'क्या हुआ?'

मैंने कहा, 'बीमार।'

उन्होंने डांटा, 'कितनी बार समझाया, सर्दी से बचो, कम नहाओ, अब भुगतो।'

मुझे बहुत बुरा लगा। मैं उन्हें पूरा सुने बिना ही बाहर आ गया। मैंने प्रदीपजी को मयूर भाई के पास भेजा।

'मयूरभाई 17 नम्बर में हैं आप जाकर उनसे सलाह कर लो।'

मयूरभाई ने प्रदीपजी को आश्वासन और सांत्वना दी है। वापस लौटने की परेशानियां व खर्चे गिनाये तथा रसोई से हल्दी, अदरक आदि का काढ़ा बनवाकर पिलाने के लिये कहा।

यात्रा शर्तों के अनुसार निर्धारित मार्ग व समय के अतिरिक्त किसी भी दशा में वापस आने–जाने का सब खर्च यात्री का ही होगा। हमारे गाइड केवल हमारी व्यवस्था में सहयोग करेंगे और आवश्यक होगा तो एक आदमी साथ भेज देंगे जो हमें नेपाल की सीमा या अस्पताल तक छोड़ कर आ सके। हमारे वीजा सामूहिक बनवाये जाते हैं। सभी यात्री साथ ही वापस जाओ। यदि कोई यात्री अलग से जायेगा तो उसका चीनी सरकार का शुल्क प्रति यात्री 150 युआन है जो यात्री को ही देना होगा। इसे वीजा ब्रेकिंग चार्ज नाम दिया गया है। प्रदीपजी ने तुरंत ही अपने घोडों एवं पिठ्ठूओं की बुकिंग न करने के लिये पियूषभाई से बात की। पियूषभाई ने गोलमोल जवाब दिया।

''हां, देखता हूं आपके नाम का घोड़ा बुक हो गया होगा तो कैंसिल नहीं हो पायेगा। मैं कोशिश करता हूं।''

पियूषभाई के जवाब में उनकी बद्नियती साफ दिख रही थी। कुछ देर पहले ही किसी यात्री ने पूछा था कि घोड़े हो गये क्या तो पियूषभाई ने ही बताया था कि अभी तो चालीस घोड़े ही मिल रहे हैं। घोड़ों की बहुत कमी है। आगे जाकर पता लगा कि यहां घोड़े किस तरह होते हैं? उस प्रक्रिया ने तो इस जवाब को पूरा ही झूठा साबित कर दिया। प्रदीपभाई ने अपने 4200 युवान वापसी के लिये बहुत ज्यादा जोर डाला तो उसे रकम वापस देनी ही पड़ी।

दो बजे भोजन शुरु हुआ। चावल, खमण, सिवईयों की खीर, मोगरी व आलू की सूखी तथा नमकीन की तरी वाली सब्जी, रसगुल्ले अचार व सलाद। मेरे गले में कुछ उतर नहीं रहा है मानसरोवर स्नान के बाद बुखार सा लग रहा है। मोगरी व सलाद देख कर आश्चर्य हो रहा है। यहां तो कोई फल सब्जी कहीं नजर नहीं आती। वहां खड़े कर्मचारी से पूछ ही लेता हूं।

'क्या यहां मानसरोवर में सब्जी मंडी है जो ताजा मोगरी व सलाद मिल गया?'

कर्मचारी ने बताया कि नहीं ये सब तो वे काठमांडू से ही ले कर चले थे। मेरा आश्चर्य फिर भी बरकरार है, सात दिन में भी सब्जियां खराब नहीं हुई क्या?

आज दिन भर मयूर भाई एक अलग ही समस्या से परेशान रहे। एक सत्तर साल से ज्यादा का वृद्ध गुजराती यात्री परिक्रमा जाने की जिद कर रहा है। मयूरभाई को इसमें जोखिम लग रही है।

''ऊपर कुछ हो गया तो मेरे माथे पर तो कलंक लग जायेगा ना? समझा–समझा कर थक गया हूं। पहले पैदल जाने की जिद कर रहा था और अब कह रहा घोड़ा करवा दो।''

''आपको उसे गुजरात से ही नहीं लाना चाहिये था।'' मेरी यात्री के प्रति सहानूभूति थी।

''वहां थोड़े ही पता चलता है। इससे ज्यादा उमर के लोगों को भी मैं यात्रा करवा लाया हूं। वह तो यहां उसके चलने–फिरने, उठने–बैठने से हम पता लगाते हैं।''

''नहीं मानेगा तो आप क्या करोगे?''

''मनवाना तो पड़ेगा ही। उसके बेटे बहू से कहा है, वे समझा रहे है; नहीं तो कह देंगे, घोड़ा नहीं हो पाया। आप दारचेन में ही आराम करो और यहीं से सुबह शाम कैलास की पूजा करो।''

भोले शंकर के भक्तगण हाड़ौती के तीर्थ यात्री हम लोग दोपहर कमरे में बैठ खूब ताश खेले। यहां कई गुजराती भाईयों ने अपनी मानसरोवर पानी की बोतलें एमसील से बंद कर धूप में सुखा रखी हैं। कुछ देर बाद हमारे प्रदीपभाई भी न जाने कहां से एम सील ले आये।

'अच्छा तो शंकरजी ने पाने में इसलिये एमसील लिखी थी, हम समझे नहीं और साथ नहीं लाये।'

हमने भी अपनी मानसरोवर जल की बोतलें पैक की। इधर बैग जमाकर देने के आदेश भी आ गये हैं। जिन्हें परिक्रमा पर जाना है उनके बैग मेटाडोर में आगे जमेंगे। जिन्हें दारचेन रुकना है उनके बैग बाद में लिये जायेंगे। हमें तीन दिन बाद ही बैग वापस मिलेंगे। काश परिक्रमा पथ पर बड़े बैग हमारे साथ चलते तो हमें छोटे बैगों में कम सामान रखना पड़ता। हमें साथ में बहुत सारे सामान रखने

पड़े। बरसात व बर्फ आने की जोखिम मात्र एक प्रतिशत ही है पर उसकी अनदेखी जान ले सकती है। तैयारी तो पूरी रखनी होगी। रैनकोट, छाता, प्लास्टिक शीट, एक जोड़ी कपड़े, दवाइयां और खाने के सामान (टॉफियां, सूखे मेवे, नमकीन आदि) तथा गर्म व ठंडे पानी की बोतलें हमारे साथ रहेंगी। एक जोड़ी अतिरिक्त जूतों का भी आग्रह है पर बैग में उन्हें रखने की गुंजाइश नहीं है। इसके एवज में हम प्लास्टिक की बड़ी थैलियां लाये हैं। जूते मौजे गीले हो जावें तो थैली पैर में डालकर जूते पहन लो।

सायं चाय और रात में खाना लिया। प्रातः चार बजे उठने का फरमान निकला है। संटी और केबी के आग्रह पर हम रात में भी ताश खेले। आज हमारे इस संघ में कई यात्री बीमार हैं। गत दो दिनों में हमें अष्टपद यात्रा पर जाने की याद नहीं आई। हमारे संघ में से कोई नहीं गया शायद। हमारे पास आज सुबह समय था। प्रातः पांच बजे रवाना होकर 11 बजे तक वापस आने का पर ईश्वर ने हमें याद नहीं दिलाई। ट्रेवल दोस्त वाले तो क्यों याद दिलायेंगे। आठ किमी पैदल पहाड़ पर चढ़ना फिर उतरना कष्टसाध्य तो है ही। इस तरह हमारी अष्टपद तथा तीर्थापुरी की यात्रा रह गई। मैं कोटावाले ब्याई जी आदेश पूरा नहीं कर सका।

दारचेन

6, अगस्त 2012, सोमवार

प्रातः साढ़े चार बजे गर्म पानी, पांच बजे नाश्ता, और साथ ही दोपहर के खाने की थैली; छः बजे रवानगी। सारे वाहन एक साथ निकले। रास्ते में मौसम खुला होने के कारण पावन श्रृंग कैलाश के अलौकिक दर्शन होते रहे। आध घंटा रास्ते में सारी गाड़ियों में डीजल लेने में लगा। पक्की सड़क और समतल रास्ते पर चल दारचेन गेस्ट हाउस के परिसर में प्रवेश किया। यहां हमें आधा घंटा रुकना है। आवश्यक कार्यों के अलावा सभी यात्री फोन बूथों पर जुट गये। यहां अच्छा बाजार है। फोन की दर बिल्कुल वाजिब। मात्र तीन युवान प्रति मिनट। तिब्बती कला की एक दुकान पर मैंने याक के सींग की अंगूठी एक शेरपा के मार्फत् मांगी। दीनू के मित्र रामू वकील ने मेरे से उसके लिये आग्रह किया था पर यहां याक के सींग से कुछ नहीं बनता। अनिल चौधरी ने एक मुखी रुद्राक्ष मंगाया है पर कितने वाला यह नहीं बताया। मैंने कुछ नहीं लिया। बस सबको मानसरोवर का जल ही पिलायेंगे। यहां बहुत सारी पुस्तकों की एक दुकान दिखाई दी। मैंने प्रथम कक्षा में पढ़ाई जाने वाली तिब्बती भाषा की किताब मांगी पर यहां पाठ्य पुस्तकें नहीं है। यहां साहित्य है, धर्म है और सब तिब्बती या चीनी भाषा में। मुझे पक्का विश्वास हो गया है कि तिब्बती भाषा देवनागरी लिपी में लिखी जाती है। यह लिपि गुरुमुखी के बहुत नजदीक है। पचपन अक्षर और मात्रा का ज्ञान होने पर यहां लगे सूचना पट्ट पढ़े जा सकते हैं। यहां बाजार में फव्वारा स्नान के भी कई स्थान हैं। एक घर में मैं प्रवेश कर गया। एक सुंदर भद्र महिला दुकानदार ने ग्राहक का स्वागत किया। यहां अंग्रेजी में स्नान की दर बीस युवान लिखी है। मैंने उससे लौटते में स्नान करने का इशारा किया और आ गया। मेरी इच्छा नहाने की है पर समय मिले तब न? यहां पास की ही एक दुकान से मयूर भाई ने परिक्रमा जा रहे यात्रियों को सुंदर नक्काशीदार छड़ियां दिलवाई।

आधा घंटा बाद हमारा आगे का सफर शुरु हुआ। बसों से हम यमद्वार नामक मंदिर के सामने रुके। इस मंदिर में एक ओर से जाकर दूसरी ओर से बाहर निकल कर परिक्रमा करने का रिवाज है। हमने मस्तक झुका मंदिर में प्रवेश किया और परिक्रमा की। कई यात्री सात या ग्यारह तक परिक्रमा कर रहे थे। हम यम द्वार से ही लौट आये हैं अब हमें आगे क्या खतरा होगा? यहां से पुनः गाड़ियों में बैठ कोरा नामक जगह (घोड़ास्टैण्ड) गये। यहां तो मेला सा लगा है। बहुत सारे याक व घोड़े तथा पिठ्ठू खड़े हैं। हम सारे साथी यहां तक साथ हैं। अब हमारे बिछुड़ने की बेला आ रही है। पंद्रह में से हमारे सात साथी यहां रुकेंगे, हम दो पैदल तथा छः घोड़ों से आगे की यात्रा कैलाश पर्वत की परिक्रमा शुरु करेंगे। इस स्थान पर हमारे संघ की व्यवस्थायें सही नहीं है। हमें कई बार अलग–अलग जगह पंक्तिबद्ध किया गया। तिब्बती लेबर यूनियन के नेता नये नये कानून बनाते बिगाड़ते। हम छः यात्रियों को सिर्फ पोटर चाहिये। हमें अलग खड़ा किया गया। तीन पोटर आये और हम तीन यात्रियों को उनके सुपुर्द कर दिया गया। संयोग की बात मुझे युवा व मस्त लड़का पोटर के रूप में मिला। हम आगे बढ़ने लगे तो पुनः प्रतिवाद आ गया। पोटर यूनियन में आपस में गर्मागर्म बहस हुई और हमारे पोटर रद्ध कर दिये गये। हमें पुनः पंक्ति में खड़ा किया गया। मैं आगे ही आगे खड़ा था और संयोग वश केबी सर पंक्ति के अंत में। पहले सारे ही 85 यात्रियों के लिये पोटर चुने जायेंगे। वोट से या किसी की इच्छा से नहीं लाटरी से। फिर इसी लाटरी से 79 यात्रियों के लिये घोड़ो का चुनाव होगा। लाटरी प्रक्रिया के अन्तर्गत सारे पोटर के नाम लिखी पर्चियां हमारी महिला गाइड ने अपनी टोपी में डाल रखी है। एक दबंग ठेकेदार ने टोपी में हाथ डाल, हिला कर एक पर्ची निकाल मुझे दे दी। मैं नाम नहीं पढ़ पाया पर ठेकेदार चिल्लाया, ''डिक्की।'' एक काले से किशोर ने मेरा बैग अपने कंधे पर टांगा और मेरा हाथ पकड़कर यात्रा के लिये उद्धत हो गया। मैंने चिल्लाकर हमारी गाइड से पूछा, 'इसे बता तो दो कहां जाना है?' गाइड ने बताया कि इन्हें सब पहले से पता है। मैंने हमारे साथ आये शेरपा से मेरे पोटर का

नाम तीन चार बार पूछा पर मेरे समझ में नहीं आया। तब उसने मुझे समझाया कि वह कार में पीछे सामान रखने की डिक्की होती है न? वाह मुझे नाम समझ में आ गया और याद हो गया। मुझे हिदायत दी गई कि पोटर नाम वाली पर्ची यात्रा के दौरान अपनी जेब में संभाल कर रखूं।

पदयात्रा

तो यह हुई पोटर और घोड़े करने की प्रक्रिया। न सवारी को पोटर और न पोटर को सवारी चुनने की स्वतंत्रता। बस भगवान ने बना दी जोड़ी। मोलभाव भी नहीं। हम पूर्व में ही भुगतान कर चुके हैं और शायद पोटर्स को भी अग्रिम भुगतान करके ही लाया गया हो। मेरा हाथ पकड़ कर पोटर ने मुझे तुरंत ही रास्ते पर लगा दिया। मुझे अपने साथी कुंजबिहारीजी की चिंता थी। उनका भोजन मेरे बैग में रखा है। मेरे साथ खाने का अन्य सामान टॉफी, सूखे मेवे या नमकीन नहीं है। मैं धीरे–धीरे चला ताकि पीछे वाले साथी मुझ से आ मिले। हमारे दाईं ओर कैलाश पर्वत हैं। किसी ने बताया कि बाई ओर के पर्वत को गौरी पर्वत कहते हैं। गौरी पर्वत की ऊँची चोटियों पर भी बर्फ जमी हुई है। तीन–चार किमी पर मुझे कैलाश पर्वत की ओर हिरणों का झुंड दिखाई दिया। मैंने डिक्की को दिखाया तो वह हर्ष से बोला, मारीच, मारीच। वाह! तिब्बत में हिरण को मारीच कहते हैं। रामायण में मारीच मामा ने हिरण बन कर राम को भ्रमित किया था। एक शब्द ने ही मुझे आभास दिलाया कि तिब्बती संस्कृति भारत के कितने निकट है। चार किमी बाद हमारे संघ के तीन घुड़सवार दिखाई दिये तो मैंने उनसे कुंजबिहारीजी के बारे में जानकारी चाही। पता लगा वहां बहुत देर लग गई। वे पीछे ही पीछे थे। मैं रास्ते में मस्ती करता आया। एक घोड़े की पूंछ को सहलाया। एक याक की पीठ पर हाथ फेरा। मुस्कान की भाषा सब समझते हैं। घोड़े वाले भी मेरी हरकतों पर हंस देते। छः किमी बाद टेंट लगा स्थान आया जहां सभी पोटर कुछ खा पी रहे थे। यहां यात्री भी रुके हुये थे। मैंने डिक्की को रुक कर कुछ खा लेने का इशारा किया। वह कुछ देर बैठा भी फिर वही चलने की जिद। मुझे भूख सी महसूस हो रही थी। आठ किलोमीटर बाद आये अच्छे प्राकृतिक स्थान पर मैं रुक गया तथा मैंने पोटर की पीठ से अपना बैग खुलवाया। संघ ने खाना बांधा है, खा ही लिया जाये। मैं जानबूझ कर बहुत समय खर्च रहा था जिसका परिणाम भी निकला। केबी मेरे को देखे बिना आगे बढ़ रहे थे। मैंने जोर–जोर से तीन–चार बार उन्हें पुकारा तो वे सुन पाये। दोनों मित्र शीट बिछा कर बैठे फिर गिले शिकवे करने लगे।

'मैं तो लोगों से पूछता आ रहा हूं। आप तो सुपरफास्ट की तरह बढ़ रहे हो। इंतजार तो करना चाहिये था न? आपको पकड़ने की धुन में मैं तो आगे ही निकल गया।'

'मैं तो बहुत धीमें चल रहा हूं। आपका खाना मेरे बैग में नहीं होता तो लक्ष्य तक पहुंच ही चुका होता। यह मेरा पोटर बहुत जल्दी मचा रहा है। मैं तो वहीं रुक कर इंतजार करना चाह रहा था।

देरापुक

केबी सर को महिला पोटर मिली है जिसके साथ आठ नौ साल की बच्ची भी चल रही है। हमने अपना खाना खोला और ट्रेवलदोस्त को कोसा। आधा कटा सेवफल, एक छोटा बिस्किट का डिब्बा, एक कैडबरी चाकलेट, एक मोटी कड़क मैदा की पूरी, एक फ्रूटी। सब्जी अचार कुछ नहीं। अब पूरी को कैसे खायें? हमने अपने पोटर को पूरी व कुछ बिस्किट्स दे दिये। केबी सर की जेब से कुछ टॉफियां, बादाम, काजू, किशमिश व नमकीन पिस्ता मेरी जेब में ले लिये। आगे की यात्रा सुखद रही रास्ता आसान है और मौसम सुहाना। चार बजे से पहले हम देरापुक पहुंच गये। वहां हमारी ठहरने की व्यवस्था ढूंढ़ने में हमें समय लगा। हमारे शेरपा बाद में आये। पहले हमने एक बड़े तंबू में पलंग रोके। हमारे घोड़े से आने वाले साथियों के आने के बाद हमने तंबू बदला। महिलाओं ने बड़े तंबू में घुसते ही कह दिया कि इसमें तो बहुत बुरी बदबू आ रही है। दूसरा तंबू अच्छा रहा। हम सब पास पास रह पाये। इसमें पलंगों के बीच बने रास्ते से हम आराम से तंबू से बाहर निकल पा रहे हैं। हमारे तंबू में घुसते ही पूर्व में तंबू में बैठी एक युवा गुजराती महिला यात्री ने हमें जोर से आवाज लगा कर कहा,

'आप लोगों के पास कुछ खाने का हो तो दो, मुझे बहुत जोर से भूख लग रही है।'

कुंजबिहारीजी ने बिना विलंब किये उसे जेब से काजू, बादाम, पिस्ता, निकाल कर खिलाये। इस घटना से हमारा उस परिवार से परिचय हो गया। हेतल भरूंच गुजरात के व्यापारी अपने माता पिता एवं पत्नी के साथ यात्रा पर हैं। पत्नी शीतल साहसी, हंसमुख और वाचाल है। शीतल जी पैदल यात्रा करना चाहती थी पर परिवार के साथ रहने की भावना में वे भी घोड़े से ही आई है।

बारह किमी का यह रास्ता हल्के चढ़ाव–उतार वाला तथा आसान रास्ता है। इस पूरे रास्ते पर चार पहिया वाहन ट्रेक्टर, मेटाडोर तथा दुपहिया मोटरसाइकिलें लगातार आ जा रही है। यहां किसी प्रकार का कोई खतरा नहीं है। इस रास्ते पर कई जगह भारी निर्माण कार्य चल रहे हैं। जेसीबी मशीनें तथा ट्रक भी खड़े दिखाई दिये। हमारे संघ के अलावा कम से कम दो और संघ के यात्री साथ चल रहे हैं जिनमें भारत सरकार के पर्यटन विभाग की व्यवस्थाओं के अन्तर्गत आये यात्री भी है। दो–तीन यात्रियों से चर्चा हुई। उनका खर्च हमारे से भी ज्यादा हुआ है और वे पंद्रह दिन से पैदल चल रहे हैं।

उन्हें आधे रास्ते के पड़ाव पर चाय नाश्ता दिया गया था तथा अल्पकालीन विश्राम की भी व्यवस्था थी। यहां डेरापुक में उन्हें आर सी सी के पक्के गेस्टहाउस में रुकवाया गया है।

कैलाश चरण स्पर्श

हम सभी को थकान थी, पैदल यात्रियों को भी और घोड़े से आने वालों को भी। बिस्तर मिलते ही रजाइयों में दुबक गये। कुछ देर बाद संघ की ओर से बिस्किट व चाय आई। यहां से कुछ लोग चार किमी की चढ़ाई चढ़ कर चरण स्पर्श पर जा रहे हैं। रास्ता नहीं है बस पत्थरों बीच से रास्ता बनाते हुये जाना है। हमारे शेरपा साथ जा रहे हैं। हमारे तंबू में भी आवाज पड़ी। कुंजबिहारी जी व बृजेशजी तैयार हुये। मुझे भी जाना चाहिये था पर मैं आने वाले कल के रास्ते के प्रति चिंतित था। कल की यात्रा के लिये शक्ति बचा कर रखने के भाव ने मुझे रोक दिया। कुछ हो गया तो परिक्रमा रह जायेगी। मैं अपने शरीर में बहुत कमजोरी महसूस कर रहा था। ईश्वर की इच्छा के बिना कुछ नहीं होता। हमारे दो साथी संघ के अन्य लोगों के साथ एक कठिन यात्रा पर चले गये। इस स्थान से कैलाश पर्वत सर्वाधिक निकट पड़ता है फिर भी तीन घंटे का समय तो इसमें लगेगा ही। कुछ देर बाद बरसात शुरु हो गई और हमें हमारे साथियों की बहुत चिंता हुई। रैनकोट या छाता तो कोई ले ही नहीं गया था। डेढ़ घंटे बाद बृजेशजी लौटे। पूर्णतः भीगे हुये। ऊपरी कपड़े बरसात से एवं अंदरूनी पसीने से। वे लक्ष्य से पूर्व ही हार मानकर वापस आ गये। वे सूखे कपड़े पहन सरसों के तेल की मालिश कर, रजाई में दुबके। मैं तंबू से बार–बार बाहर जा चरण स्पर्श से लौटने वालों का इंतजार करता रहा। कुंजबिहारीजी को देखते ही मेरे मन में तसल्ली आई और मैंने उन्हें बांहों में भर लिया। वे कैलाश पर्वत के चरण स्पर्श करके बहुत आह्लादित हैं। उन्होंने बर्फ पर नंगे पैर जा पूजा अर्चना की। उनके साथ दो प्रौढ़ गुजराती तथा एक शेरपा जिसे हम एम बी कहते हैं ही पूर्ण लक्ष्य तक पहुंच पाये। हमारे तम्बू में से हैतल–शीतल दम्पत्ति भी गये थे जो दो किमी से ही वापस आ गये। मैनेजर पियूषभाई भी आधे से ही वापस लौट आये। बरसात आने के कारण उन्होंने और यात्रियों को भी रोका। औरों की अपेक्षा कुंजबिहारीजी द्वारा पैदल पहुंचना विशेष महत्व रखता था क्योंकि अन्य दोनों यात्री दारचेन से देरापुक घोड़े से आये थे और केबी सर पैदल। तंबू में भी उनका विशेष स्वागत हुआ। शीतलजी तो उनसे बहुत ही प्रभावित हुई। पति और सास ससुर के सामने ही कह दिया कि आपके जैसी शक्ति हमारे इन साहब में भी पैदा करो।

हम राजस्थान के कुल आठ यात्री यहां डेरापुक में हैं। भंवरसिंह जी झालावाड़ वालों को बहुत तेज बुखार आ रहा है। इसी तरह हेमराजजी गोयल की पत्नी बीमार है। बृजेशजी भी अब आगे यात्रा पर न जाकर वापस दारचेन लौटना चाह रहे हैं। मैंने बहुत प्रयास किया, प्रेरणा दी, पूर्व में बारां से आये यात्री शंकरजी और उनकी पत्नी की पैदल यात्रा का उदाहरण दिया पर मन के हारे हार है। बृजेशजी व सरिताजी तो परिक्रमा कर ही सकती है। बाकी लोग भी सुबह स्वास्थ्य देख कर निर्णय ले सकते हैं पर नहीं; सबने रात में ही तय कर लिया है, प्रातः यात्रा ऊपर की ओर नहीं नीचे की ओर करेंगे। मन को समझाने के लिये तर्क भी गढ़ लिये गये है।

'यहां डेरापुक तक आने से कैलाशपर्वत के महत्वपूर्ण तीन दिशाओं के दर्शन हो चुके हैं। शिवजी की परिक्रमा पूरी नहीं की जाती। स्थानीय तिब्बती भी पूरी परिक्रमा न कर रास्ते से वापस लौटते हैं। हमारी तो चाय पीने जाने में ही सांस फूल रही है। वहां 19600 फीट की ऊंचाई पर घोड़े वाले उतार पर हमें पैदल चलायेंगे तो हम कैसे चल पायेंगे? आदि आदि।'

कविता की पंक्ति है, 'परों से नहीं हौसलों से उड़ते हैं'। मैंने हौसला खोया और मेरा चरणस्पर्श जाना रह गया। यहां हमारे साथी इस मुकाम पर आकर घोड़े होते हुये भी परिक्रमा छोड़ रहे हैं। रात में ही उन्होंने हमें पद्‌यात्रा में काम आने वाला सामान देने की पेशकश की। हमारी तैयारी भी पूरी थी ही। मैंने मात्र एक थैली नमकीन तली हुई मूंग दाल की ली है। यहां हमारे शेरपाओं ने चाय के बाद सूप–पॉपकोर्न व रात में भोजन के रूप में खिचड़ी व अचार दिया। मैंने तो खा लिया पर हमारे कई साथियों को खाना गले से नीचे नहीं उतर रहा। हमने शेरपाओं से आज दिन में पैक खाने की शिकायत की तथा कल अचार या सब्जी देने का आग्रह किया। ज्ञातव्य है कि हमारे मार्गदर्शक मयूरभाई पटेल दारचेन में ही रुक गये हैं। चरणस्पर्श स्थल से चरणरज लाने का महात्म्य है। हमारा एक शेरपा एम बी बहुत सारी मिट्‌टी भरकर ला रहा है। वह यात्रियों को मिट्‌टी बेचेगा।

दारचेन से हमारे कर्मचारियों तथा भोजन व्यवस्था को दो भागों में बांटा जाता है। कुछ कर्मचारी दारचेन में रुकनेवालों की व्यवस्था के लिये रहते हैं। हमारे संघ के 102 में से 84 यात्री डेरापुक तक आये हैं तथा आगे मात्र 67 यात्री ही जा रहे हैं। फोन पर बात हो गई है घोड़ा स्टैण्ड पर वापस लौट रहे यात्रियों को लेने के लिये बस आ जायेगी। हमारे साथ आये सभी शेरपा, महिला गाइड व मैनेजर पियूषजी पैदल ही यात्रा कर रहे हैं। यहां तंबुओं में भी गदेला पलंग, तकिया, दो रजाईयां, समय पर गर्म पानी, चाय आदि सब सुविधायें उपलब्ध है। पर्दा लगाने के बाद सर्दी बिल्कुल नहीं लगती। बस सामान व छड़ियां रखने के लिये जगह नहीं है। थकान के कारण रात में सभी यात्रियों को अच्छी नींद आई।

दोलमां पास

7, अगस्त 2012, मंगलवार

दिनचर्या और दिनों की तरह ही शुरु हुई। चार बजे उठना, गर्म पानी से हाथ मुंह धोना, हाथ पैरों में सरसों का तेल तथा चेहरे पर मोटी परत वेसलीन की पोतना, बस हो गये तैयार। चाय ब्रेड का नाश्ता और गर्म तथा ठंडे पानी की बोतलें, दोपहर का भोजन बंधा हुआ साथ में। पिठ्ठू और घोड़े वाले साईस बहुत पहले ही आ अपनी सवारियों को ढूंढ रहे थे। उनकी तथा जानवरों की सोने व खाने पीने की व्यवस्था भी यहीं की गई होगी। सरिता बहिन के लिये उन्हें समझाना मुश्किल हो रहा था कि वे वापस नीचे जायेंगे और देरी से निकलेंगे। आज सफर कठिन है हमने निकलने में जल्दी की। साथियों से विदा ले हम साढ़े पांच बजे के करीब ही यात्रा पर निकल पड़े। प्रारम्भ से ही चढ़ाई शुरु हो गई और दस मिनट में ही हमें थकान आ गई। रास्ता कहीं खतरनाक नहीं है पर विरल आक्सीजन के कारण सांस बहुत फूलती है। आगे बढ़ने के लिये पैरों को भी ताकत लगानी ही पड़ती है। रास्ते में कई जगह रुक कर विश्राम किया और बढ़ते रहे। कोई आधी चढ़ाई पर केबी सर के पोटर की बेटी के नकसीर आ गया। पोटर ने टायलेट पेपर निकालकर कर उसकी नाक साफ की तथा उसे उल्टा लेटाया। मैं यह दृश्य देख घबरा गया। अभी तो हमें कम से कम दो हजार फुट और चढ़ना है, आगे क्या होगा? मैंने बच्ची के सिर पर मेरी बोतल से पानी डाला तथा उसे पानी पिलाया। मुझे अमरनाथ यात्रा में छोटे भाई रामू के नाक से खून निकलने की घटना याद आ गई। उस समय भी हम पानी पिलाने के अलावा कोई इलाज नहीं कर पाये थे और आज भी हमारे पास कोई इलाज नहीं है। खैर इन उपायों और कुछ देर आराम के बाद रक्त बंद हो गया और हम आगे बढ़े। रास्ते में एक वापस आता घोडेवाला आवाज लगा रहा था।

'दोलमा पास, दोलमा पास'

मैंने हाथ के इशारे से पूछा क्या लोगे? उसने कहा,

'फोर हंडरेड'

चलो इतनी अंग्रेजी तो जानते हैं। मुझे लगा था कि डोलमापास अगली दिखाई देने वाली पहाड़ी ही है। मैंने उसे जाने दिया। रास्ते में हमारे संघ की ही कई महिला यात्री पसरी पड़ी है कोई न कोई तो इस घोड़े का उपयोग कर ही लेगा। इस पूरी चढ़ाई में मेरी मनोविनोद की भावना तिरोहित रही। हमारे पोटर अत्यन्त निर्धन हैं, जबकि साईस रईस। मेरे पोटर डिक्की की पेंट फटी हुई है तथा जूते भी टूटे हुये से हैं। चार कुत्ते कल से ही हमारे साथ यात्रा कर रहे हैं। धीरे–धीरे पता लगा कि वे घोड़ेवालों के पालतू हैं। हमें एक यात्रा से ही बहुत सा पुण्य मिलेगा और ये कुत्ते, घोड़े, याक, पोटर, साईस तो कई परिक्रमायें कर चुके हैं। इनका मोक्ष तो तय है।

चढ़ाई पर आगे बढ़ते हुये यात्रा क्रमशः कठिन होती गई। चढ़ाई बढ़ी, थकान बढ़ी और आक्सीजन कम होती चली गई। केबी और मैं इस बात से कतई परेशान नहीं हुये। मैने अपने यात्रा अनुभवों का पूरा लाभ उठाया है। हमारे पास दिन भर पड़ा है। शुरु में हम ओम् नमः शिवाय या जय भोले के नारे लगा रहे थे अब तो हमारा मुंह ही नहीं खुल रहा था। केबी सर अत्यन्त धीमे चल रहे हैं और मैं तेज चल कर थकान आने पर रुक रहा हूं। तीस सैकेन्ड से एक मिनट तक रुक तेज गति से सांस ले थकान मिटाना और पुनः आगे बढ़ना। इस तरह हमारे फेंफड़े कम आक्सीजन में भी काम करने के अनूकूल हो जाते हैं। मैंने केबी सर को मेरी तरह चलने की सलाह दी जो उन्होंने नहीं मानी। केबी सर ने मुझे बिना रुके धीमी गति से चलने की सलाह दी जो मैंने नहीं मानी। हम लगभग साथ ही रहे। मेरा पोटर अवश्य आगे–आगे भागता रहा और मैं पूरे रास्ते उस पर साथ चलने के लिये खीजता रहा। उनकी मंशा जल्दी से जल्दी यात्रा पूरी कराने की होती है। मेरे कदम क्रमशः कम होते गये और डोलमा पास की अंतिम चढ़ाई पर तो मैं पांच–पांच कदम बाद आराम करते हुये चढ़ा। हमें कहा गया था कि यात्रियों को आक्सीजन सुविधा उपलब्ध रहेगी। यहां हमारे साथ कोई नहीं है अगर किसी को कुछ हो जाता तो मुझे नहीं लगता हमारे शेरपा कहीं से आ हमारी मदद करते। डोलमा पास के करीब ही एक याक जिसकी पीछ पर सामान लदा था अपने मालिक से नाराज हो गया। सारे यात्री भयभीत हो गये। मैं मात्र दस फीट दूर ही एक चट्टान पर बैठा हुआ था। याक मेरी तरफ बढ़ा तो मैंने जोर से अपनी छड़ी फटकारी। पूर्व में किताबों मे पढ़ा था कि याक अपनी मर्जी का मालिक होता है। उसे डंडे से नहीं हांका जा सकता। यहां गनीमत यह रही कि यह याक हमारी छड़ियों से डरता रहा और कोई यात्री चोटिल नहीं हुआ। यहां सारे ही पथिक (यात्री पोटर) छड़ी लेकर ही चलते हैं। याक को इतना करीब से इस आवेश में देख मेरे मन में विचार कौंधा, निश्चय ही शंकर भगवान का वाहन नंदी याक ही होगा। बैल तो इस वातावरण में रह ही नहीं सकते।

अंग्रेजी ने तिब्बती से सारे द को ड बना दिया। यह 19600 फुट ऊंचा ला अर्थात् दर्रा दोल माता को समर्पित है। दोल मां, मां पार्वती का ही नाम है। इस दर्रा के सबसे ऊंचे स्थान पर मंदिर बना हुआ है जिसमें लाखों पारंपरिक चटक रंगो की झंडियां बांधी गई है। कई स्थानों पर कपड़े के तिब्बती भाषा में मंत्र, श्लोक या प्रार्थना छपे तथा घोड़े के चित्र बने हुये इन झंडों का पहाड़ सा ढेर लगा हुआ है। यहां मंदिर में कोई भी दर्शन करने नहीं जा रहा था हम भी नहीं गये। बस बैठे बैठे ही प्रणाम कर

लिया। तिब्बत में भी शिव परिवार के प्रति अगाध श्रद्धा है। हो भी क्यों न? यहां भगवान शिव का धाम जो है। दारचेन से देरापुक की यात्रा के बीच हमें एक तिब्बती परिवार दंडवत उल्टी परिक्रमा करते हुये मिला था।

कहा गया था कि डोलमा पास पर ज्यादा नहीं रुकना चाहिये पर हमें यहां आराम करने में कोई परेशानी नहीं हुई। आगे अभी अठारह किमी रास्ता और है इसलिये अनावश्यक हम नहीं बैठे। यात्रा का सर्वाधिक कठिन मार्ग सकुशल पार कर लेने पर हमने भगवान शिव का आभार माना। अभी साढ़े नौ बजे हैं। हमने चार घंटे लगभग में यह चार किलोमीटर की चढ़ाई पूरी कर ली है। केबी सर की महिला पोटर की यहां हालत बहुत खराब हो रही है। उसने रास्ते में बैग भी बच्ची को दे दिया था। हमारे पास इशारों के अलावा कोई भाषा नहीं है। उसकी लाल आंखें देख मुझे लगा कि उसे तेज बुखार है। मैंने उसे अपनी जेब में से बुखार उतारने की गोली काल्पोल व पानी की बोतल दी। उसने आभार माना और समझाया कि उसके पास पानी है जिससे वह गोली खा लेगी।

गौरीकुंड

डोलमा पास के बाद तीव्र व खतरनाक उतार है, जैसा अमरनाथ यात्रा से लौटते समय संगम घाटी में आता है। नीचे झांकते ही झांई आती है। पगडंडी बस दो फुट जितनी। जरा सी चूक हजार पांच सौ फुट नीचे गिराकर इस शरीर से आत्मा को बाहर निकलने के लिये मजबूर कर सकती है। कई जगह मेरा दिल कांप गया। मुझे और अधिकांश यात्रियों को यहां पोटर हाथ पकड़–पकड़ कर नीचे उतार रहे हैं। केबी सर के पास तो यह सुविधा भी नहीं है। हम भारतीय संस्कार वालों को किसी युवा महिला द्वारा हाथ पकड़ा जाना अच्छा नहीं लगता। फिर उनकी पोटर बीमार है और वह स्वयं एक हाथ में छड़ी तथा दूसरे हाथ में बेटी का हाथ थामें चल रही थी। यहां पोटर और घोड़ा चालकों में चौथाई करीब महिलायें व किशोर बच्चियां भी हैं। कई महिलाओं के साथ उनके छोटे बच्चे चल रहे हैं। बच्चों को इस कठिन यात्रा पर साथ लाना निश्चय ही उनकी कोई मजबूरी होगी। उतार और उतार। बहुत उतरने के बाद दाईं ओर तीन चमकदार पानी के गढ्ढे यात्रियों का ध्यान खींचते हैं। तीनों में पानी का रंग अलग–अलग है। सफेद, नीला तथा गहरा नीला। मेरा पोटर नाराज है और आगे चल रहा है। केबी सर भी आगे चल रहे हैं। अचानक ही हमारे संघ की एक प्रौढ़ गुजराती महिला ने मुझे तीन चार आवाज लगा कर रोका।

'आपको गौरीकुंड का जल नहीं लेना है क्या?' उसने रुकते ही प्रश्न किया।

'लेना है।'

'तो आप तो आगे जा रहे हो। गौरीकुंड तो यह रहा।''

ओह प्रभो! मुझे लगा साक्षात देवी पार्वती ने ही मुझे आगाह किया है। गौरीकुंड के जल के लिये हम कितने उतावले थे। बोतल का इंतजाम करके लाये थे। हमारे दारचेन में रुके साथियों ने मुझे कितनी बार याद दिलाया था। यहां मैं भूल कर आगे जा रहा था। मैंने कुछ दौड़कर केबी जी को आवाज लगाई। वे पास आये तो उन्हें मेरे पिठ्ठू को वापस बुला लाने के लिये भेजा। संयोग की बात थी कि उस समय मेरे जाकिट की जेब में पेयजल की लगभग खाली हो चुकी बोतल रखी हुई थी। उस भद्र महिला का पोटर वहां बैठा हुआ था। अपना पोटर आयेगा तो कौन सा मुफ्त में काम करेगा। मैंने उस पोटर को ही जल लाने के लिये इशारा किया। उसने हथेली पर बीस युवान का इशारा किया। मैंने जेब से दस युवान का नोट निकाल कर उसे दिखाया। वह नोट लेने के लिये झपटा तो मैंने उसकी ओर बोतल बढ़ा दी। पानी लाओ और पैसे लो। थोड़ी देर में ही पीछे के एक ओर यात्री ने उसे बोतल दे दी। वह पोटर बंदर की तरह कूदते हुये कोई सौ फुट नीचे बिना रास्ते बीच वाले कुंड तक गया और दस मिनट में ही तीनों बोतल भरकर ले आया। तीस युवान भारतीय मुद्रा में 275 रुपये के बराबर उसे अतिरिक्त कमाई हो गई। इसी बीच मेरी महिला से बात हुई। आप गुजरात के किसी गांव में अध्यापिका थी और कुछ महिने पहले ही रिटायर्ड हुई हैं। मैंने भी अपना परिचय दिया और गौरी कुंड जल की याद दिलाने के लिये आभार प्रदर्शित किया। मैं पानी की बोतल हाथ में लेकर आगे बढ़ा तो सामने विपरीत दिशा से उल्टी परिक्रमा करते आ रहे पांच यात्रियों के तिब्बती भक्तों के जत्थे में से एक प्रौढ़ महिला ने मुंह पर ओक बनाकर मुझसे पीने का पानी मांगा। मैं असमंजस में पड़ गया। यह गौरी कुंड का पानी हमारे संघ के अनुसार पुरुषों को नहीं पीना है। यदि इन पांचों को पानी पिलाना पड़ गया तो दुबारा दस युवान देने पड़ेंगे। खैर पानी पिलाना हर इंसान का धर्म है। मैंने उन्हें इशारे से समझाया कि यह सामने वाले गौरीकुंड का पानी है। महिला ने फिर भी मेरे सामने अपने झोले में से सुंदर सी कांच की प्याली ला कर पानी मांगा। मैंने उसकी प्याली में पानी भर दिया जिसे पीकर महिला तृप्त हुई और सारे दल ने हाथ उठाकर मुझे आशीष दी। मुझे इंटरनेट से पता लगा है कि बॉन धर्म मानने वाले इस पर्वत की उल्टी परिक्रमा करते हैं।

आगे बढ़ा तो केबी सर मेरे पोटर के साथ आ रहे थे। केबी सर पोटर से बहुत नाराज थे। बड़ी मुश्किल से रुका और पानी लाने के लिये मना कर दिया। ज्यादा जोर डाला तो जमीन पर 500 लिख दिया।

'इसने तो बहुत नाटक किये अपना गांव होता तो दो–चार चांटे खाता मेरे हाथ से।'

खैर अब पानी आ ही गया था। हमने अपनी मिल्टन की केटली में जो इस काम के लिये ही हम साथ लाये थे उस पानी को भरा। मैंने केबी सर से आशंका जताई, 'हमें कैसे याद रहेगा कि यही केटली गौरी कुंड जल की है। हमारे पास अभी दो केटलियां हैं और राजस्थान दल के पास पूरी पंद्रह। केबी सर ने तुरंत ही केटली को जोर से पत्थर पर मारा। अब निशान बन गया है, मोचा पड़ी केटली गौरी कुंड जल की। वाह! क्या तुरत बुद्धी दी है भगवान ने केबी सर को।

खतरनाक उतार लगभग खत्म होने पर एक झरने के पास हम अपनी शीट बिछा कर बैठ गये। देखते हैं आज कैलाश ट्रैक्स ने हमारे दोपहर के भोजन में क्या बांधा है? खुश होने वाली कोई बात नहीं थी। आज भी वही ढाक के तीन पात। एक सादा पुड़ी है पर आज पोटर को नहीं दूंगा। बहुत मेहनत हो गई है, शरीर को अनाज की भी जरूरत होती है। मैंने पुड़ी को फ्रूटी की चुस्कियों के साथ निगला। आधा डिब्बा बिस्कुट डिक्की पोटर को देकर उसे मनाने का प्रयास किया। कुछ ओर आगे चलने पर चट्टी जैसा नजर आया। एक पक्का भवन तथा चार–पांच तंबू। यहां पोटर व घोड़े वाले खाना खा रहे हैं। मेरे पोटर ने तो कुछ नहीं लिया, हां केबी की पोटर के हाथ में एक बड़ा डिब्बा था जिसमें भात तथा चटनी आदि थी। हमने कुछ आगे रुक उसके आने का इंतजार किया पर इंतजार करना मेरे पोटर व केबी दोनों को ही रास नहीं आ रहा था। मुझे मौसम कुछ आशंकित कर रहा था। ऐसे समय में बैग हमारे पास होना ही चाहिये। मेरा पोटर बहुत जल्दी लगा रहा था बस हमारा झगड़ा ही नहीं हुआ। आखिर हम बिना महिला पोटर के आये ही आगे बढ़े पर मुझे लगातार शंका बनी रही कि कहीं वह हमें नहीं ढूंढ रही हो। दो तीन किमी बाद जब मां बेटी आती दिखाई दी तो तसल्ली मिली। समतल रास्ते की एक चट्टान पर हिन्दी में गैरुयें पक्के रंग से एक राजनैतिक नारा लिखा दिखाई दिया।

'भोले की कसम, कैलाश वापस लाना है।'

मेरे मन में भी यह पीड़ा है, टीस है। मैं नारा लिखने की हिम्मत करने वाले वीर को बधाई देना चाहता हूं। चीनी अधिकारी शायद इस नारे का मतलब न समझें हों वरना क्या इसे लिखा रहने देते?

उतार खत्म होते ही यहां भी निर्माण वाहन दिखाई दिये। नदी के पार बड़े छः पहिया ट्रक तथा जेसीबी मशीने खड़ी है। थोड़ा सा भाग छोड़ दे तो पूरे रास्ते में जीप आ जा सकती है। किसी ने मुझे जानकारी दी कि पूरी परिक्रमा मोटर साइकिल से हो सकती है ऐसा रास्ता बना हुआ है। असंभव तो नहीं है पर मैं पुष्टि भी कहां करता। रास्ते में केबी सर ने मुझे कैलाश की चोटी पर पूरे शिव परिवार की आकृतियों के दर्शन करवाये। भगवान शिव, मां पार्वती, नंदी, गणेशजी और कार्तिकेय जी, शेषनाग और चंद्रमा। हमने कुछ रुक हाथ जोड़ शिव परिवार को प्रणाम किया। उतार पर मेरी चुहलबाजी वापस शुरु हो गई। घोड़ेवाले तिब्बती राग छेड़ते और मैं उस राग को मिला कर हिंदी गीत या भजन गाता। हंसी के फव्वारे छूटते। यहां के लोग भी हिन्दी फिल्मों एवं हिन्दी संगीत के प्रेमी हैं। मैंने कई 'बार आवारा हूं, आसमान का तारा हूं' गीत गाया तो सब ने ध्यान से सुना। इसी तरह पूरे रास्ते मैं कुत्तों की पूंछ पकड़ने का प्रयास करता रहा और कुत्ते मुझे देख भागते रहे। देखूं तो सही यहां के कुत्ते कितने खतरनाक हैं? मैं मात्र एक बार कुत्ते की पूंछ पर हाथ फेरने में सफल हो पाया।

झुथुलपुक

लगातार चल ढाई बजे दोपहर हम हमारे आज के पड़ाव स्थल झुथुलपुक पहुंचे। हमारे से पूर्व यहां हमारे संघ के पंद्रह बीस घुड़सवार यात्री पहुंच, बाहर मिट्टी में बैठे व्यवस्थापकों के आने का इंतजार कर रहे थे। एक नवनिर्मित बिना किवाड़ों के मकान के दरवाजे पर बैठे किसी यात्री की हिम्मत कमरे में घुसने की नहीं हुई थी। मैंने जाते ही कमरे में अपनी प्लास्टिक शीट बिछाई तथा केबी और हम दोनों अपने बैगों का तकिया लगा, जूते मौजे तथा जाकिटें खोलकर इतने आराम से लेटे कि हमें नींद ही आ गई। 22 किलोमीटर का सफर कर आने के बाद सबकी हालत खराब थी। यहां कोई व्यवस्था न देख सभी यात्री पियूषभाई पर नाराज हो रहे थे। हमें देख सारे ही यात्री कमरे में आ जमे। हमारे शेरपा कोई घंटाभर बाद आये। हमारे सामान याक पर आते हैं। याक अपेक्षाकृत धीमें चलते हैं तथा सामान लादने में समय लगने के कारण वे देरी से प्रस्थान कर पाते हैं। याक से सामान आने के बाद हमारे तंबू लगना शुरु हुये। यहां शेरपाओं की तंबू लगाने की कला भी हमें आश्चर्य चकित कर रही है। ये लोग सभी काम में माहिर हैं। तंबू लगते गये और यात्री जल्दी जल्दी उनमें जगह रोकते गये। हम दोनों तसल्ली वाले बैठे रहे।

'अपने आप बुला कर कहेगा कि आप इसमें रुको, क्यों भागादौड़ी करें?'

यहां व्यवस्था बनने में समय लगा। कई बार यात्रियों को इधर उधर भेजा गया। एक महिला आग बबूला हो उठी।

'मुझे चार बार तंबू से भगा दिया है। पहले पैसा दिया है फिर भी धक्के खा रहे हैं।'

इस यात्रा में पहली बार किसी शेरपा के मुंह से कड़ुआ जवाब सुनने को मिला।

'हमें थोड़े ही दिया है पैसा, जिसे दिया हो उससे बात करो।'

अब विवाद थमना ही था। एक ओर अप्रिय प्रसंग आया। हम कमरे के अंदर अधिकारपूर्वक लेटे हुये थे। मकान मालिक आया और रोब से बोला, 'बुकिंग?' सबसे पहले मैंने जवाब दिया, 'नो।'

इससे ज्यादा अंग्रेजी वह भी नहीं जानता था और हम भी नहीं। उसने हमें हाथ के इशारे से बाहर का रास्ता दिखाया और हमने हाथ के इशारे से ही तंबू लगने तक की मोहलत मांग ली। हिला कोई नहीं। बाद में हमारे पास प्रस्ताव आया कि कमरे में सोने के प्रति यात्री 30 युआन लगेंगे। कुछ यात्री बेहतर जगह मान पैसे खर्च कर रुके भी पर हम क्यों पैसे दें? बिस्तर, टायलेट, पानी, बिजली कुछ भी तो नही है उसमें। आखिर में हम एक तंबू में पहुंचे ही। लेटते ही मोटे छींटे वाली बरसात हुई। सारे तंबू जल्दबाजी में बिना खाई खोदे व ढाल का ध्यान रखे लगाये गये हैं। बरसात के छींटे टेंट के कपड़े पर पड़ रहे हैं तो हमारे ऊपर फुहारें सी आ रही है। तेज पानी में तो नीचे से भी पानी आयेगा और बिस्तर गीले हो जायेंगे। यहां जमीन पूर्व में ही गीली है क्योंकि दिन में कभी भी पानी आ जाता है। हमें नमी से बचाने के लिये पहले जमीन पर प्लास्टिक बिछाई गई है उसके ऊपर दो बाई छः फुट के छोटे छोटे मात्र एक इंच मोटे गदेले बिछाये गये हैं। इस तंबू में असुविधा रहेगी। हमने शेरपाओं से कहा और उन्होंने मात्र दो बिस्तर वाला दोहरे ढकान वाला वाटरप्रुफ सुन्दर सा तंबू हमारे को दे दिया। इस तंबू में ढाल भी सिरहाने के अनूकूल है। इस स्थान को पाकर हमें प्रसन्नता है। वाह रे! भोलेनाथ की कृपा!!

गर्म पानी, चाय बिस्कुट, सूप पोपकोर्न, अंत में दाल चावल व पापड़ और पेयजल की बोतल। सभी कुछ तंबुओं में ही लाकर दिया गया। आज हमें ओढ़ना (रजाई कंबल) नहीं मिला बल्कि स्लिपिंग सूट दिये गये हैं। मोटी जाकिट पहने ही सूट में घुस गये और तंबू बंद कर लिया, धूप खिली तो गर्मी लगने लगी। बाद में तंबू का एक पर्दा ऊंचा करके सोये। मैंने सिर ढकने के लिये अपने तौलिये का भी प्रयोग किया। रात को एकाएक सर्दी बहुत बढ़ गई। मुझे झुरझुरी सी हुई तथा नाक बहने लगी। बरसात ज्यादा देर न आने से विशेष समस्या नहीं हुई। यहां पेशाब करने जाने के लिये हमें अपना छाता भी काम में लेना पड़ा। रात में नींद अच्छी आयी और मुझे सपने भी आये।

जोगड़े

8 अगस्त 2012, बुधवार

प्रातः वही गर्म पानी और चाय ब्रेड का नाश्ता। हमारे कुलियों व घोड़ेवालों ने भी यहीं नाश्ता किया है। छः बजे यात्रा शुरु हो गई। आज मात्र छः किमी ही चलना है। रास्ता इतना आसान भी नहीं निकला। चार किमी बाद एक स्थान पर पहाड़ टूटा हुआ था और यात्रियों को पोटर का हाथ थामना पड़ा। घोड़ेवालों ने भी सवारियों को पैदल चलाया। बड़े–बड़े पत्थरों के बीच ढलवां पगडंडी और बाईं ओर दो सौ फुट गहरी खाई। इस पूरे रास्ते कैलाश पर्वत नहीं दिखाई दिया पर मौसम साफ होने पर सामने गुरैल मान्धाता पर्वत की बर्फीली चोटियों का नजारा देखने को मिला। हम हमारी पद्यात्रा की अंतिम मंजिल 'जोगड़े' नामक स्थान पर नौ बजे पहुंच गये। हमारे संघ का एक शेरपा यहां हमें मार्गदर्शन के लिये मिल गया। उसके आदेशानुसार हमने हमारे पोटर से अपने बैग लिये तथा स्वैच्छा से उन्हें बीस–बीस युआन इनाम के देकर विदा किया। मेरे मन में सवाल रहा, यहां कहीं बस्ती नजर नहीं आई, अब ये लोग कहां जायेंगे। भाषा की समस्या न होती तो मैं जानकारी लेता। कुछ ही देर में हमारी सब सवारियां तथा बसें आ गई। हम सब बसों में बैठ कर दस बजे दारचिन के गेस्टहाउस में पहुंच गये। हमारी 57 किलोमीटर की कैलाश परिक्रमा सम्पन्न हुई। 17 किमी बस से और 40 किमी पैदल। साथियों ने सम्मानपूर्वक हमारा स्वागत किया। पूरे संघ में सर्वश्रेष्ठ यात्रा रही भाई कुंजबिहारीजी नागर की। दूसरे नम्बर पर मेरे सहित और यात्री भी हो सकते हैं। स्वास्थ्य व मौसम सब सही रहा, भगवान भोलेनाथ की कृपा है, इस पर हमें अभिमान नहीं करना चाहिये। हम तुरंत ही पास के बूथ पर फोन करने के लिये लाइन में लग गये। मैंने घर छोटे भाई दीनू से बात कर हमारी कुशलक्षेम बताई। बारां में छोटी बहू रिंकी को अस्पताल में भर्ती करवाया गया है पर कोई खास बात नहीं है।

बस अड्डे के पास ही स्थित इस तिब्बत सरकार के गेस्ट हाउस में अटैच लेटबाथ वाले बहुत अच्छे कमरे हैं। कमरों की खिड़कियों से साफ मौसम में कैलाश के नयनाभिराम दर्शन होते हैं। गेस्टहाउस के कमरे सुबह आठ बजे ही खाली कर दिये गये हैं अतः हम कमरों को नहीं देख पाये। यहां मुख्य दरवाजे के बरामदे में गर्मागर्म खाना लगाया गया है। आज खाने में विविधता है तथा स्वाद है। काठमांडू के बाद सर्वश्रेष्ठ खाना। सभी ने भरपेट भोजन किया है। हमारी कैलाश मानसरोवर यात्रा पूरी हो गई है। न मंदिर, न मूर्ती, न पंडित, न भिखमंगे, न बंदर, न दान–धर्म, न आरती, न सत्संग और न मक्खी मच्छर। वाह! क्या यात्रा है?

हमारे झालावाड़वाले साथी भंवरसिंह जी बहुत देर से मयूरभाई में जोर–जोर से गालियां निकाल रहे हैं। हमें भी भंवरसिंह जी के साथ सहानूभुति है। उन्हें डेरापुक में रात को बुखार हो गया था तथा सुबह भी बुखार नहीं उतरा तो उन्हें परिक्रमा छोड़ वापस नीचे दारचेन आने का निर्णय करना पड़ा। डेरापुक में उनका घोड़ा नहीं आया और उन्हें बुखार की हालत में पैदल आना पड़ा। दूसरे घुड़सवार यात्रियों ने अपना घोड़ा उन्हें देना चाहा तो घोड़ेवालों ने नहीं बैठने दिया। उनकी पत्नी दूसरे घोड़े पर

थी, उस घोड़े वाले ने भी पत्नी के स्थान पर बीमार पति को बिठाने से मना कर दिया। घोड़ेवालों की मानवता कहां चली गई? भंवरसिंहजी शराबी की तरह तंगे खाते हुये किसी तरह 12 किमी चल दारचेन पहुंचे। यहां उन्होंने मयूरभाई आदि लोगों को जब यह घटना बताई तो उन्होंने मात्र पुलिस में रिपोर्ट लिखवाने का सुझाव दिया। कोई उनके साथ गया नहीं।

'यहां भाई हमारी भाषा और फरियाद कौन सुनेगा। आप लोग इतना–इतना कमीशन खाते हो आपकी कुछ जवाबदारी बनती है। भारत सरकार के पर्यटन विभाग ने अपने यात्रियों को 1460 युवान में घोड़ा और पिठ्ठू उपलब्ध करवाया। इसी दारचेन गेस्टहाउस में रुक रहे दूसरे संघ वालों से 1750 युवान लिये गये हैं और हमारे से 2100। घोड़ेवालों को 900 तथा पिठ्ठू को 300 युवान दिये गये हैं। मेरे सहित कई यात्रियों ने पूछ लिया है। मयूर भाई चौट्टा, है लुटेरा है। इसे तो मैं झालावाड़ अदालत में खड़ा करुंगा।'

भंवरसिंहजी का गुस्सा हम बहुत मुश्किल से शांत करा पाये। इस बारे में हमारे साथियों ने अपने परम मित्र मयूरभाई से बात की। मयूरभाई ने समझाया,

'आपके भंवरसिंहजी उनकी पत्नी को ढूंढने के लिये दो–तीन बार आगे–पीछे गये तो घोड़ेवाला उन्हें छोड़ कर चला गया। हमने पहले ही कह दिया था यहां चीन में हमारे हाथ में कुछ नहीं रहता है। पुलिस में रिपोर्ट कराने जाते न? मैंने तो कह दिया था। यहां घोड़े और पोटर की दरें तय करने में हमारा कोई हाथ नहीं होता है। यह काम शेरपा व गाइड करते हैं। हम तो कोई कमीशन नहीं लेते। वे लेते हों तो मेरी कोई जवाबदारी नहीं है।'

पूर्व में ही मैं लिख चुका हूं कि घोड़ों की कमी बता कर ऐसा वातावरण बनाने का काम मयूरभाई करते हैं। पैसों की वसूली उनके मैनेजर पियूषभाई तथा कैलाश ट्रेक्स के हमारे शेरपा ताशी ने की थी।

न्यू डोम्बा

हमारी वापसी यात्रा ग्यारह बजे से पूर्व ही शुरु हो गई। मानसरोवर के किनारे पर जहां हम जाते समय सबसे पहले रुके थे, आने पर हमारी मानसरोवर तथा कैलाश की परिक्रमा पूरी हो गई। हम मानसरोवर के दाई ओर से गये थे बाईं ओर से लौटे हैं। वही राक्षस ताल के किनारे आगे बढ़ते हुये हम पर्यांग पहुंचे। रास्ते में देवकीजी की तबियत खराब रही और हम सब चिंतित रहे। हमारे संघ में ग्लूकोमीटर भी साथ रखा जाता है। प्रदीपजी ने मीटर से देवकीजी की शूगर नापी है जो मामूली बढ़ी हुई है। देवकीजी की पीली आंखों को देख साथियों को उनके पीलिया होने का शक हो रहा है। इसकी जांच तो काठमांडू में ही हो पायेगी। आज बेटा संटी बहुत भावुक हो आंसू बहाने लगा। सभी ने उसे सात्वना दी। भंवरसिंहजी का बुखार भी नहीं जा रहा है। दल की तीन महिलायें भी बीमार हैं।

पर्यांग में हम आध घंटा रुके। यहां हमें बहुत गर्मी महसूस हुई। सड़क के किनारे शीट बिछा कर महिलाओं को बिठाया। ताश भी निकाली पर खेल नहीं पाये। शायद गाड़ी में कुछ समस्या है। वाइपर बार बार उलझ का रुक जाता है। हमारी बस में दरवाजा बंद होने में भी कुछ तकनीकी खराबी आ रही है। आगे मुख्य सड़क से पांचेक किमी अंदर जाकर न्यू डोम्बा नामक कस्बे में पहुंचे। आज रात हमें यहीं गेस्ट हाउस में रुकना है। हमारे इस गेस्टहाउस का नाम नम्लहा मोनेस्टरी होटल है। यह तिब्बती निर्माण और चित्रकारी से सजा बना फाइव स्टार होटल जैसा है। हमें आठ नम्बर कमरा दिया गया जो पहली मंजिल पर है। इसमें तीन डबल बेड तथा तीन सिंगल बेड हैं। कमरे में बिजली टी.वी भी है। गदेले दस दस इंची मोटे साफ व एकदम नरम हैं। रजाई तथा कंबल भी बहुत अच्छे हैं। बस टायलेट व नाली नहीं है। इस कमरे में देवकी परिवार व झालावाड़ दम्पती रुके। बाकी हम दस साथी तल मंजिल पर कमरा नम्बर दो में रुके हैं जिसका दरवाजा मुख्य सड़क पर खुलता है। इसमें छोटेवाले ग्यारह पलंग लगे हैं। कमरा तिब्बती प्रिंट के पर्दों तथा फर्नीचर से सजा है। दरवाजे के पास लोहे के पाईप से बना खूबसूरत स्टैण्ड है जिसमें दो प्लास्टिक की तगारियां रखी हुई है। पास ही दस लीटर पानी के केटली भरी हुई है। एक छोटा सा साबुन तथा छोटा सा नेपकीन भी स्टैण्ड पर टंगा है। चलो कुल्ला करने व मुंह धोने के लिये तो बाहर नहीं जाना पड़ेगा। पेशाबघर पूरे होटल में कहीं है ही नहीं और जाजरु वही चीनी।

ताश खेल तथा कुछ देर भजन गा कर समय गुजारा। हमारा रसोईघर आज भी देर से पहुंचा। शाम छः बजे चाय–बिस्किट, सात बजे तले आलू व सूप, नौ बजे रोटी दाल चावल पापड़; सब कमरों में लाकर दिये गये। यहां विशेष बात यह रही कि हमारे शेरपाओं ने कुंजबिहारीजी को मेटाडोर में नीचे दबा उनका बड़ा बैग निकाल कर ला कर दिया। कुंजबिहारीजी ने अपने कपड़े निकालने के लिये बैग की मांग की थी। हमने रात में ही शेरपा को बैग वापस कर दिया। शेरपा बैग को हमारे कमरे के बाहर ही रख गया और ले जाना भूल गया। रात मैंने बैग कमरे के अंदर डाल लिया। सुबह जब शेरपा को बैग की याद दिलाई तो उसे अपनी गल्ती पर बहुत पछतावा हुआ। रात दस बजे सोये और अच्छी नींद आई।

बर्फबारी

9, अगस्त 2012, गुरुवार

सुबह यहां हल्की–हल्की बरसात हो रही है। हमारे छाते काम आ रहे हैं। यहां शौचालय में बदबू नहीं है। बीच में तीन फुट की दीवार बना कर विभाग भी बनाये गये हैं जैसे हमारे यहां पेशाब घरों में होता है। पहली बार तिब्बती शौचालय का हमारे सहित अनेकों यात्रियों ने इस्तेमाल किया। शर्म व संकोच तो फिर भी है ही। कोई अंदर बैठा हो और बाहर से टार्च जला कर दूसरा जरूरतमंद जगह देखे तो हिन्दुस्तान में तो दोनों को ही लज्जा आती है।

प्रातः 6.10 पर रवानगी से पूर्व चाय व बेस्वाद पोया का नाश्ता दिया गया। 8.30 बजे सागा शहर में पहुंचे। बरसात जारी है व ठंड का अहसास हो रहा हैं। कल बस में तापमान 20 से 25 के बीच रहा था आज 15–16 चल रहा है। चालक ने बस के वाइपर ठीक कराने के लिये मिस्त्री की दुकान के सामने बस रोकी है। समय लगेगा हम भी उतर गये। अरे यहां तो स्नूकर की टेबल लगी हुई है। एक दो नहीं आठ दस। कई दुकानों के सामने सड़क पर पाल के नीचे। गेंदें तथा छड़ी भी पड़ी हुई है। मैंने गेंदों व छड़ी को छू कर देखा। दारचेन में भी मैंने स्नूकर टेबल देखी थी। यहां यह खेल प्रचलन में है पर हममें से कोई इसे खेलना नहीं जानता। यहां हमारे बीच सामने बन रही कंकरीट की विशाल इमारत भी चर्चा का विषय रही। रविजी ने आश्चर्य किया कि यहां निर्माण में कितना लोहा प्रयुक्त किया जा रहा है। शायद बैंक का स्ट्रांग रुम बन रहा हो। गाड़ी ठीक होने के बाद डीजल भी लिया गया। बाद में चालक ने गाड़ी बहुत अच्छे बाजार में खड़ी कर दी। शेरपाओं से पता लगा कि बाकी गाड़ियां आगे निकल गई है। सब चालक यहां खाना खाकर निकले हैं अब इस बस का चालक भी खाना खायेगा फिर चलेंगे। समय गुजारने के लिये हम सड़क पर टहलने लगे। पास ही एक रिटेल किराना स्टोर है। मयूरभाई के पीछे पीछे हम भी उसमें घुस गये। वहां भारतीय फिल्मों का हिन्दी संगीत बज रहा है। मैंने वहां की एक मात्र उपस्थित महिला से हिन्दी में बात करनी चाही तो उसने कहा, नो हिन्दी। मैंने पूछा, ‘इंगलिश’? उसने फिर कहा, ‘नो इंगलिश। तिब्बती।’ रविजी अकलेरावाले दरजों में सजे सामान देख रहे हैं। पिस्ता व मूंगफली के पैकेट एक ही भाव हैं। उन्हें मूंगफली खाने की इच्छा हो रही थी। बीस युआन देकर चार सौ ग्राम का पैकेट खरीदा है। केबी सर दुकान के पीछे के दरवाजे से अंदर झांक आये हैं। उन्होंने मुझे बताया कि भीतर राम, लक्ष्मण, सीता और हनुमान जी मूर्तियां अर्थात् राम दरबार है और वहां

अंग्रेजी में लिखा हुआ है, स्टैच्यु ऑफ राम। परिवार तो हिन्दु धर्म को मानने वाला लग रहा है। इस दुकान में और कोई दूसरे धर्म का प्रतीक चिन्ह नहीं है।

साढ़े नौ बजे सागा से बस निकली। हम मूंगफली खाने और उसके स्वाद पर टिप्पणी करने में व्यस्त रहे। बारिश तेज होती गई। ब्रह्मपुत्र नदी का पुल पार करने के बाद दो किमी आगे ही कच्चा रास्ता शुरु हो गया। 36 किमी रास्ते में दो तीन बार बस को आगे पीछे करके भी निकाला गया। लुढ़के हुये पत्थरों से बस की बॉडी अड़ गई थी। यहां रास्ता साफ करने वाली गाड़ियां भी अपना काम करती मिली। आगे जाकर बरखा बर्फबारी में बदल गई। चालक ने बहुत कुशलता से बस चलाई। चालक यदि वाइपर ठीक नहीं कराता तो हमारा आगे बढ़ना मुश्किल हो जाता। पक्की सड़क आने पर सबको राहत मिली। कुछ आगे बढ़ते ही मयूरभाई ने बर्फबारी का आनंद लेने के लिये सड़क पर बस रुकवा दी। भोले बाबा ने हमें प्रकृति के अनेकों रंगों से रूबरू कराया है। स्विटजरलैण्ड का आनंद यहां तिब्बत में ही मिल रहा है। रुई के फाहों जैसी बर्फ ने सारी धरा को धवल चादर ओढ़ा दी है। आसपास की सारी पहाड़ियां बर्फीले पर्वत श्रृंगों की तरह दिखाई देने लगी है। मात्र सड़क ही काली है जैसे सफेद कागज पर काले पैन से एक रेखा खींच दी गई हो। कई महिला पुरुषों ने बस से उतर बर्फबारी के बीच फोटो खिंचवाये। मैंने सड़क किनारे से बर्फ उठाकर उसका लड्डू बनाया जैसे बचपन में बुढ़िया के बाल नामक मिठाई को छोटा सा बनाते थे। प्रदीपजी ने वीडियोरील भी बनाई है।

कुछ आगे बढ़ने के बाद एक भवन के सामने बस रोकी गई। यहां हम आज का भोजन करेंगे। भोजन बस में न्यू डोम्बा से ही बना कर रख लिया गया था। मौसम खुला होता तो ताल के किनारे भोजन करते पर बारिश में भवन ढूंढना पड़ा है। हमारे दाईं ओर स्थित इस मकान में एक बड़ा कमरा है। उसी में दो मेज लगाकर खाना जमाया गया है। बसों से उतर कोई दो सौ फुट कीचड़ व पानी भरे रास्ते पर चल कर बरसते पानी में भीगते हम भोजनशाला तक पहुंचे। कई छातों का भी इस्तेमाल किया गया। कमरा छोटा था यात्रियों को बहुत इंतजार करना पड़ा। कई यात्रियों ने नाराजगी भी जाहिर की पर मैं प्रबन्धन के निर्णय को सदैव शिरोधार्य करता हूं। भोजन ठंडा हो चुका है पर भूख में सब अच्छा लगा हमने तो पिकनिक का सा मजा लिया। भोजन के बाद बारिश थम गई और कुछ देर बाद धूप भी निकल आई। यहां से रवाना होने के कुछ देर बाद बस खराब हो गई। ज्यादा समय लगना था अतः हम सड़क किनारे शीट बिछा कर बैठ गये और ताश खेलने लगे। चालक ने फोन करके आगे से सहायता मांगी। कुछ ही देर में कार में मिस्त्री लोग आये और उन्होंने बस ठीक कर दी। हमें गन्तव्य पर पहुंचाने हेतु तब तक अन्य विकल्पों पर भी विचार किया जा चुका था।

शी शा बैंग मां होटल न्यालम

साढ़े बारह बजे हमें बस में बहुत गर्मी लगी और हमारी जाकिट आदि गर्म कपड़े उतर गये। लगातार चल हम साढ़े तीन बजे न्यालम के जाने पहवाने गेस्ट हाउस के सामने उतरे। हमें वही हॉल मिला। बारह पलंग और तेरह सवारी। बहुत देर तक बातें की, खासकर केबी सर की प्रेम कहानी की तथा ताश खेल समय गुजारा। आज हमारे साथियों की सिफारिश पर पकौड़े बनाये गये। चाय पकौड़ी सायं छः बजे आई तब तक सभी को भूख भी लग आई थी। पकौड़ी धीरे–धीरे बन कर आ रही थी और बहुत देर तक तो उस पर छीना झपटी मची रही। हमारी छीना झपटी से कई अन्य लोग नाराज हो गये और मयूरभाई से लड़ पड़े। बाद में इतनी पकोड़ी आई कि उसकी खपत ही नहीं हो पाई। मैंने चाय के साथ मिर्ची की पकोड़ियां भर पेट खाई। इसी बीच कैलाशट्रेक्स के स्टाफ ने सब यात्रियो से जाकिट वापस ले लिये। मैंने अपना जाकिट नहीं दिया। पहले मेरा बड़ा बैग दो मैं उसमें से अपने गर्म कपड़े निकाल कर पहनूंगा तब आपकी जाकिट वापस मिलेगी। यहां हमने इस स्टॉफ को इनाम में युवान दिये। ताशी शेरपा के नेतृत्व में कागज पेन ले इन लोगों से सभी यात्रियों से इनाम लिया। ताशी को देखते ही पुनः मेरे मन में खटास पैदा हुई। इनाम से ज्यादा तो इन्होंने कमीशन ही ले लिया होगा। मेटाडोर में से चार दिन से बैग नहीं निकाले गये है। उन्हें निकालने रखने में ज्यादा मेहनत है। हमने काठमांडू में अपने जाकिट लौटाये। रात का भोजन साढ़े आठ बजे दिया गया। आज भोजन में खराब छाछ की कढ़ी, खिचड़ी तथा पापड़ मात्र है। सारे यात्री खाने से असंतुष्ट हैं। रात कुंजबिहारी जी व मैं पास के ही कमरे में सोये। वहां पियूषभाई अपने फोटोग्राफी के तामझाम के साथ ठहरे हुये हैं। कमरे में दो पलंग खाली थे। गहरी नींद आई।

आव्रजन

10, अगस्त 2012, शुक्रवार

आज स्टाफवालों ने जल्दी मचा कर साढ़े पांच बजे ही बसें रवाना कर दी। हमारी बस बदल गई है। हमें यात्रा कराने वाली बस खराब होने के कारण रात में ही कहीं भेज दी गई। हमारी छड़ियां उसी बस में रह गई। खूबसूरत हरीभरी वादी में यात्रा हुई। पुलिस चेकपोस्ट पर आधा घंटा लग गया। आगे निर्माणाधीन पुल के पास संकरे रास्ते में हमारे काफिले की जीप एक कार से भिड़ गईं। दोनों

चालक आध घंटे तक एक दूसरे की गल्ती बता मुआवजा मांगते रहे। हमारे यहां भी ऐसे ही होता है। गाली गलौच भी हुई फिर कुछ नहीं लेने–देने में मामला सुलटा। हम यात्रियों को आध घंटा ओर प्रकृति के बीच बिताने का अवसर मिला। आगे बहुत बड़ा शहर झांगदू है। सारी सड़क पर जाम मिला और हमें इस शहर को पार करने में घंटाभर से ज्यादा लग गया। हमारी महिला गाइड इसी शहर की है। वह यहीं उतर गई है। कोदारी चीनी सीमा पर जाम के कारण हम बस से उतर एक किमी पैदल चल इमीग्रेशन भवन तक पहुंचे। यहां रास्ते में सड़क पर तेज बहाव से पानी बह रहा था उसे पार करने के लिये हमें अपने जूते मौजे उतारने पड़े तथा पेंट के पायचे चढ़ाने पड़े। इमीग्रेशन की कार्यवाही में भी हमें घंटाभर लगा। वही तीन पक्तियां बनी। पहले काउंटर पर हमारे से नाम पूछे गये और कम्प्यूटर में एंट्री की गई। दूसरे काउंटर पर महिला अधिकारी ने पासपोर्ट के फोटो से हमारी शक्लें मिलाना की व चीन के बाहर वापस जाने की मोहर लगाई। मुझ से चीनी अधिकारी ने मुस्कराते हुये कुछ पूछा था। मैंने कहा, 'कैलाश मानसरोवर।' उसने जाने दिया। महिलाओं को उसने टोपी खोलकर शक्ल दिखाने के लिये कहा था। हमने साढ़े दस बजे नेपाल की सीमा में प्रवेश किया। यहां पैदल रास्ते में मौसम अच्छा रहा न बरसात न धूप। हमें ज्यादा परेशानी नहीं हुई। पैदल चल माउंट कैलाश होटल आये जहां हमारे अभी के खाने की व्यवस्था है। इस होटल का संचालन मम्मीजी के बेटे के पास ही है। यह होटल अपेक्षाकृत साफसुथरा तथा बड़ा है। हमारे चार साथी कैलाश ताशी डीलक्स होटल में स्नान कर आये हैं। उन्हें मम्मी जी ने पूरा सम्मान और सुविधा दी है। केबी और र विजी दाढ़ी बनाने चले गये। उनके कारण पूरे दल को आधा घंटा देरी हुई। दाढ़ी बनाकर आने के बाद उन्होंने खाना खाया फिर बस तक पहुंचे। इसी बीच मैंने इस होटल के मालिक से बात की है। वो बौद्ध धर्म को मानते हैं। इस होटल में उनकी नानी की फोटो लगी हुई है जिसने इस होटल की नींव रखी थी। मातृ सत्तात्मक परिवार। होटल में कैलास मानसरोवर के फोटो भी बेचे गये थे।

ग्रांड होटल काठमांडू

दोपहर 11.30 पर हमारी बसें कोदारी से काठमांडू के लिये रवाना हुई। हमारे बड़े बैग भी हमारी नेपाल की इस खटारा बस की छत पर लदे हैं। तातापानी आया तो मैंने मयूर भाई से कहा,

'यहां नहा लें तो अच्छा रहे।'

'जिसे नहाना हो रुक जाये और अपने हिसाब से काठमांडू आ जाये।'

'वोटिंग करा लें। ज्यादा यात्री नहाना चाहें तो?'

'यहां वोटिंग नहीं चलती है, बस मयूर भाई की इच्छा चलती है।'

'मतलब चीन की तानाशाही, भारत का प्रजातंत्र नहीं।'

मेरी बहस से मयूरभाई चिढ़ गये। जोर से बोले, '

'भैया बस रोकना। इन बंसल जी को उतार दो। ये नहा के आ जायेंगे।'

मुझे चुप्पी मारनी पड़ी। मैंने पहले अपने साथियों से बात नहीं की थी। गोदादाघाटी से पूर्व कोई एक घंटा चाय के लिये रुके। यहां के बी सर द्वारा अपनी गुजराती प्रशंसिका को भुट्टा सेक कर खिलाना चर्चा का विषय बना। आज नेपाल में ट्रांसपोर्ट बंद का आव्हान है। हमें भी थोड़ी आशंका हो रही है। सायं 4.30 पर काठमांडू के चौराहे पर हमारी बसों को आंदोलनकारियों द्वारा रोक लिया गया। कुछ देर हुज्जत के बाद पर्यटकों के नाम पर जाने दिया गया। रास्ते में आंदोलनकारियों ने एक टैक्सी के कांच फोड़ दिये तथा चालक से मारपीट की। हमारी पूरी बस की सवारियों के लिये रुकने की व्यवस्था ग्रांट होटल में ही करवा दी गई है। होटल गौकर्ण इससे अच्छा है पर वहां से बाजार आना कठिन है। हमने हमारा विश्राम यहां तीन दिन का कर लिया है। एक दिन का भुगतान मयूरभाई करेंगे। हमें दूसरी मंजिल पर 205 से 212 नम्बर तक के कमरों में से छः कमरे मिले हैं। इस होटल का भारतीय मुद्रा में किराया 2000 रुपये प्रति कमरा तथा खाने की दर 500 रुपये प्रति व्यक्ति है। 23 टका कर अतिरिक्त। केबी व मैं 212 नम्बर कमरे में हैं। स्वाभाविकरूप से हम सबने स्नान कर दस दिन पुराना मैल उतारा है। साथियों ने चाय मंगवाई पर मैंने न्यालम से चाय पीना वापस छोड़ दिया है। रात हमने इसी होटल में खाना लिया। कुछ देर इसी परिसर में लगी दुकान में बहुमूल्य नगीनों के बारे में जानकारी लेने में खर्च किया। सामने की दुकान से फोन किये गये जहां एकदम कम पैसे लगे। साथी बाजार से मेरे लिये भी पान ले आये। खा तो लिया पर गले में जलन के कारण जल्द ही थूकना पड़ा। मुझे पान से एलर्जी है। इस होटल में आठवीं मंजिल पर गजल गायन होता है। हम सब भी वहां जा बैठे और पूरा लुत्फ उठाया। जीवन का एक और रंग देखने का अवसर मिला। रात दस बजे बाद सो पाये।

11, अगस्त 2012, शनिवार

रात भर एसी चला और मैं खांसी जुकाम से पीड़ित हो गया। प्रातः साढ़े छः बजे चाय के बहाने केबी व मैं घूम आये। इस होटल से अतिरिक्त चाय पानी लेना बहुत महंगा है। हम 70 रुपये में बीस लीटर पानी की केन ही खरीद लाये। प्रदीप जी देवकीजी की जांच कराने अस्पताल गये। उन्हें पीलिया निकला है। बारां के डाक्टर महेन्द्रजी गर्ग की सलाह से दवाइयां ली है। होटल में नौ बजे नाश्ता करने के बाद हम सोये। कुछ देर बाद कमरा नं. 205 से बुलावा आया। बहुत सारे फल तथा मौसम्मी का रस मंगवाया गया है। ग्यारह बजे होटल के स्वीमिंग पूल में नहाने गये। बाजार से कॉस्ट्यूम (तैराकी के लिये स्वीकृत विशेष पोशाक) लाने में साढ़े ग्यारह बज गये। नेपाल में शनिवार साप्ताहिक अवकाश रहता है, अधिकांश दुकानें बंद हैं। चार सदस्य नहाये बाकी के मन में कसक रह गई।

हमारे होटल में सिर्फ नाश्ता ही किराये में शामिल है। हमारा सुबह का भोजन मयूरभाई के खाते से होना है। हमें अभी घूमने जाना है, हमने इस भोजन को शाम के लिये करवा दिया है। हम डेढ़ बजे मिनी बस से घूमने निकले। पहले हमें पताशी खानी है। एक घटिया होटल पर पताशी के अलावा भी बहुत खाकर पेट भरा। 35 किमी तय कर नगरकोट नामक स्थान पर पहुंचे। यह यहां का सबसे ऊंचा पहाड़ी स्थान है। यहां से सूर्य उदित होता और अस्त होता देखना अच्छा लगता है। इस स्थान से हिमालय की एवरेस्ट सहित कई चोटियां दिखाई देती है। हमारा दुर्भाग्य यहां हमें बादल व बरसात मिली। कुछ देखा नहीं और सर छुपाने के लिये एक रेस्तरां में घुसे तो मात्र चाय पीने में ही हजार का बिल आ गया। इसके बाद हम दूसरे स्थान भक्तापुर पहुंचे। पाटन जैसी ही जगह जो साथियों को पहले भी पसंद नहीं आई थी। ऊपर से बरखा व सौ रुपये का टिकट। बिना देखे वापस लोटे। सायं पांच तीस पर होटल आ गये। मिनी बस वाले को मजा आ गया और हमारा खर्च बेकार गया। कुछ ही देर आराम कर पाया था कि साथियों ने 205 नं. कमरे मे बुलवाकर फलों की चाट खिलाई।

आज गजल गायकी की सारी सीटें किसी निजी कम्पनी ने बुक कर ली है। हमें बेआबरू होकर लौटना पड़ा। साथियों में खासकर रविजी के मन में बहुत गुस्सा है।

'कल सारी सीटें अपने नाम से बुक करवा लो।'

प्रदीपजी ने प्रयास किया पर जवाब नहीं आया।

सवा आठ बजे भोजन के लिये गये। खट्टे दही की कढ़ी हमने फेंक दी। देवकीजी को डाक्टर की सलाह पर छाछ लेनी है। उन्होंने दही मंगा लिया। वही सड़ा दही लाकर रख दिया गया। ऊपर से बैरों ने बदजबानी की। देवकीजी ने बहुत खरी–खोटी सुनाई। पहले से खार खाये बैठे एक पंजाबी युवा को भी भड़ांस निकालने का मौका मिल गया। ट्रेवल कम्पनी वाले होटल बुक करवा देते हैं और होटलवाले कोई सेवा नहीं देना चाहते। हमें भी यहां कई कमियां नजर आई। इतना कुछ होने के बावजूद यहां के स्टॉफ को कोई शर्म नहीं थी।

यहां कहीं कैसिनों चलता है। काठमांडू अपने खास कैसिनों के लिये विश्व में प्रसिद्ध था पर अब वह तो बंद हो गया है। हमने कैसिनों ढूंढने का प्रयास किया पर नहीं मिला।

कल पशुपतिनाथ मंदिर में अभिषेक कराने जाना है तथा परसों हवाई अड्डे पहुंचना है। परिवहन हड़ताल के कारण हमें चिंता है। रात बहुत देर टी.वी देख सोये।

12, अगस्त 2012, रविवार

केबी सर की चाय की तलब मिटाने बाहर निकले तो टैक्सी वाले ने आवाज लगाई। अरे! टैक्सी हड़ताल टूट गई है। एक चिंता तो दूर हुई। दो किमी काठमांडू की सड़कों पर घूम वापस होटल लौटे। नाश्ते के बाद मोलभाव कर 180 भारतीय रुपये में तीन गाड़ियां कर भगवान पशुपतिनाथ मंदिर पर उतरे। व्यवस्थाओं में परिवर्तन व उनकी पूरी जानकारी न होने के कारण हमारी अभिषेक की रसीद नहीं कट पाई। दर्शन करने के बाद प्रदीपजी ने मामाजी के मार्फत् मंदिर ट्रस्ट के सचिव को ही बुलवा लिया। उन्होंने हमारी रसीदें कटवाकर अभिषेक करवाया। पूजन के बाद हम मामाजी के मित्र की दुकान अग्रवाल रुद्राक्ष भंडार पर गये। यहां की दरें देख पूर्व में मयूरभाई की बताई हुई दुकान से खरीददारी करनेवालों को बहुत पछतावा हुआ। यहां हमने बिना भावताव किये बहुत सामान खरीदा। पुनः टैक्सियां कर मामाजी श्री निर्मलजी धानुका की दुकान 'श्री बालाजी ज्वैलर्स 4, विशाल मार्केट' पहुंचे। मामाजी ने हमारा अच्छा स्वागत किया। यहां हीरे जड़े सोने के गहने बेचे जाते हैं जो बहुत कीमती हैं। हम हमारे पास बची चीनी मुद्रा से छुटकारा पाना चाहते हैं। मामाजी प्रचलित दर 8.65 में नेपाली मुद्रा देने को तैयार हैं। उनके पास भारतीय मुद्रा नहीं है। हमने नेपाली जरूरत के लिये ही उनसे मुद्रा बदलवाई है। देवकी जी इस दर में मुद्रा परिवर्तन से असंतुष्ट हैं। उनका कहना है कि गौकर्ण फोरेस्ट जाकर 9.50 की दर में मुद्रा परिवर्तित करा लो। मयूरभाई ने ऐसा आश्वासन दिया था। विदा से पूर्व मामाजी ने हमें होटल में ले जाकर खाना खिलाया। ढाई बज गये थे। देवकीजी होटल लौटना चाहते है अन्य साथी खरीददारी करना। मुझे बाजार में कोई रुचि नहीं है। देवकीजी व मैं दोनों टैक्सी कर होटल में आ, सो गये। साढ़े चार बजे केबी सर ने दरवाजा खुलवाया। छूटते ही बोले,

'बहुत महंगा बाजार है, मैं तो कुछ नहीं लाया।'

'यह तो हमें पहले ही बता दिया गया था। सारा माल भारत से या चीन से आता है।'

केबी सर थक गये थे। कुछ देर आराम के बाद हमें कमरा नं. 204 से बुलावा आया। सारे साथियों ने अब तक का सामूहिक हिसाब किया है। इसी समय मयूरभाई व पियूषभाई हम से मिलने आ गये। वे मानसरोवर का जल भी लाये हैं जो हमारे साथियों ने मांगा था। उनका आज व्यवहार बहुत अच्छा है। वे वीडियो बना रहे हैं। अभी उन्होंने रहस्योद्घाटन किया कि हमारी यात्रा अवधि के दौरान कैलास मानसरोवर में 6 यात्री काल कवलित हुये हैं। वे ऐसी घटनाओं को पूर्णतः छुपाते हैं ताकि दूसरे यात्री घबरा न जायें। मेरे एक पुराने सवाल का भी आज उन्होंने जवाब दिया।

'आप उनका क्या करते हो?'

'बस काठमांडू लाकर पशुपतिनाथ के पास अंतिम संस्कार कर देते हैं। वैसे हमारे संघ में आज तक ऐसी कोई दुर्घटना नहीं हुई है।'

मैं थोड़ा असंतुष्ट हूं। काठमांडू तक ले ही आते हैं तो हिन्दुस्तान ही क्यों नहीं भेजते? खर्च तो सारा आप यात्रियों के परिजनों से ही लेते हो?

हमारे सब साथियों ने सभी शिकवे भुला कर उनकी खूब प्रशंसा कर दी है। मेरे पास उनकी कमियां गिनाने के लिये बहुत मसाला है पर मैं चुप ही रहा। मैंने बाद में साथियों को उनके कारनामे गिनाये तो कहने लगे पहले क्यों नहीं बताया? क्या सब साथी इतनी जल्दी भूल गये? मुद्रा विनिमय, पानी की खरीद, घोड़ा–पिठ्ठू व रुद्राक्ष खरीददारी का कमीशन। भंवरसिंहजी के साथ हुआ दुर्व्यवहार। मेरे को सुनाये दुवर्चन भी मैं समय–समय पर साथियों को बताता रहा हूं। हथियार का घाव मिट जाता है, आर्थिक हानि आदमी भूल जाता है पर दिल पर लगी चोट इंसान को बहुत सालती है। पहले ही मयूरभाई ने कह दिया था कि चीन में हमारा बस नहीं चलता है। उसमें एक झूठ यह था कि वहां चीनी सरकार की व्यवस्था चलती है। वास्तव में कोदारी से हमें पूर्णतः कैलाश ट्रेवल्स प्राइवेट लिमिटेड काठमांडू नामक संस्था के हवाले कर दिया गया है और उनके कर्मचारियों का विरोध करने का मयूरभाई में साहस नहीं है। हमें चीनी अधिकारियों व सैनिकों के नाम से भयभीत किया गया था पर मुझे सबका व्यवहार सहयोगात्मक ही लगा। हमने हमारे मित्र ट्रेवलदोस्त की इस यात्रा में और भी बहुत बचत करवाई है। कार की जगह बसों में बैठ कर और अंतिम दिन आज 8000 रुपये प्रति कमरे की जगह दो हजार रुपये प्रति कमरे वाले होटल में ठहर कर।

आज पुनः आठवीं मंजिल पर गजलें सुनने गये। आज भी बुकिंग का हवाला दे हमें रोका गया। प्रदीप डालमिंया ने फोन घुमाकर व्यवस्थापकों से बात की और हमारे भी वहां बैठने की व्यवस्था करवा ली। बस खाना ही तो लेना है। हमने गायकी सुनी और करीब 3500 रुपये खाने का बिल बनवाया। 400 रुपये प्लेट सब्जी तथा साठ रुपये में परांठा व चालीस रुपये में रोटी। पैसे खाने के नहीं यहां एसी में बैठ गजलें सुनने के हैं। हमें कोई गिला नहीं है। यहां हॉल में 30 मेहमानों के बैठने की व्यवस्था है। पूर्व में बारह मेहमान बैठे हुये थे। एक और पंक्ति में मेज कुर्सी लगा कर हमें बिठा दिया गया। सारी गजलें भारतीय सिनेमा की थी। एक गीत नेपाली भाषा में गाया गया जो सिर्फ उसके लिये सिफारिश करने वाली लड़की को ही समझ में आया। कार्यक्रम के बाद परिचय हुआ। वे भी मूल रूप से राजस्थान के चुरु जिले के ही वासी हैं। रविजी ने गायक कलाकारों से कार्ड लिया तथा खर्चे के बारे में पूछा। इस तरह पंचसितारा होटल में गजल गायकी के बीच भोजन कर हमने इस शाम को अविस्मरणीय बना लिया।

13, अगस्त 2012, सोमवार

सुबह उठते ही मैंने केबी सर को जन्मदिन की शुभकामनायें दी। प्रातः चाय पीने व घूमने गये। साढ़े सात बजे ग्रांड होटल में नाश्ता लिया। आठ बजे होटल का हिसाब किया। कुछ मोलभाव कर 250 रु. प्रति टैक्सी भारतीय मुद्रा में हवाईअड्डे के लिये चार टैक्सियां की। आज पशुनाथमंदिर पर दो किमी लगभग श्रद्धालुओं की पंक्ति लगी हुई है। नेपाल में आज 2069. 29.4 तारीख है अर्थात् आज सावन माह का अंतिम सोमवार है। कई जगह जाम मिला और हम नौ बजे हवाई अड्डे पहुंचे। ट्रालियों से सामान ढोया। बड़े बैग लगेज में दिये। फार्म भरे, सिक्युरिटी जांच कराई तथा पासपोर्ट पर नेपाल छोड़ने की मोहर लगवाई। हमारी फ्लाइट एस जे 042 ग्यारह बजे है। डेढ घंटा अच्छे सोफों पर बैठ कर काटा। दिल्ली हवाई अड्डें के मुकाबले यहां सुविधाये ंनगण्य है। पास बंधा नाश्ता निकाल कर भोजन की पूर्ती भी कर ली गई। यहां हमें गेट नम्बर तीन से बड़े हाल में लिया गया। जामा तलाशी के बाद विमान में प्रवेश दिया गया। मुझे 24 ए नम्बर की सीट मिली है। हवाई जहाज में पुनः वही हुआ। हमें आवाज लगाकर खाने के पैकेट दिये गये। आज भी हमें हमारे प्रबन्धक प्रदीपजी व हेमराजजी गोयल द्वारा बताया गया था कि विमान में खाना नहीं मिलेगा। सब के पेट भरे हैं। आधे से ज्यादा खाना कचरापात्र में डाला गया। खाने के बाद एक कंपनी के प्रचार के कुरमुरे की थैली तथा एक शीतलपेय की बोतल भी मुफ्त दी गई। दिल्ली हवाई अड्डे पर आज देवकीजी परिवार ने बाहर निकलने के लिये तीन पहिया गाड़ी का प्रयोग किया। हम दूसरे दरवाजे से बाहर आये और मैं तो जाते समय देखा रास्ता ही भूल गया। दिल्ली में पारगमन की मोहर लगवाने के लिये फार्म भरकर बहुत देर खड़ा रहना पड़ा। बहुत सारे

काउंटर हैं फिर भी घंटा भर लग ही गया। बाहर उसी गाड़ी की व्यवस्था थी। जगदीश चालक ने सामान बांधे और हम दिल्ली की सड़कों पर घूमने लगे। कई बार पानी की बौछारें मिली और कई बार जाम में भी फंसे। परांठेवाली गली के सामने लालकिला के पास हमारे आठ साथी परांठे व रात का खाना लेने के लिये उतर गये। वे साइकिल रिक्शा का उपयोग इस संकरे बाजार में जाने आने के लिये करेंगे। देवकीजी व उनकी पत्नी भी उतरे। उन्होंने हमें भी गौरीशंकर मंदिर दर्शन के लिये प्रेरित किया पर मैं दूसरी ही चिंता में उलझा था। हमारे जाने के बाद श्रीमती साधनाजी गाड़ी में अकेली रह जाती। उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं है और वे कहीं नहीं घूमना चाहती। और क्या इस दिल्ली में हम इतना आसानी से पार्किंग में खड़ी अपनी गाड़ी ढूंढ पायेंगे? केबी, मैं और साधनाजी तीनों ही गाड़ी में बैठे रहे। लालकिला के पीछे पार्किंग का दरवाजा आज बंद है। कुछ आगे ले जाकर सड़क पर ही गाड़ी खड़ी की गई। समय तो लगना ही था। मुझे देवकीजी की चिंता थी। उनके पास मोबाइल भी नहीं है। मैं देवकीजी को ढूंढने जाना चाहता था पर केबी सर ने कहा, आ जायेंगे वे तो दिल्ली के जानकार हैं। मैंने ज्यादा जोर नहीं दिया और यहीं से सारी गड़बड़ हुई। देवकीजी बहुत परेशान हुये। उन्हें पार्किंग में हमारी बस नहीं मिली। वे उसी समय किसी भी फोन से हम से संम्पर्क कर लेते या चार–पांच लाइन से खड़ी बसों को देखते हुये सौ कदम और आगे आ जाते तो ठीक था पर उन्होंने रिक्शे से लालकिले के कई चक्कर लगाने के बाद रिक्शेवाले के मोबाइल से हमें फोन किया। तब तक प्रदीपजी के फोन पर हमारी गाड़ी साथियों को लेने उसी स्थान पर पहुंच गई थी। उन्हें वहीं बुलाकर बैठाया गया। उनका गुस्सा सभी को झेलना पड़ा। उनकी भलमनसाहत थी कि उन्होंने चालक की गल्ती बता हमें बचा दिया।

हम साथी केबी सर का जन्मदिन मनाने की सोचते रहे पर कुछ विशेष नहीं कर पाये। उनकी प्रशंसिका शीतल को फोन लगाकर केबी सर ने उनसे भी बधाई लेनी चाही पर मोबाइल फोन उनके पति हैतलजी के पास था। उन्होंने थोड़ी देर बाद बात कराने का आश्वासन दिया था पर वापसी फोन नहीं आया। शायद जिंदगी में आयेगा भी नहीं। एक कहानी का दुखद अंत हो गया।

हमारे साथी बहुत सारा नाश्ता लाये। जलेबी, समोसा नानखटाई। सामान तो सब स्वादिष्ट है पर भरे पेट में क्या अच्छा लगता है? हम दो घंटे पूर्व ही निजामुद्दीन रेल्वे स्टेशन के सामने गाड़ी से उतरे। हल्की पानी की बौछारों में भीगते हुये सामान उतारे, कुली किये और प्लेटफार्म नम्बर सात पर आ गये। शीट और चादर बिछा कर सब साथी बैठ गये हैं। यहां हमें हरिओम्‌जी खंडेलावाले भी मिले। वे सपरिवार इसी रेलगाड़ी से कोटा बारां चल रहे हैं। हमारी हंसी खुशी दो गुनी हो गई है।

रेल में परांठे वाली गली से बंधवाकर लाया खाना खाया और रात भर आराम से सोये। तारीख 14 अगस्त 2012 मंगलवार रात 1.30 बजे कोटा प्लेटफार्म पर उतरे। सुखद आश्चर्य हमारे परिजन यहां हमारे स्वागत के लिये तैयार खड़े थे। मेरी बहिन शकुंतला तथा कुंवर साहब महेंन्द्रजी बिल्कुल डिब्बे के सामने ही मिले। उन्होंने मुझे मोतियों की मालाओं से लाद दिया तथा उपहार दिया। हमें लेने कारें कोटा जंक्शन पर आई हुई थी। बृजेशजी की कार में, हेमराज जी गोयल, केबी तथा मैं सभी समा गये। चार बजे से पहले ही घर पहुंचे और आराम करने लगे।

हमारी कैलाश मानसरोवर यात्रा हंसी खुशी सम्पन्न हुई। और यात्राओं की तरह इस यात्रा में परस्पर यात्रियों में किसी प्रकार का मनमुटाव नहीं हुआ। यह प्रसन्नता की बात रही।

<u>समाप्त</u>